संदेश

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने संसार की मनुष्य जाती में से मानवता के सिद्धान्त से भरपूर खालसा (पूर्ण मनुष्य) बनाया। पूर्ण मनुष्य ही मनुष्यता को पहचान कर सभ के लिए सुन्दर जीवन जीने का हुनर सिखा सकता है। गुरु साहिब जी ने खालसा तैयार करके पाञ्च तख्तों की प्रभुता कायम की। पञ्च प्यारों का विधान भी लोकतन्त्र का सभ से सार्थिक कानूनी विधान है। लोकतन्त्र का नियम है स्वयं सुखी रहना और दूसरों को सुखी रहने का हक देना। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने खालसे की प्रार्थना की पूर्णता भी ''तेरे भाणे सरबत दा भला'' पर की है। उन्होने सिख के जीवन के लिए गुरुबाणी को आधार बनाया।

जिस ने निरंकार को हासिल किया या करेगा, उस के लिए जरूरी है कि वह संसार मे समानता को समझ कर कार्य करे। समानता का अर्थ है सुखमय जीवन का ढांचा। सुखी जीवन की पहिचान है दायित्व का पालन करना। जब मनुष्य दूसरे के सुख का ध्यान रखते हुए कर्तव्य का निर्वाह करता है तो यहि शाश्वत नियम कानून है। कानून बुरे लोगों को सजा देता है और भले लोगों को राहत देता है। कानून, नियम और मर्यादा एक ही विचारधारा के भावानुसार विभिन्न नाम हैं। ''निरंकार, गुरु साहिब और मानवता'' किसी भी विचारधारा की आधारशिला है। समाज को सुधारने के लिए विचारधारात्मिक ग्रन्थ ही सार्थिक होते हैं। जिन में मैथिहासिक और ऐतिहासिक शब्द कानून, मर्यादा और नियम की व्याख्या करते हैं। नियम को मिथ या कल्पना द्वारा सिद्ध करने वाला ढङ्ग मैथिहासिक है। शारीरिक प्रवृत्तियों को समझ कर नियम के लिए स्थापित की गयी व्यवस्था को ऐतिहासिक कहा जाता है। दोनों का अभिप्राय समाज के अन्दर अच्छी व्यवस्था स्थापित करना ही होता है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने तमाम ग्रन्थों का अध्ययन किया और करवाया । ५२ कवियों का गुरु जी के पास निवास करना, इस बात का साक्षी है । बहुत से ग्रन्थों का पंजाबी अनुवाद बाला प्रीतम गुरु जी का महान परोपकार है । श्री गुरु जी ज़ान के कद्रदान थे । वह संकीर्णता से ऊपर उठे हुए थे । ज़ान का ना तो कोई रङ्ग होता है और ना ही अन्त । सनातन ग्रन्थों की श्रृङ्खला में ''श्रीमद्भगवद्गीता'' विचारात्मिक ग्रन्थ है । श्री गुरु साहिब जी ने इस के ऊपर ''गोबिन्द गीता'' के रूप मे महान सिद्धान्त उज्जागर किया । ''गोबिन्द गीता'' का परोपकार ''श्रीमद्भगवद्गीता'' के श्री कृष्ण जी और अर्जुन के संवाद में से मानवता के भले के लिए ज़ान के युद्ध के लिए हुआ ।

जिस तरह भावना वाले विद्वान, श्री कृष्ण जी द्वारा उच्चरित गीता की व्याख्या बहुत भावना से करते हुए मनुष्य मात्र के लिए कल्याणकारी रूप मे मनुष्य को समझाने का प्रयत्न करते हैं । हू–ब–हू ''गोबिन्द गीता'' भी मानवता के कल्याणकारी सिद्धान्त को स्थापित करने के लिए गुरु सिद्धान्त पर पहरा देते सिख को अर्जुन की तरह बहु आयामी जीवन की महानता पेश करती है । ''महान कोष'' मे अर्जुन के अर्थ उज्जवल, द्वापर का अर्जुन, इन्द्र और अर्जित करना आदि लिखे हैं ।

गुरु श्रद्धालुयों को ''अर्जुन उज्ज्वल जीवन'' परिपक्वता के साथ धारण करना पड़ेगा । उज्ज्वल जीवन वाले गुरुमुख खालसे की चड़दी–कला के लिए ''गोबिन्द गीता'' अमूल्य रत्न है । जो ''गुरु परमात्मा'' मे विश्वास दृढ करने से प्राप्त होता है । पुरातन खज़ाने मे से श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने खालसे को मर्यादा की परिपक्वता के लिए श्री कृष्ण अर्जुन संवाद की रूप–रेखा की भांति ''गोबिन्द गीता'' की रचना की । जिसके पढ़ने से ही गुरु सिख संवाद की महानता का पता लगता है । निर्मल संप्रदाय के महान् विद्वान् श्रीमान् सन्त दर्शन सिंह शास्त्री और श्रीमान्

सन्त जसविन्दर सिंह शास्त्री, काशी (बनारस) वालों ने इस महान् ग्रन्थ के पुनह प्रकाशन में पंजाबी तथा हिन्दी भाषा मे लिपि रूपान्तरण करके संशोधन करने की महान सेवा की । यह उनका श्लाघनीय प्रयत्न है । जिस के फलस्वरूप बाला प्रीतम जी के ३५०वें प्रकाश पर्व पर ''गोबिन्द गीता'' का यह संस्करण गुरु–प्रेमी भक्तों के हाथों में आया । कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज पंथ पर अपनी कृपा बनाये रखें ताकि पंथक भावना वाले गुरुमुख प्रियजन कलम द्वारा पंथ में अपना योगदान डालते रहें ।

गुरु पंथ का दास
सिंह साहिब ज्ञानी इकबाल सिंह
जत्थेदार–तख्त श्री हरिमंदिर जी पटना साहिब (बिहार)

१ओंकार सतिगुरु प्रसादि

भूमिका

भारतीय आध्यात्मिक और धार्मिक ग्रन्थों की परम्परा बहुत प्राचीन तथा अमीर है । लगभग पांच हज़ार वर्षो से ऋषियों–मुनियों, तत्त्वज़ानीयों, सिद्धों–नाथों, सूफ़ी सन्तों और गुरु पीरों ने इस श्रृङ्खला को निरन्तर जारी रखा । जहां इन महात्माओं ने अपने अनुभव तथा समय की शैली अनुसार परमतत्त्व का विवेचन किया, वहां साथ–साथ मनुष्य के लिये आचार–संहिता का विधान रचकर मानव संस्कृति का मार्ग दर्शन भी किया है ।

इस आध्यात्मिक पद्धति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु; ज्ञान के सागर, कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने ५२

विभिन्न भाषी विद्वान् कवियों को अपने पास रखकर पुरातन भारतीय साहित्य के कई आध्यात्मिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक ग्रन्थों के अनुवाद एवं स्वतन्त्र रचनाएं करवाई और आप ने स्वयं भी दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने की रचना की । उसी खज़ानेका एक अमूल्य रत्न है **''गोबिन्द गीता''** जो आपके सामने प्रस्तुत है । जिसका मूल है भगवान् श्री कृष्ण जी के श्रीमुख से उच्चरित **''श्रीमद्भगवद्गीता''** । श्री का अर्थ है श्रेय अर्थात कल्याण;भगवत् का अर्थ है सर्व ऐश्वर्य संपन्न भगवान्; गीता का अर्थ है ''गीयते इति गीता'' अर्थात जो गाया जाए । यहां अर्जुन का प्रश्न और भगवान् का समाधान श्रेय यानी कल्याण के विषय में है । अतः इस श्रेय मार्ग के बारे में सर्व–ऐश्वर्य–संपन्न भगवान् ने जो गाया है उस का नाम है श्रीमद्भगवद्गीता ।

साक्षात भगवान् श्री कृष्ण के मुखारविन्द से निर्झरित एवं महर्षि वेदव्यास द्वारा अष्टादश अध्याय रूपी पुष्प वल्लियों में गूंथी गई दिव्य गीता माला ने अर्जुन आदि असंख्य भक्तों–विद्वानों के हृदय को सुशोभित किया है । सन्त रूपी समीरों ने इसकी उत्कट सुगन्ध को फैलाकर मायाकृत मालिन्य से मानव हृदय को निर्मल बनाकर उसे आत्मदर्शन के योग्य बनाने का महान् प्रयत्न जारी रखा है ।

श्री गीता जी का दिव्य सन्देश किसी जाति वा देश विशेष के ही लिए नही, अपितु इसका अमूल्य उपदेश सार्वभौम है । गीता किसी प्रकार के वाद को लेकर नही चली है अर्थात– द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत, विशुद्धाद्वैत आदि किसी भी वाद को भाव किसी एक सम्प्रदाय के किसी एक सिद्धान्त को लेकर नही चली है । गीता का मुख्य लक्ष्य यह है कि मनुष्य किसी भी मत या सिद्धान्त को मानने वाला क्यों न हो, उसका प्रत्येक परिस्थिति में कल्याण हो जाय, वह किसी भी परिस्थिति में परमात्म प्राप्ति से वंचित न रहे; क्योंकि जीव मात्र का मनुष्य योनी में

जन्म केवल अपने कल्यान के लिये ही हुआ है । गीता के इस लक्ष्य की प्रौढ़ता "श्री गुरु ग्रन्थ साहिब" जी में भी कई जगह पर मिलती है । जैसे भक्त नामदेव जी गोंड राग में कहते हैं–

गुरमति रामनाम गहु मीता ॥ प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥

श्री गुरु अर्जुनदेव जी महाराज भी मारु राग में राम–नाम की महिमा का गुनानुवाद गीता जी के उदाहरण द्वारा इस प्रकार करते है ।

यथा– अंम्रित नाम दानु नानक कउ; गुण गीता नित वखाणीआ ॥

इस लिए इस शास्त्र में मनुष्य मात्र का अधिकार है, चाहे वह किसी भी देश, वेश, समुदाय तथा किसी भी वर्ण–आश्रम का कोई भी व्यक्ति क्यों न हो; परन्तु भगवान् में श्रद्धा और भक्तियुक्त अवश्य होना चाहिये; क्योंकि भगवान् श्री कृष्ण जी गीता में स्वयं कहते हैं कि स्त्री, वैश्य, शूद्र और पाप योनि भी भगवान् के परायण होकर परमगति को प्राप्त हो जाते हैं ।

यथा– मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥९॥३२॥

इन सब पर विचार करने से यही ज्ञात होता है कि परमात्मा की प्राप्ति में सभी का अधिकार है ।

परन्तु उक्त विषय के मर्म को न समझने के कारण बहुत से मनुष्य,जिन्होंने श्री गीता जी का केवल नाम मात्र ही सुना है,वह कह दिया करते हैं कि गीता तो केवल संन्यासियों के लिये ही है; वह अपने बालकों को भी इसी भय से श्री गीता जी का अभ्यास नही करवाते कि गीता के ज्ञान से कदाचित लड़का घर छोड़कर संन्यासी ही न हो जाए; किन्तु उनको विचार करना चाहिये कि मोह के कारण क्षत्रिय धर्म से विमुख होकर भिक्षा के अन्न से निर्वाह करने के लिये तैयार हुए अर्जुन ने जिस परम रहस्यमय गीता के उपदेश से आजीवन गृहस्थ में रहकर अपने कर्तव्य का पालन किया, उस गीता शास्त्र का यह उलटा परिणाम किस प्रकार हो सकताहै ।

अतएव कल्याण की इच्छा वाले मनुष्यों को उचित है कि मोह को त्याग कर अतिशय श्रद्धा–भक्ति पूर्वक श्री गीता जी का अध्ययन–अध्यापन और मनन–चिन्तन करते हुए भगवत प्राप्ति में तत्पर हो जाएं ।
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज अपने समय के एक बहुत बड़े क्रांतिकारी, शूरवीर, दानवीर, तत्त्वदर्शी, दार्शनिक और महान् प्रतिभाशाली विद्वान् पुरुष थे । आप का संस्कृत, फारसी, अरबी, वृजी, तिंगल, रेखता और पंजाबी आदि कई भाषाओं पर पूर्ण अधिकार था । आप को प्राचीन भारतीय साहित्य और उसके श्रोतों के बारे में भी पूर्ण ज्ञान था ।

इस भारत देश में कई शताब्दियों के लम्बे समय के बाद शायद श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज प्रथम महान् पुरुष थे जिन्होंने यह महसूस किया कि यहां पर प्राचीन संस्कृति का जिस तरह से ह्रास हो रहा है । यदि ऐसा रहा तो यहां के लोग बहुत बड़ी पुरातन तथा समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से टूट जायेंगे ।
इस संकल्प को ध्यान में रखते हुए आप ने किसी बड़ी महान् साहित्यिक योजना की कल्पना को साकार करने के लिए अपने मुखारविन्द से अमृतमयी–वाणी श्री जाप साहिब, अकाल उस्तति, बचित्र नाटक, चण्डी चरित्र, शस्त्र–नाममाला और चौबीस अवतार आदि साहित्य को रूपमान किया । आपकी साहित्यिक योजना का एक पक्ष भारतीय आध्यात्मिक, धार्मिक, सभ्याचारिक और अमली जीवन में सत्य की स्थापना के लिए संघर्षक भावनाओं की नवीन व्याख्या था । आप ने सम्पूर्ण भारतीय साहित्य की नवीन व्याख्या की और उसको पुनः स्थापित किया । अपनी विरासत के गौरव को जगाकर कौमी एकता को दृढ़ता और बल दिया ।
आप ने एक तरह से एक महान् संपादक और टीकाकार का काम भी किया है । यह भी आपकी योजना का ही एक भाग था । आपका समुच्चय

अभिप्राय भारतीय मानव को जागृत करना था । इस जागृति में भारतीय आध्यात्मिक तथा सभ्याचारिक विरासत से भारतीयों को ज्ञात करवाना जरूरी मन्तव था । क्योंकि पुरातन साहित्य, अध्यात्म और सभ्याचार का प्रतिनिधि है । इसलिए श्री गुरु जी नेवेदों, शास्त्रों, स्मृतियों और पुराणों के साथ–साथ पंचतन्त्र और अर्थ–शास्त्र आदि अनेक भारतीय ग्रन्थों को सारांश रूप में पेश किया ।

इसी साहित्य के अन्तर्गत है गुरु जी की अमूल्य रचना ''गोबिन्द गीता'' जिस को ''भगवन्त गीता'' भी कहा जाता है । आपकी यह रचना भगवान् श्री कृष्ण जी के श्रीमुख से उच्चरित''श्रीमद्भगवद्गीता'' का काव्यरूप में पंजाबी अनुवाद है । जिसकी रचना सतिगुरु जी ने श्री आनंदपुर साहिब के निवास समय ''किला अनंदगढ़ साहिब'' के पावन प्राङ्गण में की; जिसके बारे में स्वयं गुरु जी कहते हैं ।

यथा–दोहरा ॥ गीता सरूप की भाखिआ अनंदगड़ मैं कीन ॥
खालसे के उपदेस को कही क्रिसन प्रबीन ॥ १८–१४७॥

गुरु जी की यह रचना भाषा नियमावली की दृष्टि से तो एक महाकाव्य है तथा मूल ग्रन्थ के गूढ़ तत्त्वों के भावार्थ को सरल शब्दावली में प्रतिपादन करने से एक टीका रूप भी है । इस बात का संकेत श्री गुरु जी ने अपनी रचना''श्री सर्बलोह प्रकास'' में खालसा महिमा के अन्तर्गत इस प्रकार किया है ।

यथा– गीता महि अरजुन प्रति भाखति, श्रीमति भगत महातम ॥
भगति ग्यानि रूप निज बरनां, प्रापति जाकहु आतम ॥
टीकाकार हूं महिमा भगतिन, खालसहि प्रति है भाखी ॥
खालस पदकहु ऊच महातम, सभहि स्रेष्टिन आखी ॥

इस ग्रन्थ का अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता कि जैसे भगवान् श्री कृष्ण ने महाभारत के युद्ध समय कुरुक्षेत्र की युद्ध–भूमी में अर्जुन को

निमित्त बनाकर "**स्वधर्मे निधनं श्रेयः**" का उपदेश पूरी मानवता के लिए प्रदान किया । वैसे ही श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने श्री आनंदपुर साहिब के युद्ध की वेला में यह पावन उपदेश खालसे को प्रदान किया ।

यथा– जो ठाकुर अरजन प्रति भाखिओ ॥
खालसे को सभ ही मै आखिओ ॥५–७२॥
गीता उपदेस खालसे माहि ॥ सो खालसा इस मैं वरताहि ॥
तिआगे सरब धरम को भाई ॥ एक अकाल की जब सरनाई ॥
सभ कछु जानै एक अकाल ॥ ऐसे जान के होइ निहाल ॥
जिन प्रभ संस्कृत मै भाखिओ ॥ फेर तिसी भाखा मैं आखिओ ॥
१८– १४०॥

खालसे प्रति गीता उपदेश देने का प्रसङ्ग गुरु ऐतिहासिक ग्रन्थ "श्री गुरु–पद प्रेम प्रकाश" में भी मिलता है । जिस के कर्ता हैं श्रीमान् सन्त सुमेर सिंह जी, जो तख्त श्री पटना साहिब के महन्त भी रहे हैं । उन्होंने इस ग्रन्थ के २४वें अध्याय में इस वारता का जिकर इस प्रकार किया हैं–

यथा– गोबिन्द गीता तहा सुनाई ॥ करी खालसा मध्य बडाई ॥
सिंघन के संदेह मिटाए ॥ जुध धरम सभ भांति द्रिढाए ॥

इस प्रकार आप ने खालसे को निमित्त बनाकर मानव मात्र को कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, राजयोग और स्वाभिमानता, सहनशीलता, ईश्वर–पारायणता तथा धर्म–परिपक्वता आदि शुभगुणों को दृढ़ करने और कायरता, नपुंसकता, विषयासक्ति, ईर्ष्या, राग–द्वेषादि तथा काम, क्रोधादि दुर्गुणों को त्यागने का सूपदेश दृढ़ करवाया ।

श्री गीता जी के ऊपर अनेक भाष्य और टीकाएं बनी है । और अब भी उसके विवेचन में जो साहित्य बन रहा है, वह भी उपेक्षणीय नहीं है । परन्तु गीता का अध्ययन स्वतन्त्र रूप से बहुत कम हुआ है । सिद्धान्त प्रतिपादन और साम्प्रदायिक दृष्टि से ही उस पर अधिक विचार हुआ है ।

उसका परिणाम यह हुआ है कि गीता का वास्तविक अर्थ कठिनता से समझ में आता है । प्रतिभाशाली आचार्यों और टीकाकारों के मत–विभिन्नता से साधारण बुद्धि के लोक घबरा जाते हैं ।

परन्तु श्री गुरु जी ऐसे महान प्रतिभाशाली कवि सम्राट हैं कि उनके विशाल हृदय से निकली हुई वाणी–रुपी अमृत–धारा साधारण से साधारण मनुष्य के हृदय को भी शीतल एवं पवित्र कर देती है । श्री गीता पर संस्कृत, हिन्दी आदि अन्य भाषाओं में तों बहुत सी टीकायें समय–समय पर होती रही है; किन्तु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज प्रथम ऐसे कवि है जिन्होंने गीता को काव्य–रूप में पंजाबी भाषा में लिपीबद्ध किया । आप की यह रचना पंजाबी साहित्य के लिए एक अद्वितीय योगदान है तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण का भी एक अभिन्न अङ्ग है ।

इस रचना का मूल जो श्रीमद्भगवद्गीता है उस के अठारह अध्याय और ७०० श्लोक हैं; जिनका अनुवाद सतिगुरु जी ने १८ अध्याय एवं १८०१ छन्दों में किया है । इन में अधिकतर तो दोहरा, चौपई, एवं सोरठा का ही प्रयोग किया है परन्तु कहीं–कहीं प्रसङ्ग सङ्गति अनुसार कबित्त, स्वैया, अड़िल और छपय आदि छन्दो का भी प्रयोग किया है । इस में विशेषता यह है कि मूल श्लोकों के अनुवाद के साथ–साथ यत्र–तत्र गूढ़ विषयक अर्थ को भी गुरमति–सिद्धान्त अनुसार टीकारूप में श्लोक बद्ध किया है ॥

यथा– टीकाकारवाच

खालसे माहि कहिओ उपदेस ॥ जो अरजन को कही सुरेस ॥
एक अकाल सभी कछु जानों ॥ संसार आप इक गोबिंद मानों ॥
वरन आस्रम तुम सगल तिआगो ॥ ब्रहम गिआंन मै निसदिन लागो ॥
जानो सभ कछु एक अकाल ॥ जो देखो एक गोबिंद दइआल ॥
१४–६३–६४॥

परम कृपालु सतिगुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने इस अनुवाद में अपनी स्वाभाविक कवित्त–शैली से हटकर बिल्कुल सामान्य कविता एवं सरल शब्दावली का प्रयोग किया है,क्योंकि उन्होंने यह अनुवाद किसी दार्शनिक विचार की दृष्टि से अथवा विद्वत्ता का प्रदर्शन करने के लिये नही किया है, अपितु साधकों का हित कैसे हो– इस दृष्टि से किया है । परम शान्ति की प्राप्ति चाहने वाले प्रत्येक साधक के लिये, चाहे किसी भी देश, वेश, भाषा, मत, सम्प्रदाय आदि का क्यों न हो, यह अनुवाद संजीवनी बूटी के समान है । इस का अध्ययन करने से सिख, हिन्दु, बौद्ध, जैन, पारसी, ईसाई, मुसलमान आदि सभी धर्मों के अनुयायियों को अपने अपने मत के अनुसार ही उद्धार के उपाय मिल जायेंगे । इस ग्रन्थ में साधकों को अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये सम्पूर्ण सामग्री मिलेगी ।
गुरु जी की यह अमृतमयी रचना ''गोबिन्द गीता'' श्री दशम ग्रन्थ साहिब जी का ही एक अभिन्न अङ्ग है; जो कि ''तख्त श्री हरिमन्दिर जी'' पटना साहिब मेंसुशोभित पुरातन हस्त–लिखित ''श्री दशम ग्रन्थ साहिब'' में अङ्कित है । जिस स्वरूप को तख्त श्री पटना साहिब मे गोबिन्द गीता वाला स्वरूप कहकर सम्मान दिया जाता है । इसके अतिरिक्त इस वाणी के उतारे अन्यत्र भी कई पुरातन हस्त–लिखित पोथीयों में मिलते हैं, जिनका कई जगह हमने दर्शन भी किया है । इस ''गोबिन्द गीता'' की प्रैस द्वारा छपी हुई भी एक पोथी कहीं–कहीं उपलब्ध है, जो कि बहुत समय पहले भाई गेला राम ऐंड संनज़ मालक श्री भारती भण्डार पुस्तकालय मुलतान से प्रकाशित हुई थी ।
अब बहुत ही हर्ष का विषय है, कि महाराज जी की यह रचना उन्ही के ही ३५० वें प्रकाश पर्व के अवसर पर पुनः प्रकाशित होने जा रही है, क्योंकि प्राचीन साहित्य की सम्भाल समय की जरूरी मांग है, इसके बिना हम अपने साहित्य, इतिहास और विरासत की सही पहिचान नहीं कर

सकते । खोजी सज्जन जानते हैं कि अभी तक सिख साहित्य की अनेक पुरातन रचनाएं, हस्त–लिखित रूप में इधर–उधर पड़ी हैं, जिनको अभी तक छापेखाने के दर्शन नसीब नहीं हुए । बहुत सी अमूल्य रचनाएं तो कागज़ कीटाणुओं की खुराक बनके हमारे से सदा के लिए विलुप्त हो चुकी हैं और कितना दुर्लभ खज़ाना तो पठाणी हमलों के समय लूट–मार तथा अग्नि भेंट हो चुका है । हमारा पहला फ़रज़ है कि जो कुछ भी प्राप्त है, उसकी तुरन्त सम्भाल की जाए । जिस संप्रदाय के गुरुओं ने ग्रन्थ को ही गुरु बनाया हो, उस संप्रदाय को अपने ग्रन्थों की उपेक्षा नही करनी चाहिये अपितु सदैव उनके संरक्षण एवं प्रचार प्रसार की तर्फ ध्यान देना चाहिये।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज की प्रेरणा से उपरोक्त विचार को ध्यान में रखते हुए तख्त ''श्री हरिमन्दिर जी'' पटना साहिब के जत्थेदार सिख पन्थ के महान् विद्वान् सम्मान–योग्य सिंह साहिब, ज्ञानी इकबाल सिंह जी ने सिख पन्थ के कई विद्वान् महानुभावों से विचार विमर्श किया कि **''मानस की जाति सभै एकै पहचानबो'' तथा ''एकु पिता एकस के हम बारिक, तू मेरा गुरहाई''**की सिद्धान्त रूपी सुगन्धी को प्रत्यक्ष रूप से फैलाने वाली महाराज जी की यह अमूल्य रचना जन–जन तक पहुंचनी चाहिये । ऐसा तभी संभव है यदि इसका पुनः प्रकाशन हो । इस विचार से उनके मन में उत्साह हुआ कि पंजाबी भाषा के साथ–साथ इसका हिन्दी भाषा में भी प्रकाशन होना चाहिये । जिस के फलस्वरूप गुरु महिमा से अपरिचित अन्य धर्मावलम्बी लोग भी गुरु–सिद्धान्त की विशालता को देखकर गुरुघर के श्रद्धालु बने ।

इस शुभ विचार को साकार करने के लिए सिंह साहिब जी ने इस पावन ग्रन्थ का हिन्दी में रूपांतरण करने की सेवा का सुअवसर हम को प्रदान

किया । सतिगुरु जी के आशीर्वाद से हम लोगों ने तुच्छ–बुद्धि अनुसार इस सेवा को करने का अल्प प्रयास किया ।

इस ग्रन्थ के पाठ की टाईपिङ्ग श्री पटना साहिब वाले हस्त–लिखित स्वरूप अनुसार ही की गई है, परन्तु कहीं–कहीं प्रसङ्ग–सङ्गति और पाठान्तर को देखकर कई अन्य हस्त–लिखित पोथीयों की भी सहायता ली है । हिन्दी करते समय ग्रन्थ की मूल लिपी जो गुरुमुखी, उसका केवल हिन्दी लिपी रूपांतर ही किया है; अक्षर और मात्राओं को भाषा की नियमावली के अनुसार ज्यों का त्यों रखने का प्रयास किया है । फिर भी मानव स्वभाव से त्रुटियां होना स्वाभाविक है ।

यथा– गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः ॥

इस लिए विद्वद्जन और पाठक सज्जन त्रुटियों का परिहार करके भाव पूर्वक पढ़े और सेवकों को क्षमा प्रदान करें ।

नानक नाम चड़दी कला ॥ तेरे भाणे सरबत दा भला ॥

गुरु पंथ के दास
सन्त दर्शन सिंह शास्त्री
सन्त जसविन्दर सिंह शास्त्री
निर्मल संप्रदाय, काशी (बनारस)

श्री गोबिन्द गीता के अध्यायों की विषय–सूची

(२) द्वितीयोऽध्याय– सांख्ययोग
(३) तृतीयोऽध्याय– कर्मयोग
(४) चतुर्थोऽध्याय– ज्ञान–कर्म–संन्यासयोग
(५) पञ्चमोऽध्याय– कर्म–संन्यासयोग
(६) षष्ठोऽध्याय– ध्यानयोग (आत्म–संयमयोग)
(७) सप्तमोऽध्याय– ज्ञान–विज्ञानयोग
(८) अष्टमोऽध्याय– अक्षर–ब्रह्म योग
(९) नवमोऽध्याय– राजविद्या–राजगुह्य–योग
(१०) दशमोऽध्याय– विभूतियोग
(११) एकादशोऽध्याय– विश्वरूप–दर्शनयोग
(१२) द्वादशोऽध्याय– भक्तियोग
(१३) त्रयोदशोऽध्याय– क्षेत्र–क्षेत्रज्ञ–विभागयोग
(१४) चतुर्दशोऽध्याय– गुणत्रय–विभागयोग
(१५) पञ्चदशोऽध्याय– पुरुषोत्तम–योग
(१६) षोडशोऽध्याय– दैवासुर–संपद्विभाग–योग
(१७) सप्तदशोऽध्याय– श्रद्धात्रय–विभागयोग
(१८) अष्टदशोऽध्याय– मोक्ष–संन्यासयोग

गोबिन्द गीता
१ओंकार सतिगुर प्रसादि

श्री भगवत गीता भाषा श्री गोबिन्द सिंह कृत ॥

छंद॥ ओमं सोहं गोबिंद अक्रै निराकार अनामु निरबन्धु ॥ सरब निवासी सभ महि रविआ जलि थलि महीअलि खंड ब्रहमंड ॥ सरबे एको पूरन सुआमी अचलि अगाधि सभ वही प्रचंड ॥ जो दीसै अरु जो किछु सुणीऐ एक ब्रह्म अद्वैत अखंड ॥१॥ चौपई ॥ नमो परमेसर राम हमारे ॥ हम तुम होइ के खेल पसारे ॥ हम तुम एक अकाल सरूप ॥ अलख ब्रहमंड गोबिंद का रूप ॥२॥ नाना भांति होइ पसरिओ स्वामी ॥ घटि घटि का है अंतरिजामी ॥ नाम जात सभ रूप तुमारे ॥ तुध बिनु कोई नाहि पिआरे ॥३॥ जो दीसै सो क्रिसन मुरारी ॥ जिनि एहु सगली खेल पसारी ॥ बालक निआई खेलु सभ खेले ॥ खेल रहे तब आपि संगु मेले ॥४॥ बोलन सुनन देखन सभ सुपना ॥ अद्वैत ब्रह्म मै जापन जपना॥ सुपन माहि एकु बाजी राची ॥ जिनि जानी सो गोबिंद साची ॥५॥ वही सुपना इकु जुगु कहाइओ ॥ द्वापुर नामु बेद कहि गाइओ ॥ तहां क्रिसन होए कउतक कीना ॥ ब्रह्म गिआन सभ ही को दीना ॥६॥ जो देखै सो क्रिसन पिआरा ॥ जिन इहु जापु अद्वैत उचारा ॥ खेल संकोचन पर जब आइआ ॥ भारथ का तब जुध रचाइआ ॥७॥ पांडव कैरव सभ देह बनाए ॥ बीच सरब के गोबिंद राए ॥ जो किछु भावै सोई करावे ॥ करे करावे मगन हो जावे ॥८॥ सुपन माहि जुध जब थापिआ ॥ तब दो दल कैरव पांडव जापिआ ॥ जब दोनो दल जुध को चले ॥ सभ ही क्रिसन माहि जाइ रले ॥९॥ दोहरा ॥ जुध सिंगार बणाइकै कुरखेत्र जब ही चले ॥ सुत ध्रितराषट्र अरु पंडके तिन सिउ सभ धरती हलै ॥१०॥ दोहरा ॥ जबहि ध्रितराषट्र यिह पेखिओ मुखहु कही यिह बात ॥ ऐसे जुध के देखणे हउ भी चलहो तात ॥११॥ दोहरा ॥ तब बिआस जी परम ब्रह्म कहिओ ध्रितराषट्रमाहि ॥ तेरे तो नेत्र नही किआ देखैगा जाहि ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ ऐसा बचन जब सुनिओ

ध्रितराषट्र बिआस गंभीर सिउ ॥ मुख ते तब एहो भनिओ   देखौ नही तौ सुनोगा ॥ १३ ॥

बिआस जी वाच ॥

सोरठा ॥ जब सुनी इह बात राजा की तिस बिआस देउ ॥ कहे सुनौ तुम तात संजे मेरा सिख है ॥ १४ ॥ दोहरा ॥ सो तेरा है सारथी अरु महां सुधी है सिध ॥ जो भारत मैं वरतसी तुझे कहे सभ बिध ॥ १५ ।

संजयोवाच ॥

दोहरा ॥ तब संजे परनाम करि कहै बिआस जी माहिं ॥ तुम जो कहो राजा प्रति संजे कहिहै ताहि ॥१६ ॥ दोहरा ॥ हे प्रभ जुध कुरखेत्र मै अर इहु हसनापुर माहि ॥ इतने मारगि की बाति को किउ करि कहोगा ताहि ॥ १७ ॥

रिखो वाच ॥

दोहरा ॥ तब रिख जी ने इउं कहा सुनहो संजे सिख ॥ जोग धिआन ते जानीऐ वरतमान भूत भविख ॥ १८ ॥ दोहरा ॥ दसवें पवन चड़ाए कै सभ जुध देखो मीत ॥ दिसटि दिब तुझ को दई तिस पर करि परतीत ॥१९ ॥ दोहरा ॥ जो किछु देखो सो कहो राजा के विद माहि ॥ दोनो दल कुरखेत्र मैं देखहु जुध कराहि ॥ २० ॥

ध्रितराषट्रोवाच ॥

दोहरा ॥ राजा ऐसे भाखिहै सुनहो संजै मीत ॥ मेरे सुत अरु पंडके तिन अब किआ किछु कीतु ॥२१॥

संजिओवाच ॥

चौपई ॥ संजै आखे राजा माहि ॥ कउतक जुध कहो अब ताहि ॥ सैना दोऊ दलो की माहि ॥ जो किछु कीई कहों प्रगटाहि ॥ २२ ॥ सात खूहणी पांडव की गनी ॥ यारह खूहणी कैरव की बनी ॥ जब दुरजोधन सैना देखी ॥ फउज पांडव की नीकी पेखी ॥२३॥ देख चले अचारज पास

॥ द्रोणाचारज महा प्रकाश ॥ अचारज निकटि जाइ इह भाखिओ ॥ देख पांडव किआ मोरचा राखिओ ॥२४॥ तुमरा सिख महां बुधवान ॥ ध्रिसटदुमन सैनानी जान ॥ तिन ऐसी पंगत सुभ कीनी ॥ अपने दल की सोभा लीनी ॥२५॥ तिन सैना मै भारे बीर ॥ धनख बिदिआ मैं गुनी गहीर ॥ भीम अरजन अरु बैराट ॥ जिन सभ दल का ठटिओ ठाट ॥२६॥ अवर राजा कहा लग कहों ॥ महांरथी सैना सभ लहों ॥ अब जो सैना हमरी मीता ॥ ताहि बखानो निरमल रीता ॥२७॥ प्रिथमे तुम हो गुर गोपाल ॥ द्रोणाचारज महां क्रिपाल ॥ अउर भीखम अरु क्रिपाचारज ॥ करन असुथामा हैं सुभ कारज ॥२८॥ अर सोमदत ते आदि जो देखो ॥ मो निमित प्रान तिआगे पेखो ॥ जो ससत्र विदिआ माहि प्रबीन ॥ यारह खूहनी हम संग चीन ॥२९॥ हमरा बखसी भीखम जानो ॥ तिसकी प्रीत पांड संग मानो ॥ यिह बिध यारह खूहनी थोरी ॥ सात खूहनी पांडव बहु जोरी ॥३०॥ तिनका बखसी भीम बली है ॥ तिन सौ सगली धरति हिली है ॥तब दुरजोधन मुखो बखानिओ ॥ हमरी सैना सभ पहिचानो ॥ ३१॥ अपने अपने मोरचिओ माही ॥ ससत्र मारग सभ बंद कराही ॥ सभ भीखम की रखिआ करो ॥ भीखम बचन चित पर धरो ॥३२॥ सारी सैना का सिरदार ॥ भीखम जोधा अपर अपार ॥ भीखम जब राजा सिउ सुनिओ ॥ केहर रीति गाज के भनिओ ॥३३॥ राजा के आनंद उपजावन ॥ लागा अपना संख बजावन ॥ जब सैना संख यिह सुनिओ ॥ सभने अपने संख मुख भनिओ ॥३४॥ भेरी पवना अवर दमामै ॥ सगले ही बाजंत्र बजानें ॥ बहुत सबद भारी हो रहिआ ॥ आकास धरन एक होइ गइआ ॥ कैरव का जब मारु बाजा ॥ अब सुन पांडव के हैं राजा ॥३५॥ पांडव सैना वरननं ॥ चौपई ॥ पांडव की सैना के माहि ॥ अति सुंदर रथि उतम आहि ॥ स्वैत रंग चार जिस घोड़े ॥ साज बाज सिउ बहु बिध जोड़े ॥३६॥ सारथी ठउर ईस का ईसर ॥ श्री क्रिसन महा गिआनीसर ॥ जोधा ठउर अरजन हितकारी ॥

भगत गोबिंद की जिन रिद धारी ॥३७॥ रिखीकेस श्री क्रिसन गोपाल ॥ बजाइआ संख भए किरपाल ॥ पाछै अरजन संख बजाइआ ॥ सभ पांडव ने एही गाइआ ॥३८॥ तिन संखों जो सबद उचारे ॥ रिदे ध्रितराषट्र पुत्रन के जारे ॥ प्रवाह ससत्र दल ते जब भइआ ॥ तब अरजन रिखीकेस पहि कहिआ ॥३९॥ अड़िल ॥ तब अरजन धनख उठाइ सिर ऊपरि फेरकै ॥ रिखीकेस को कहै प्रभू त्रिण मेरकै ॥ मेरो रथ कउ दोनो दलों मध ले चलो ॥ सभ को देखो मैं जो जोधा है भलो ॥४०॥ जो मो सो करिहै जुध तिनो सो हउ करों ॥ ध्रितराषट्र पुत्र दुरजोधन से मै ना टरों ॥ यही बात संजै ने राजा पै कही ॥ तब श्री क्रिसन बाग असों की गही ॥४१॥ दो सैना के मधि रथ इस थापिआ ॥ भीखम द्रोना सनमुख रथ को राखिआ ॥ मुख सो बचन उचारे केसव परम सरूप ॥ सुन अरजन परबीनि निरमै तुझ सरूप ॥४२॥ दोनो दलो के माहि रथ तुमरा धरा ॥ जो तुम सो करिहै जुध सो सनमुख खड़ा ॥ तब पारथ यहि बचन स्रवन करि पेखिआ ॥ सत्रु सैना के माहि मीत सभ देखिआ ॥४३॥

अर्जुनोवाच ॥

दोहरा ॥ मोह संग लपटाइओ अरजन यिउ कहै ॥ हे रिखीकेस मधसूदन सत्र सभ मित्र लहै ॥४४॥ स्वैया ॥ हे मधसूदन किआ करो जी इह सभ देख मै भइआ हैराना ॥ पिता पितामे अरु गुर देखै पुत्र पोत्रे देख लुभाना ॥ साले ससुरे अरु सभ बांधव यह देखत मै भइआ दिवाना ॥ थरहर कांपो जलउ सरीर मै इन के हते न होइ प्रधाना ॥४५॥ चौपई ॥ हे प्रभ जी सभ पूजा जोगा ॥ तिनको मारे होइ विजोगा ॥ साजन हते कलिआण न लहे ॥ मित्रो बैर मत अपनी दहे ॥ ४६ ॥ भूम का राज तुच्छ है माधो ॥ त्रिलोक का राज जे मै साधो ॥ तौ भी साजन को नही मारों ॥ राज बिसारो भीख बीचारो ॥४७॥ अरु जो राज कुटंब के कारन कीजै ॥ तिन को मार राज किआ लीजै ॥ इह अपसगन मन माहि बिचारो ॥ यिही

बिचारो मन को जारो ॥४८॥ हे प्रभ दुरजोधन के मारे ॥ नही कलिआन मुझ सुनो पिआरे ॥ जो दुरजोधन महा कबुधी ॥ तिसु कै मारे हतिआ सुधी ॥ वहु जदप राज लोभ अंध भइआ ॥ सासत्र बचन मै मन मो गहिआ ॥४९॥ शास्त्र साख ॥ कुल का नासु मित्र सो द्रोही ॥ इस ते परे पाप नही कोई ॥५०॥ मंगल छन्द ॥ सुन रिखीकेस गोविंद ॥ तुम दीन दइआल अनंद ॥ मैं पाठ सिंम्रित कीआ ॥ तिन बचन हिरदै लीआ ॥५१॥ कुल हतिआ पाप प्रचंड ॥ तिन हते सभ सुख खंड ॥अवर पाप बहु बिध होइ ॥ कुल धरम जावे खोइ ५२॥॥ जब धरम नासत भइआ ॥ तब अधरम इसथिर रहिआ ॥ अधरम ऐसे होइ ॥ कुल इसत्री सभ जोइ ॥५३॥ विभचारणी हो रहै ॥ पर पुरख का संग गहै ॥ तिस सौ जो संतत होइ ॥ सभ वरन संकर सोइ ॥५४॥ जब वरन संकर भइआ ॥ पिंड पित्र पहुचन रहिआ ॥ जब पिंड पहुचे नाहि ॥ पित्र स्वर्ग ते गिर जाहि ॥५५॥ जिनि कीआ कुल का नास ॥ सभ पाप तिसे परकास ॥ हे प्रभु साजन देव ॥ कुल नास का सुन भेव ॥५६॥ जो नास कुल का करै ॥ सो नरक ही मै परै ॥ इउ सुनिओ सिंम्रित माहि ॥ कुल हतिआ नरके जाहि ॥५७॥ दोहरा ॥ अब अरजन ऐसो कहै देखो हम किआ कीन ॥ जब इह उदम हम कीओ स्रब पाप हम लीन ॥५८॥ दोहरा ॥ साजन हते न सूरमत सनमुख होवो नाहि ॥ ससत्र हाथ न पकड़हो जे कैरव हत जाहि ॥५९॥ दोहरा ॥ मुझको जब इह हतेगे तब मेरी कलिआन ॥ इहु संग्राम मै न करौ छोड राज अभिमान ॥६०॥

संजिओवाच ॥

सोरठा ॥ ध्रितराषट्र कै पास ऐसे संजे आख है ॥ सुनो राजन अरदास पांडव कहै यिउ क्रिसन पै ॥ ६१॥ सोरठा ॥ पांडव बहु दुख साथ रुदन करे है नैन सो ॥ धनख हाथ सौ डार सोक समुंद्र मै बह गइआ ॥६२॥

दोहरा ॥ मूरछ हो करि गिड़ पड़ा अरजन रथ के माहि ॥ आगै मधसूदन कहै सुनहो राजा ताहि ॥६३॥

टीकाकार वाच ॥

चौपई ॥ गीता मुकति सरूप का धिआउ ॥ अरजन बिखिआदि नामु चित लाउ ॥ जो को सुनहै इह संवाद ॥ बरन आस्रम तिस आवै स्वाद ॥ दइआ करे सभहूं के माहि ॥ जग मै सोभा अति ही ताहि ॥६४॥

इति श्रीमद्भगवत गीता–सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते अर्जुन विषाद योगो नाम प्रिथमोऽध्याय ॥१॥६४

आगे अध्याय दूसरा चलिआ ॥

संजिओ वाच ॥

चौपई ॥ हे राजा मधसूदन यिउ पेखे ॥ अत बिआकल अरजन कौ देखे ॥ तिस को आखै श्री भगवान ॥ हे अरजन तूं समा पछान ॥ १ ॥

श्री भगवानोवाच ॥

चौपई ॥ हे अरजन इस बिखड़ी ठउर ॥ मन को सोग महां मत जोड़ ॥ अर जो नीच बातै तूं कहै ॥ तिसते स्वर्ग मारग नही लहें ॥ २॥ संसार मांहि भी कीरत नांहि ॥ हीजौ की बातै मत गाहि ॥ तत बात तूं समझे नांही ॥ तांते तूं इस भै को पाहि ॥ ३ ॥ नीच परकिरत कौ बेग तिआग ॥ समां पहिचान जुध सौ लाग ॥ जगत तिआग तब पूरन हो ॥ जैसा कहे करे है सो ॥

अरजनोवाच ॥

दुरजोधन से मूल न लड़ों ॥ खेत मांहि कैरव सों टरौं ॥ ४ ॥ दोहरा ॥ अरजन जब ऐसो सुनिओ कहिओ मधसूदन मांहि ॥ हे सखे हे सत्रुनास अब तुम सुनहो ताहि ॥ ५ ॥ चौपई ॥ भीखम अउर द्रौनाचारज ॥ सभ ही जगपूजा के कारज ॥ इन की बहु बिध पूजा कीजै ॥ इन कौ मार राज

किआ लीजै ॥ ६ ॥ कउन वेद शास्त्र के मांहि ॥ गुर दादा मारन किन गांहि ॥ अउर कुटंब लोग नहि मारौ ॥ महा पाप मै रिदे बिचारौ ॥ ७॥ जो इन मार राज कौ पावौ ॥ तिन का रुध्र सरबदा खावौ ॥ अर इह बात पहिचानो मीत ॥ हम जीतें के हम कौ जीत ॥ यही बात निसचै मैं जानी ॥ मित्र मरत कलिआन न मानी ॥८॥ दोहरा ॥ हे प्रभ तुम जो उचरिओ मुझ प्रति ऐसी बात ॥ नीच बुधि इस समै मै तैं किउ लीनी तात ॥९॥ दोहरा ॥ अब हम कछु न समझ हौ सभ बुधि दई तिआग ॥ सरन तुमारी मैं पड़ा चरन कमल सो लाग ॥१०॥ दोहरा ॥ जिसमौ मुझ कलिआन हो सोई बतावहु मोहि ॥ क्रिपा करकै प्रभ कहो अब मै सिख हौ तोहि ॥११॥ चौपई ॥ ऐसे दुख ते मुझै निकासो ॥ सूकी इंद्री कलिआन मो ना सो ॥ सुभ बात मोहि दिसटि न आवै ॥ जदप राज त्रिलोकी पावै ॥१२॥ भूम पताल स्वर्ग का राज ॥ इन के तुलि नही को काज ॥ सभ ही राज जदप हउ पाए ॥ तउ भी मेरा दुख नही जाए ॥ तुमरी सरनि गही भगवान ॥ जो सुभ जानौ करौ बखान ॥१३॥ संजिओवाच ॥ दोहरा ॥ संजे कहे ध्रितराषट्र पै सुनौ राज के धनी ॥ अरजन जब इहु बेनती रिखीकेस पै भनी ॥१४॥ सोरठा ॥ अरजन कहे इह बात सुण बासदेव पूरन प्रभू ॥ संग्राम न करो इन साथ किसी बिधि यहि कहत हो ॥१५॥ सोरठा ॥ जब इह सुनी गोपाल तब मुख ते बोलत भए ॥ सुण अरजन बेहाल सांख शास्त्र तुझ कहत हौ ॥१६॥

श्री भगवानोवाच ॥

स्वैया ॥ सुधी बिबेकी पंडित गियानी तिन की बात कहों सुन लीजै ॥ जिस की चिंता नाही करनी तिस की चिंता कहु किआ कीजै ॥ जो जनमें सो निसचे बिनसे नास्त बात किआ चित धरीजै ॥ देह बिनासी जीउ अबिनासी तिन पुरखो कौ ऐसे सीझै ॥१७॥ चौपई ॥ अरजन प्रति आखे गोपाल ॥ सुन अरजन पांडे के लाल ॥ अउर भांति मै तुझ

समझावौ ॥ तेरे मन की तपत बुझावौ ॥१८॥ इह जो सनमुख राजा ठाढे ॥ तेरी सकति न जावैं बांधे ॥ तिन का नास न तेरै हाथ ॥ करम चित्र न जाने गाथ ॥१९॥ जग मैं आवा गवन बनाई ॥ जो आवै सो थिर न रहाई ॥ इह राजा सुन कैसे आंही ॥ आगे भी थे हुण ही नांही ॥ २० ॥ पाछे होते आइ सारे ॥ हुण भी हैं सुण पारथ पिआरे ॥ आगै भी होवेंगे मीत ॥ आवागवन देह की रीत ॥२१॥ पुदगल की अब बात सुनो तुम ॥ बालक तरन बिरध है जिम ॥ चत्र अवसथा मिरत तुम जानों ॥ यह सभ धरम देह के मानो ॥२२॥ बिबेकी यही चित मैं जानैं ॥ मरने की चिंता नही मानैं ॥ जीउ है बासदेव की अंस ॥ वहि अकाल जानो सरबंस ॥२३॥ अवर यहि तुझ इंद्रीआं का गिआन ॥ उतपत भइआ तूं निसचे जान ॥ हे सुत कुंता के तूं अब सुन ॥ इंद्री गिआन कहों तुझ फुन ॥२४॥ सीत उसन सुख अरु दुख ॥ तिह ते पावै सदा मानुख ॥ इक पल सुख दूजे पल दुख ॥ तिस अनित तें किआ है सुख ॥२५॥ आगमपाइ इंद्री सुख सो ॥ तिस ते गिआन मत प्रापत हो ॥ सुख दुख इंद्री के सहि रहो ॥ भिंन जीउ देह तें लहो ॥२६॥ अर जो पुरख स्रेष्ट आहि ॥ उहु सुख दुख इंद्रीओ के नही माहि ॥ सदा रहै सम निरमल रीत ॥ अंम्रित गिआन पान तिन कीत ॥ गिआंन पांन तें निरमल होवै ॥ इंद्रीओ की बिखिआ सभ खोवै ॥२७॥ दोहरा । आतम सत अकाल है तिस का नाही नास ॥ देह जो द्रिसटी आव हैं सो है सभी बिनास ॥२८॥ दोहरा ॥ इह दो बातैं समझ कै ततवेता है जो ॥ चिंता कोई ना करै नास न जाणै को ॥२९॥

श्री भगवानोवाच ॥

कबित्त ॥ परम आतम है एक पुरख अंतर सभ देहो के सोई अबिनासी कूटस्त तिस रूप है ॥ देह सभ अनित उपज बिनसे है सरब काल आतम अद्वैत अकाल अउ अनूप है ॥ सदा रहै निराहार खाए पीए कछू नाहि

अखंड अर अचल अर अपर तिस रूप है ॥ तांते यहि बात समझ पारथ उठ जुध करि आतम एक साच अउर रंक है न भूप है ॥३०॥

श्री भगवानोवाच ॥

मंगलि छंदु ॥ को कहै पारथ एह ॥ हत कीआ अमका देह ॥ अवर कहै दूजा कोइ ॥ हत करो मै ही सोइ ॥३१॥ सो दोऊ बिरथे जान ॥ उन मांहि नांही गिआंन ॥ उह समझते कछु नांहि ॥ अगिआन ही को पाहि ॥३२॥ नही जीउ ब्रहमु बिनास ॥ तिह का न होवै नास ॥ सो जीउ को अब कहों ॥ जीउ ब्रहम एको लहो ॥३३॥ नां जनमत है सो ॥ उस नास नांही हो ॥ उहु सदा एक सरूप ॥ उहु जनम रहत अनूप ॥३४॥ अर नित पुरातन जो ॥ तिस हत करे ना को ॥ अउर मरन देह का धरम ॥ जिन पाइआ इह मरम ॥३५॥ सो ना कहै यहि बात ॥ मै कीआ अमका घात ॥ या उहु कहै मुझ हत ॥ देह नास जानो सत ॥३६॥ चौपई ॥ सुनहो अरजन सिख प्रबीन ॥ संजोग देह आतम इउ चीन ॥ जैसे बस्त्र होइ पुराना ॥ डार दीआ तब नवा हंढानां ॥ ३७॥ तिसी भांति आतम देह डारे ॥ अउर देह लेवे सुन पिआरे ॥ आतम की उसतति सुन मीत ॥ भली भांति राखो तुम चीत ॥३८॥ आइध करि काटिआ नही जाइ ॥ तां को अग्नि ना सके जलाइ ॥ डूबे नाही जल के मांहि ॥ मारुत तिसै सुकावै नांहि ॥३९॥ अछेद अदाह जो तत पदारथ ॥ सभ के अंतर जानो पारथ ॥ थांभ रहिआ सभहूं को आप ॥ तिस ते निसचल उस का जाप ॥४०। पुरातन अउर सनातन कहीऐ ॥ अबगत अद्रिसट अगोचर लहीऐ ॥ चितवन करि चितविआ नही जाइ ॥ ऐसा अक्रै कहिआ समझाइ ॥४१॥ जो को ऐसा आतम जाने ॥ सो चिंता कोऊ नही माने ॥ जैसा आतम तैसा मुझि कहिआ ॥ जिस ने मन मो ऐसा लहिआ ॥४२॥ करे किसी की चिंता नांही ॥ उहु जानै एको ब्रहम ही आही ॥ हे पारथ तुझ हउ समझावौ ॥ बोलनहार की बात सुनावौ ॥४३॥ दोहरा ॥ जो जाने तूं बोलता जनमे मरे नित सोइ ॥ यही बात बिचार के

चिंता मत करि कोइ ॥४४॥ जो को जनमे सो मरे आखि पेखि सभ जाहि ॥ जो निसचे करि बिनस है चिंता तिस की नांहि ।४५॥ सोरठा ॥ अउर पख सुन मीत चिंता कोई ना करो ॥ इह तुम राखो चीत जैसे तुम सौ कहत हौ ॥४६॥ चौपई ॥ इह सभ लोक ठांढे जो देखो ॥ तिन की आदि नही कछु पेखो ॥ जो इह कउन ठउर सो आए ॥ जब बिनसै तब कित को जाए ॥४७॥ मध देखने माहि इह आवै ॥ पुदगल तिआग कहा वै जावै ॥ आदि अंत जाकी ना जापै ॥ तिस की चिंता करै सो खापै ॥४८॥ जल के मधि बुदबुदे जोइ ॥ सो वहि सभ ही को जल होइ ॥ तैसे इह सभ आतम रूप ॥ निरगुन ते इह सरगुन सरूप ॥ ऐसे समझ चिंता ना करो ॥ सहज बने सोई कछु करो ॥४९॥ दोहरा ॥ अउर पखि अब कहत हौ सुन पारथ परधान ॥ इस पखि चिंता ना करो जीउ अकाल पहिचान ॥५०॥ दोहरा ॥ जो जानै मै निरख हो आतम बोलनहार ॥ सो देखै अचरज करि कहै अचरज बीचार ॥५१॥ स्रवन करै असचरज सौ असचरज करे अभिआस ॥ यह सभ ही असचरज है आतम सुतह प्रकास ॥५२॥ सोरठा ॥ जो असचरज की बात तिस की चिंता ना करो ॥ आतम गोबिंद सात एक अद्वैत मन मो धरो ॥५३॥ चौपई ॥ पारथ आतम तत बीचार ॥ आइध करि तिस ना संखार ॥ सभ देहो के अंतर एक ॥ तिस ही के इह देह अनेक ॥५४॥ तिस ते चिंता कोई ना करो ॥ सहज बने निहकाम हो लड़ो ॥ अर आतम सभ देह बनाए ॥ देह बनाइ धरम वरताए ॥५५॥ खतरी देह जुध है धरम ॥ तेरी देह का एहो करम ॥ धरम बीचार सुकचीओ मत पिआरे ॥ तेरा कलिआण है इसे बीचारे ॥५६॥ खतरी देह को इहजुध है भाई ॥ दुलभ परापत हो पंडराई ॥ अपनी इछिआ सो सभ राजा ॥ जिन इह सगला भारथ साजा ॥५७॥ स्वर्ग द्वार तिन कारन खुले ॥ जब जूझै तब स्वर्ग को चले ॥

टीकाकारवाच ॥

सरगुन निरगुन एको रूप ॥ देह छाडे तब वही सरूप ॥५८॥

श्री भगवानोवाच ॥

अरु जो तूं काइर हो जावै ॥ धरम जुध ते आप बचावै ॥ तातें देह धरम तुध जावै ॥ स्वर्ग भंग ते अति दुख पावै ॥५९ ॥ प्रिथमे देह धरम तुधु जाइ ॥ दुतीऐ अपजस तुध सभ गाइ ॥ त्रितीऐ पाप भार तुझ होवै ॥ देहि अनित मै पुंन तूं खोवै ॥६०॥ जे को तेरी कीरति गावै ॥ सो सभ तुझ को काइर पावै ॥ जिस की जग मै निंदिआ होइ ॥ ध्रिग जीवन तिस का है सोइ ॥६१॥ जो जोधा तुझ जानै सूर ॥ सो तुझ जानै काइर मूड़ ॥ बुरे बचन कहे तुझ माहि ॥ इस निंदिआ तें तूं दुख पांहि ॥६२॥

टीकाकारवाच ॥

देहि बिनासी सभ ब्रहम होइ ॥ जो अब जानै तैसा है सोइ ॥

श्री भगवानोवाच ॥

जो तूं जुध बिखै लड़ मरै ॥ राज स्वर्ग लोकों का करैं ॥६३॥ अरु जो जीतेंगा संग्राम ॥ राज माहि करें आराम ॥ राज भूम का बहु बिधि भोगहि ॥ जस तेरा होवै विच लोगहि ॥ ६४ ॥ हे कुंती सुत जुध कर मीत ॥ ऐसी भांत जुध की रीति ॥ सुख दुख सम जानौ जुध करो ॥ हार जीत मैं चित न धरो ॥ ६५ ॥ तिस का लेप न लागै तोहि ॥ सांख बचन इह मन मै पोहि ॥ सांख बचन संपूरन कहिआ ॥ जो वहि तुझि मै जात न लहिआ ॥ ६६ ॥ अंताकरन जिस होइ मलीन ॥ सो इह सांख बचन नहीं चीन ॥

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ तिस को करम जोग परवान ॥ जैसी भाखी श्री भगवान ॥ ६७ ॥ करम करत अंतर सुधि होवै ॥ तब वहि भगति माहिं चित पोवै ॥ भगति करै तब प्रेम हरि पावै ॥ प्रेम कीए गिआन कौ गावै ॥ ६८ ॥ गिआन ते जानै अपना रूप ॥ चिरंकाल वह ब्रहम सरूप ॥ जो अब हीए गिआन को धारै ॥ इक ब्रहम अद्वैत बीचारै ॥ ६९ ॥ अद्वैत माहि दूसर नही कोइ ॥

आप ही आप ब्रहम वहि होइ ॥ जो सेवै सोई कुछु पावै ॥ सोई होवै जिस सौ चित लावै ॥ ७० ॥ आगे ही गुर नानक गाइआ ॥ वही प्रापति जिस सौ चित लाइआ ॥

टीकाकारवाच ॥

अब मधसूदनी टीकाकार ॥ ऐसे कहिहै लोक पुकार ॥ ७१ ॥ सुनहो सरब जगत के लोक ॥ तीअ सुत अरजन है किह जोग ॥ जैसे रिखीकेस जी कहिओ ॥ तैसा अरथ मुझ मन मै लहिओ ॥ ७२ ॥ तीअ है तम गुन मूरख अग ॥ रज गुन थोड़ा नही तिस तग ॥ तिस की मति नीच है भाई ॥ ऐसी सभ शास्त्रो करि गाई ॥ ७३ ॥ जो तिस का सुत सो है नीच ॥ महां अगिआनी फसिआ कीच ॥ पुरख उसतति बेदों मै लही ॥ पुरख सुत पुरख सम कही ॥७४॥ पुरख वही जो सतगुन मांही ॥ बिनां ब्रहम जाने जो नांही ॥ ऐसे पुरख का सुत है जो ॥ सो भी आप ब्रहम ही हो ॥७५॥ सुत पुरख राग द्वैख ते मुकत ॥ लाभ अलाभ मांहि सम जुगत ॥ तीय सुत रहै मोह मैं मगन ॥ नित बीचारै सगन अपसगन ॥७६॥ जो वरते भगवान रजाइ ॥ हुकम मांहि किआ सगन दिखाइ ॥ अरजन मोह बात जब कही ॥ तीय सुत नाम केसव तब कही ॥७७॥ जग सारा तीया सुत है भाई ॥ पुरख सुत को विरला पाई ॥ पुरख की तीया माइआ जग बनी ॥ जगत प्रीत माइआ सभ गनी ॥७८॥ ताते सुत सभ तीया के होए ॥ मोह लोभ मैं पचि पचि मोए ॥ पुरख सुत है हरी के संत ॥ हरि का नाम जिन जपिओ मंत ॥७९॥ हरि जी बिन दूसरा नही जानै ॥ पुरख तात सभ हरि ही मानैं ॥ हरख सोग तें रहै अतीत ॥ सम कर जानै वैरी मीत ॥८०॥ ऐसे मधसूदन जी गाए ॥ जगत लोक कौ गाइ सुनाए ॥ किसन मुरारी भगत उधारन ॥ बुध जोग का कहि है कारन ॥८१॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ हे पारथ तुझि कहित हों समझ राख मन नाल ॥ बुध जोगु कौ समझ करि करम फांस कटि डाल ॥८२॥ दोहरा ॥ प्रिथमे मेरी बुध सुन जो मैं भगतो साथ ॥ जो वह भूल सेवा करै बेग गहों तिस हाथ ॥८३॥ छंदि ॥ भूल अभूल जो सेवा करता ॥ पीछे आगे चित न धरता ॥ तिस कौ पाप कछू ना देवौ जानौ मगन भइआ जस करता ॥८४॥ भगत मेरे कउ दुख न कोई ॥ सुख सरूप भगत का होई ॥ तिस के संग सदा हउ रहता सगल पाप तिस के मै हरता ॥८५॥ देखन थोड़ा धरम हमारा ॥ एक बार मुझ नाम उचारा ॥ अथवा एक करै नमसकार सो तो भगत अमर नही मरता ॥८६॥ इकु पुहप पत्र मोहि को चाड़े ॥ अथवा कीरतन मोहि उचारे ॥ तिस के सगले बंधन काटो अपने पद को प्रापत करता ॥८७॥ दोहरा ॥ हे अरजन बिध आपनी भाखी तेरै माहि ॥ मेरे साथ जो भगत की बुध कहौ अब ताहि ॥८८॥ सोरठा ॥ हे कुरनंदन मीत सुन निहचा मेरे भगत का ॥ यही बात धर चीत मुझ बिन्रेक न पेखता ॥८९॥ दोहरा ॥ जिन मुझ पर निहचा नही तिस की बात कहौ ॥ जिस ओर कौ लाव है तिस ही ओर लहौ ॥९०॥ मंगल छंद ॥ सुन पंड नंदन बात ॥ निर निहचउ की गात ॥ अनक ओर भरमे ओह ॥ सुन पंडतो के मोह ॥९१॥ सुन पंडतो की रीत ॥ तिन स्वर्ग की है प्रीत ॥ बेद बचन सुंदर कहैं ॥ सो सुनें तिस द्रिड़ रहैं॥९२॥ सुन बचन कामनावंत ॥ जिन स्वर्ग ही की चिंत ॥ स्वर्ग इंद्रीओ का भोग ॥ तिन मुकत नाही जोग ॥९३॥ जो करम करते सोइ ॥ फल तिसै दुख सुख होइ ॥ जिन करम माहि कसटि ॥ उह सुरग ही का इसटि ॥९४॥ फल इंद्रीओ के भोग ॥ ब्रिथा जगत तिन जोग ॥ बुध अंध तिन की यही ॥ सुबिचार तिन सो रही ॥९५। जिन नही निहचा मीत ॥ समाध सो न प्रीत ॥ बिन समाध करम जो करे ॥ उहु नित जनमें मरे ॥९६॥ सुसमाध अरथ बीचार ॥ सभ ब्रहम अचल अपार ॥ जिस जानिआ सभ ब्रहम ॥ तिस मुकति का है मरम ॥ है बेद के वह करम ॥ सभ तीन गुन का धरम

॥९७॥ दोहरा ॥ हे पारथ अति प्रीतमां बेद बात सुन कांन ॥ त्रै गुन मांहि सभ बेद हैं दुख सुख त्रै गुन मांन ॥९८॥ दोहरा ॥ हो अतीत तूं बेद ते निरदुंद मांहि बिराज ॥ सीत उसन को तिआग कर आतम के संग लाग ॥९९॥ दोहरा ॥ आतम अजर अरोग है बिन आतम नाही को ॥ ऐसी बात बीचार कै तूं भी आतम हो ॥१००। सोरठा ॥ जब तूं ऐसी भांत आतम बुध मै जुरैगा ॥ तब तुझ होवै सांत तिस का फल अब बहुड़ सुन ॥१०१॥ चौपई ॥ जिउ सात समुंद्र परले मांहि ॥ सभ ही एक रूप हो जांहि ॥ तैसे मेरा जांननहार ॥ तिस के कोई नाहि विकार ॥ ॥१०२॥ मेरे मिले ते दुरबुध भागे ॥ आतम जोत तिस के घटि जागे ॥ हउ जो सभ का कारन मूल ॥ मै ही सूखम अर असथूल ॥१०३॥ तत बेद का जो को जानै ॥ सोई निहचा मुझ पर आनै ॥ हे अरजन तूं ऐसे जांन ॥ अद्वैत अकाल तूं मुझे पहिचान ॥१०४॥ द्रिड़ निहचा कर मेरे साथ ॥ जो अब कहौ सुनो सो गाथ ॥ खत्री बैस देह मैं धारे ॥ शास्त्र तिस के धरम उचारे ॥१०५॥ इस देह का धरम है जुध ॥ हान ब्रिध की तिआग कबुध ॥ लाभ अलाभ एक सम जान ॥ राग दुएख बराबर मान ॥१०६॥ एको ब्रहम अकाल पहिचान ॥ सभी देह मिरत तूं जान ॥ इस का नाम जोग सम कहै ॥ पुरख बिबेकी तिस कौ गहै ॥१०७॥ सभ धरमौ मै उत्तम धरम ॥ जिन पाइआ आतम का मरम ॥ हे धनंजे निसचे तूं जांन ॥ इसी धरम को साचा मांन ॥१०८॥ आसरा ऐसे धरम का लेह ॥ मेरी सरन चित कौ देह ॥ अर फल कोई बाछो नाहि ॥ जो बाछहि सो नीच कहाहि ॥

टीकाकार ॥

अब बाछो जो दूजा होइ ॥ एक ब्रहम मैं फल नही कोइ ॥१०९॥

श्री भगवानोवाच ॥

सोरठा ॥ हे अरजन सुन मीत बुध का निहचा द्रिड़ करो ॥ तोड़ो भ्रम की भीत मुझ आतम संग जुड़ रहो ॥११०॥ दोहरा ॥ कलिआन जोग इस

नाम सभी बिबेकी भाख है ॥ जिस आतम मांहि पहिचांन सो इह मन मौ राख है ॥१११॥ चौपई ॥ बुध द्रिड़ कर जुड़ मेरे साथ ॥ चितवन करम डार सुन गाथ ॥ जब बुध चितवन मन की तिआगी ॥ मेरे बिखै प्रीत तुझ लागी ॥११२। मेरा जो अभिनासी रूप ॥ देखेगा तूं सुनहो भूप ॥ जब तेरी बुध मोह बिसारे ॥ पापौ के तब मारग जारे ॥११३॥ देहो सौ बैराग तुझ होई ॥ ब्रहम समाध है निहचल सोई ॥ जब तैं ब्रहम समाध लगाई ॥ एक ब्रहम जाणेंगा भाई ॥११४॥ एते बचन जब केसव कहे ॥ सो सभ अरजन चित मैं लहे ॥ शंका कर प्रश्न तब करै ॥ अपना सीस केसव पग धरै ॥११५॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा । सुन कर अरजन बोलिआ हे केसव भगवान ॥ जिस की निसचल बुध है तिस की कह पहिचान ॥११६॥ दोहरा ॥ वहि समाध कैसे करे अर जग मै कैसे रहे ॥ बोलै चलै कौन भांत फुन सोवै किंह बिध बहै ॥११७॥ दोहरा ॥ क्रिपा करि समझाईऐ जो मै जानो एह ॥ अमका निहचल बुध है तिस की करहो सेव ॥११८॥ दोहरा ॥ कुरनंदन जब भाखिओ ऐसे माधव मांहि ॥ रिखीकेस जी परमब्रहम उत्तर कहिहैं ताहि ॥११९॥

श्री भगवानोवाच ॥

हे पारथ सुन एह लछन निहचल बुधी के ॥ नास जानै वहु देह अपने मांहि संतुसट है ॥१२०॥ कवित ॥ कांमनां कोई नांही आप ही मैं संतुसट आही अघाइ रहिआ सुख मैं सो पुरख निहचल बुधी है ॥ देहि कौ दुख लागै तिस की चिंता मै न जागै सुख को न बाछैं सोई पुरख अंम्रित सुधी है ॥ पांचो का संग तोड़ै तीन सौ मुख मोड़ै अपने ही मन सों आठ पहिर जुधी है ॥ भली बुरी एक जानै हरख सोग सम मानैं लाभ अरु अलाभ मै बराबर सत बुधी है ॥१२१॥ चौपई ॥ हे पारथ अब तुझ

कौ आखो ॥ बुध निहचल के लछन भाखौ ॥ जैसे कूरम जल के मांहि ॥ अपनी इंद्री पसारत आंहि ॥१२२॥ जब तिस कूरम के मन आवै ॥ इंद्री अपनें माहि समावै ॥ हाथ पाव तिस नदर न आवहि ॥ एक लोथ कूरम को पावहि ॥१२३॥ तिस प्रकार जो निहचल बुधी ॥ ऐसे करे वहि गिआंनी सुधी ॥ वरजे इंद्री बिखिओ मांही ॥ आतम मांहि वहि लीन कराहीं ॥१२४॥ तिस की बुध तूं निहचल जांन ॥ उसतति तिस की अब सुन कांन ॥ खुधिआ त्रिखा मिट जावै तिस की ॥ जगत रसो मै सुरत न उस की ॥१२५॥ सगले भोग इंद्री के जो ॥ तिस को छाडि जाइ है सो ॥ संसार बंध ते मुकता ओह ॥ निहचल बुधी कहिऐ सो ॥१२६॥ अड़िल ॥ कुंती पुत्र सुन लहो जो कछु अब मैं कहत हो ॥ धाम बिबेकी एह जैसे मै ही लहत हौ ॥ जदप बिबेकी पुरख मन बस करत है ॥ गुन इंद्रीओ के काट मन सो लड़त है ॥१२७॥ तौ भी इंद्री बलवांन जु मन संग एक है ॥ पउन धरम अर लहर मन कौ बेग है ॥ तिस इंद्री के साथ बहुड़ मन चलत है ॥ जब मन चल है मीत समाध तब हलत है ॥१२८॥ तिस कारन तें मीत सकल जो इंद्री ॥ मन कौ नित नचावै जैसे बंद्री ॥ संजम करके बैठि तूं अपने मंन कौ ॥ अबचल धिआन लगावौ पावहु पुंन कौ ॥१२९॥ जैसे जुगति मन रहै तैसी अब भाख हौ ॥ मेरे बिखै मन राख यही मै आख हौ ॥ जब तेरा मन जुड़िआ ब्रहम समाध मैं ॥ सगली इंद्री रहै सरब उपाध ते ॥१३०॥ इंद्रीओ का सिरदार मनूआं आखीऐ ॥ वहु मिलिआ मुझ संग इंद्रीओ सो राखीऐ ॥ इस प्रकार जिस नर की इंद्री वस भई ॥ हो सोई निहचल सुध इह मैं तुझ कही ॥१३१॥ दोहरा ॥ जैसे इस नर पुरख कौ इंद्री देहि भुलाइ ॥ तैसी जुगत सो अब कहौ हे कुरनंदन राइ ॥१३२॥ चौपई ॥ जो मेरे सिंमरन तें तोड़े ॥ अपने बिखिओ मांहि मन जोड़े ॥ अउर कुमारग मंहि ले जावै ॥ मन भूले कौ बहुत नचावै ॥१३३॥ सो प्रकार हे पारथ सुन ॥ जो इस्त्रीओ के संगी जन ॥ तिन का

संग वहु पुरख जब करै ॥ तिन की बात चित मैं धरै ॥१३४॥ मुझ ते काइर जग के लोक ॥ माते रहें इंद्रीओ के भोग ॥ बिखै भोग मैं तिन की प्रीति ॥ तिन के संग मलीन होइ चीत ॥१३५॥ जब उस नर तिन का संग करा ॥ तिन उपदेस रिदे लै धरा ॥ रंगिओ जात मन तिन की बातें ॥ बिखई पुरख कहीऐ तब याते ॥१३६॥ आठ पहर बिखिआ संग बसै ॥ मेरे नाम ते दूरौ नसै ॥ इसी चिंता मै दिन अरु रात ॥ कामनां की वह चितवै गात ॥१३७॥ जब कांमना पूरन ना होइ ॥ करोधि उपजि है अरु बहु मोहि ॥ जब उपजि है मोहि अंधिआर ॥ चईतनता तब देवै डार ॥१३८॥ चईतनता का नास जब भइआ ॥ कामी हंकारी तब रहिआ ॥ एते अउगन जब इस होइ ॥ नास बुध तब जानौ सोइ ॥१३९॥ बुध नास बिखिओ मै भई ॥ तब सत बात सभ इस तें रही ॥ सहजे मिरतक होवै मीत ॥ यही प्रमाद मिरतक की रीत ॥ तातें जो कलिआंन को चाहै ॥ कुसंग तिआग संग अवगाहै ॥१४०॥ सोरठा ॥ अब भगतो की बातसुन पारथ मैं कहत हों ॥ किउ करि वरते तात हरख सोग के जगत मै ॥१४१॥ कवित ॥ हरख अर न सोग मांन आइआ गइआ एक जांन भले स्वाद पान कीए हरख ना करत है ॥ बुरी वसत पाए तें सोग कछू करै नांहि खुधिआ की अगनि ते आप कौ बचत है ॥ मन राखै आतम माहि मेरा नित करे धिआन बिखिओ ते तिआगी सो निहचल रहत है ॥ क्रिपा करि तिस ही को सदा राखौ आप संग ऐसे अपने भगत की बात मै कहत हो ॥१४२॥ चौपई ॥ मेरी क्रिपा का फल सुन । जो लावै मुझ ब्रहम सौ धुन ॥ मन बिकार क्रिपा तें जाई ॥ क्रिपा अरथ कहो प्रगटाई ॥१४३॥ जे कोई आप गिआन कौ धारै ॥ अपने ऊपर दइआ बिचारै ॥ सो मुझ ते इह क्रिपा भई ॥ मन की दउड़ सगल मिट गई ॥१४४॥ अर जाकौ अपनी अनभै होइ ॥ बासदेव सभ जानै सोइ ॥ तिस को क्रिपा कोइ न करै ॥ ना उहु जनमैं ना उहु मरै ॥१४५॥ ब्रहम मांहि तिस होइ निवास ॥ ब्रहम अकाल सभ देहि बिनास ॥ मन के दुख

भगत के गए ॥ देहि दुख तिस के ना रहे ॥१४६॥ बिनसे दुख अरु सुख ठहराई ॥ भइआ प्रसंन मो क्रिपा पाई ॥ मेरे संग तिस की बुध लागी ॥ ओहु भगत अखल है बडभागी ॥१४७॥ दोहरा ॥ अब जिस की बुध नास है ता कौ भेद कहौ ॥ महां अगिआनी मूड़ता तिस के मांहि लहौ ॥१४८॥ मंगल छंद ॥ सुन सखे तिन की बात ॥ है बुध जिन की जात ॥ सो कहें आपस मांहि ॥ सो राम है जी कांहि ॥१४९॥ किस देखिआ है सोइ ॥ तिस जानता ना कोइ ॥ इक गिआन भी है बात ॥ एह जगत के सुख सात ॥१५०॥ जिन कीआ एह बिचार ॥ तिस आप ही कौ जार ॥ तिस प्रीत नाही मोर ॥ मैं कही निसचै तोर ॥१५१॥ बिन सरधा मेरी मीत ॥ तिस सांत नाही चीत ॥ जो सरधा मेरी करै ॥ सो जीवते ही तरै ॥ अब अउर सुनहो मीत ॥ दि्ड़ राख अपने चीत ॥१५२॥ दोहरा ॥ जो को इंद्री विखे मै अपने गुन सौ जाइ ॥ मन भी जावै तिसी संग तब वहु अति दुख पाइ ॥१५३॥ सोरठा ॥ तिस का इह द्रिसटांत सुन पारथ तूं समझ करि ॥ सो अनंद उपजावै सांत जिस सुनते दुख दूर हो ॥१५४॥ चौपई ॥ जैसे नवका सलता माहि ॥ उरार ते चले पार कौ जाहि ॥ अर मधि नीर के महां बिआर ॥ नवका लगनै देहि न पार ॥१५५॥ घाट छाड कुघाट लै जावै ॥ तैसे इंद्री ते मन दुख पावै ॥ जो मन जावे इंद्रीओ नाल ॥ तिन कौ भी तूं नवका भाल ॥१५६। इंद्रीआ पवन रूप है भाई ॥ मन भूला तिस ते दुख पाई ॥ तिस कारन ते हे महांबाहु ॥ इंद्रीओ के तूं भोग न चाहु ॥१५७॥ इंद्रीआ बिखिओ सों तुम राखो ॥ जोग जुगत का अंम्रित चाखो ॥ मन कौ जोगी द्रिड़ कर राखै ॥ इंद्री जीत करि गोबिंद भाखै ॥१५८॥ तिस कौ निहचल बुध तूं जान ॥ एही बात तूं द्रिड़ कर मांन ॥ अब आगे जो बात बखानौ ॥ गोबिंद लोकु अर जग के जानौ ॥१५९॥ दोहरा ॥ भगतौ अर संसारीओ कदे न होवै जोर ॥ इन को मारग अउर है उन को मारग अउर ॥१६०॥ चौपई ॥ हे पारथ जो जग की रात ॥ जागे भगत सुनो

रे तात ॥ अर जो जगत का दिवस कहावै ॥ भगत मेरा सोवै सुख पावै ॥१६१॥ अरथ दोनो का सुनहो पारथ ॥ तिसु समझे सुभ होवहि स्वारथ ॥ मेरा गिआन मेरी ही महिमां ॥ कोमल बचन सभ हूं पर खिमां ॥१६२॥ कीरतन भजन जो मेरा मीत ॥ तिन सौ जगत कौ नाही प्रीति ॥ तिन के भाणे इहु सभ बात ॥ सोइ रहै इह तिन की रात ॥१६३॥ जो किछु आगै महिमां कही ॥ सो सभ मेरे भगतौ लही ॥ ओहु मुझ आतम के संग जागे ॥ जगत रात्र मैं सोवन लागे ॥१६४॥ भगत रचे तिन कीरतन मांहि ॥ सदा गिआंन है निसचे ताहि ॥ पांच तीन मैं सभ जग जागै ॥ उन की प्रीती बिखिओ संग लागै ॥१६५॥ भगत जगत का नाही जोर ॥ उन की रात्र है इन के भोर ॥ अब आगै जो करौ बखांन ॥ सो उस्तति संतन की जांन ॥ तिस लछन सुन अब कहों ॥ जैसे महां समुंद्र कौ लहो ॥१६६॥ दोहरा ॥ जैसे महां समुंद्र मैं सगल नदी रल जाइ ॥ जिउ का तिउ सागर रहै ना वहि वधै घटाइ ॥१६७॥ दोहरा ॥ तैसे जोगी पुरख भी जिउ का तिउ ही रहै ॥ लाभ अलाभ बिकार तें हरख सोग न लहै ॥ दोहरा ॥ तिआगे मन की कांमनां सांत रूप होइ जाइ ॥ मन के बेग तिस नां फुरैं आतम को सुख पाइ ॥१६९॥ दोहरा ॥ पंच दूत तिस ते तजे चाह रहै नही कोइ ॥ आपा पर सभ मिट गइआ इही सांत बुध होइ ॥१७०॥ चौपई ॥ हे पारथ इह मै जो कहा ॥ ब्रहम स्थिति नाम तिह लहा ॥ जिस मौ ऐसे लछन होहि ॥ तिस को सके न माइआ मोहि ॥१७१॥ माइआ तें परे प्रापत भइआ ॥ ब्रहम निरबांन आपि होइ रहिआ ॥ मेरा जो है परम सरूप ॥ आनंद समुंद्र महां अनूप ॥१७२॥ तिस के बीच वह डूबत भइआ ॥ माइआ के करमन तें रहिआ ॥ ऐसा पुरख कहूं जो पावहु ॥ तिस के आगे सीस निवावहु ॥१७३॥ सोरठा ॥ यही गिआंन की रीत अरजन पिआरे धार तूं ॥ सांख जोग धर चीत आतम के अंग संग हो ॥१७४॥ चौपई ॥ सांख जोग जो दुतीया धिआइ ॥ सो सभ भाखा कही सुनाइ ॥ जो इस कौ सुन

करि चित धारै ॥ ब्रहम सरब के माहि बीचारै ॥१७५॥ उहु भी होइ सरब के मांहि ॥ ता ते ब्रहम उसमौ भी आहि ॥ जब वहु ब्रहम आप को माने ॥ आतम अद्वैत अकाल पहिचाने ॥ ते फिर गरभ जोन नही आवै ॥ जीवन मुकत वहु पुरख कहावै ॥१७६॥

इति श्रीमद्भगवत गीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते सांखयोगो नाम द्वितीआ अध्याय ॥२॥ २४०॥

आगे अध्याय तीसरा चलिआ ॥

अरजनोवाच ॥

चौपई ॥ अरजन भगवांन बचन सुनु बोलिआ ॥ मन संसा हरि आगै खोलिआ ॥ कहै सुनौ जनार्दन स्वांमी ॥ बिनती करौ प्रभ अंतरजामी ॥१॥ ब्रहम स्थिति इह तुम भाखी ॥ फिर प्रभ निहचल बुधी आखी ॥ बहुड़ भइआनक जुध किउ आखो ॥ मिसरत बचन प्रभ जी नां भाखो ॥२॥ इन बातन कर मोहु उपजावहु ॥ एक बात मुझ कौ समझावहु ॥ जो प्रभ कहै सांत बुध होवां ॥ बैरागी हो अभिमान सभ खोवां ॥३॥ नाही जुध करम उठि करों ॥ तेरा बचन मान हउ लड़ौ ॥ दुहूं बचनो का उतर देहि ॥ मेरी बिनती तूं सुन लेहि ॥ अरजन बचन भगवांन सुन बोले ॥ बोलन किआ वहु करे कलोले ॥४॥

श्री भगवानोबाच ॥

दोहरा ॥ अरजन प्रति गोबिंद जी ऐसे करे बखान ॥ दो प्रकार की आगिआ मुझ ते प्रिथमे जान ॥५॥ दोहरा ॥ जिन का अंताकरन सुध तिन प्रति कहिओ सांख ॥ गिआन धारै वहु रिदे मै जग ते मूंदें आंख ॥६॥ तेरा रिदा परविरति मै गिआन न समझै मीत ॥ करम जोग अधकार तुझ सो भाखौ धर चीत ॥७॥ करमौ करते भगति होइ भगति करत होइ प्रेम ॥ प्रेम कीए तब गिआन होइ इही बेद का नेम ॥८॥ दोहरा ॥ अरु जो कोई

करम छाड आखे मैं निहकरम ॥ संनिआसी मै हो रहिआ इह सभ कहना भरम ॥९॥ चौपई ॥ ऐसा पुरख संनिआस न पावै ॥ झूठ कहै मिथिआ कौ धावै ॥ कैसे झूठा कहीऐ ओह ॥ सो सुन ले जो आखो तोह ॥१०॥ जिस ने देह धरी जग माही ॥ सो निहकरम इक पल भी नाही ॥ मात गरभ अर काल परजंत ॥ करमो माहि सदा वरतंत ॥११॥ इस कें जानें बिना ही देह ॥ इंद्रीओ के संग करम करेह ॥ बोलन चलन सुणन सभ करम ॥ लेवन देवन देखन करम ॥१२॥ बैठन सोवन करम बीचारो ॥ सखोपत मै करम है सारो ॥

टीकाकारवाच ॥

खावन पीवन पहरन करम ॥ दुख सुख मै सभ करम के धरम ॥१३॥ लघ संका सभ करम बनाए ॥ इंद्रीओ के करम कहि गाए ॥ इंद्रीआ वरते करमौ माही ॥ जाने सो जो गिआनी आही ॥१४॥ ताते करम देह ते जो ॥ बप के करम असकत मत हो ॥ जैसे करम तैसी देह वरते ॥ तूं साखी हैं इस देह जड़ ते ॥ अब आगे तुझ अवर सुनावौं ॥ डिंभ जोग की जुगति बतावौ ॥ ॥१५॥

श्री भगवानोवाच ॥

चौपई ॥ डिंभ जोगी है इस परकार ॥ जैसे सिंम्रित कहै पुकार ॥ सभ इंद्री संजम कर बैठे ॥ मन मौ बिखिआ मांही पैठे ॥१६॥ चितवै बिखिआ ही को जाप ॥ भोगो भोग जु पालो आप ॥ जिस के मन मो इह बीचार ॥ सो झूठा सुन अरजन यार ॥१७॥ उस करतूत अचार सभ झूठी ॥ बुधि तिस की बिखिओ मैं मूठी ॥ महां मूढमति ऐसा होइ ॥ स्रेष्ट गति अब भाखौ सोइ ॥१८॥ स्रेष्टगति ॥ चौपई ॥ उहु मन राखै मेरे मांहि ॥ इंद्री करि सभ करम करांहि ॥ जीओ भिंन देह तें जानें ॥ देह बिनासी नित ही मांने ॥१९ ॥ तिस को लेप करम ना होइ ॥ करम जोगी है ऐसा सोइ ॥ अरजन करम जोग सुन मीत ॥ सांख न आवै तेरे चीत ॥२०॥ तेरा करम जुध है

धरम ॥ जुद्ध करो तेरा इह करम ॥ अर जो कहैं करम मैं छाडे ॥ झूठ कहैं तिस पत नही बाढे ॥२१॥ करमों बाझ देह ना रहै ॥ अब जित प्रकार कहे सो गहे ॥ सो प्रकार सुनौ रे मीत ॥ द्रिड़ कर राखो अपने चीत ॥२२॥ सोरठा ॥ मैं जग पुरख हों मीत ऐसा भाखो सुनों तुम ॥ निमित करम धर चीत करि करि अरपै मुझी को ॥२३॥ दोहरा ॥ मेरी आगिआ मान के करता करम जो कोइ ॥ करम करम कौ काट है ता वहु मुकता होइ ॥२४॥

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ आगै करमौ का बिसथार ॥ टीकाकार कहै वीचार ॥ जैसे प्रभ जी करम बताए ॥ मैं समझे अर मन मौ लाए ॥२५॥ जे को माने गिआन की बात ॥ करम न करे सुनों रे तात ॥ जे को गिआन मै संक न लिआवै ॥ ऐसा होइ तब गिआन को पावै ॥२६॥ परतीत न करै आप पर ओहि ॥ तिस अधिकार करमो का होइ ॥ ऐसे करम करे वहि प्रानी ॥ जो उचरे भगवान जी की बानी ॥२७॥ प्रिथम करम करे यिउ कहे ॥ ईसर अधीन सभी कछु अहे ॥ जो प्रभ भावै सोई करावै ॥ जिस भावै तिस आप लड़ लावै ॥ २८॥ करे करावै आपे आप ॥ मानस के कछु नाही हाथ ॥ ऐसे कहि न सके जो प्रानी ॥ देह जीउ का है अभिमानी ॥२९॥ ता वहु मन मौ ऐसे कहै ॥ ईसर अरथ करम सभ अहे ॥ करमु करो ईसर कौ अरपौ ॥ तिस के फल मै निसदिन डरपौ ॥३०॥ फल करमौ का ईसर पावौ ॥ ईसर पाइ फिर जोन न आवौ ॥ जब करम ईसर कौ सउपे ॥ सगल पाप तिस नर सो कंपे ॥३१॥ चिरंकाल गिआंन वहु पावै ॥ अकांम करम तें ब्रहम हो जावै ॥ ऐसे आखै टीकाकार ॥ प्रभ अरजन कौ कहै पुकार ॥३२॥

श्रीभगवानोवाच ॥

चौपई ॥ प्रभ जी आखै सुनहो अरजन ॥ जो को करम मुझ पर नही अरपन ॥ सकाम करम सौ तिन की प्रीति ॥ तिस का फल चाहें वहु नीत

॥३३॥ मुझ नमित जो करम न करै ॥ तिन कौ करम बंधन ही परै ॥ तिस कारन तें हे कुंती सुत ॥ खत्री देह है जुध नमित ॥३४॥ मेरी ऐसी आगिआ मांन ॥ जुध करम तूं निसचै जांन ॥ फल तिस का नां बाछो कोइ ॥ लेप करम का तुझै न होइ ॥ ३५॥ अब जो जग पुरख भगवान ॥ तिस की पूजा ऐसी जान ॥ तिस कौ जग करम कर पूजै ॥ कलिआन जगत की जग तें सूझै ॥ तिस की बात कहौ तुझ माहि ॥ हे अरजन अब सुन तूं ताहि ॥३६॥ मंगल छंद ॥ सुन पारथ मै जो कहा ॥ जब ब्रहमा उपजत भइआ ॥ तब परजा तिस सौ भई ॥ बानी बेद सभ तिस कही ॥३७॥ तब जग भी तिन कहे ॥ जो करे सो सुख लहे ॥ करि अरपे ईसर मांहि ॥ सो गिआन ही को पांहि ॥३८॥ जग प्रगट ब्रहमा कीए ॥ सभ देवतिओ मन लीए ॥ समग्री जग भी पुन करी ॥ तिस रीत इहु जग धरी ॥३९॥ तब कहिओ लोकहु माहि ॥ जग करो बहु सुख पाहि ॥ जग साथ हरि को जपो ॥ तिस माहि देवता थपो ॥४०॥ जो बांछा तुमरी होइ ॥ जग पुरख देवै सोइ ॥ जबब्रहमा ऐसे कहिओ ॥ जग संसार करनै भइओ॥४१॥ संसार तब जग करै ॥ अर पूजा सुर चित धरै ॥ प्रसंन जब सुर भए ॥ मानुखो कौ वहि कहे ॥४२॥ नर करैं सुर कलिआन ॥ सुर नरौ देवै दान ॥ जो देव बांछा करैं ॥ मानुख तिस पर धरैं ॥४३॥ जो मानुसों की चाहि ॥ सो देत हैं सुर ताहि ॥ जो करमवान मानुख ॥ तिस करम ही की भुख ॥४४॥ देव पूजा बाझ जो खांहि ॥ सो चोर देवौ आंहि ॥ जब पुरख पूजा करै ॥ फिर खांन मै चित धरै ॥४५॥ भगवांन भोग लगाइ ॥ तब बहुड़ वहु कछु खाइ ॥ सो पाप तें होइ मुकता ॥ तिस भई ऐसी जुगता ॥४६॥

टीकाकारवाच ॥

मंगल छंद ॥ भगवांन भोग का अरथ ॥ कहे गिआनवांन समरथ ॥ इहु कहे खांवन मांहि ॥ मै कदे खावौ नाहि ॥४७॥ भगवांन इक अद्वीत ॥ तिस बिन दूजा नांहि मीत ॥ सभ वसत है भगवांन ॥ एह सगल जो द्रिसटांन ॥४८॥

तब कउन खावै मीत ॥ इहु बात तूं धर चीत ॥ बिन बूझे जो किछ खाइ ॥ सो पाप ही अति पाइ ॥४९॥ कलिआन जित प्रकार ॥ संसार की सुन यार ॥ अब कहो हौ सो ताहि ॥ तूं समझ ले मन माहि ॥५०॥

श्रीभगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ उतपत सगले प्रानीओ अंन खांन ते होइ ॥ प्रानी अंन उतपत करे ओत पोत है सोइ ॥५१॥ अंनि उपजे मेघ तें मेघ पुरख ते होइ ॥ जग पुरख जब पूजीए बरखा करे तब सोइ ॥५२॥ जग उतपत है करम तें करम उतपत है बेद ॥ बेद उतपत है ब्रहम ते सभी ब्रहम निरभेद ॥५३॥ जिस ब्रहम तें सगल भए सभ जानौ एक ब्रहम ॥ मानुख का जो पूत है सो भी मानुख करम ॥५४॥ ताते ब्रहम बीचार के निसदिन जग करो ॥ जो देखो सो ब्रहम है ऐसे मन मै धरो ॥५५॥ चौपई ॥ जैसे जग करि ब्रहम कौ पूजैं ॥ कलिआंन जगत की तिस ते सूझैं ॥ पुरानन मै कहिहै यह धरम ॥ करै न चाहै सो सत करम ॥५६॥ पुरख नमित जो जग न करे ॥ इंद्रीओ को पूजन मन मै धरै ॥ तिस का करना दुख तूं जान ॥ आतम हतिआरा पहिचांन ॥५७॥ भोगो कारन बकरे मारे ॥ बुध अपनी कौ आपे जारे ॥ मारन जोग कांमनां आही ॥ बकरे मार मार फल चाही ॥५८॥ सो है पापी महां अपराधी ॥ निसचै पापौ ही का साधी ॥ जिस लगे है मेरी प्रीत ॥ अघाइ रहा है तिस का चीत ॥५९॥ तिस कौ कारन कछू नां रहिआ ॥ ग्रिहन तिआग सम उस को भइआ ॥ संसार भरम को देखै नांहि ॥ एक ब्रहम ही इस्थित आंहि ॥६०॥ ऐसा पुरख करे सो करे ॥ आप तरे अवरां ले तरै ॥ अब आगै करमौ की बात ॥ बहुड़ बखानौ सुनहो तात ॥६१॥ करम कथा निरूपन ॥ चौपई ॥ सत करम अर तिन के धरम ॥ फल तिस के गुन जा मैं करम ॥ फल अरपै मुझ ईसर माहि ॥ सो तो मुझ ईसर कौ पाहि ॥६२॥ अर जनक गिआंनी आदि जो राजा ॥ सुभ परकार गिआन जिन साजा ॥ सो भी देह करम सभ करे ॥ लोग देख तिन के मग परें

॥६३॥ लोक निमित करम तिन कीए ॥ हिरदै गिआंन धार के जीए ॥ अर जो करम न करते ओह ॥ देखे लोक जब उन के जोहु ॥६४॥ अर उह कहहैं आपस मांहि ॥ जिन को गिआन मैं निहचा नांहि ॥ देखै जब उन राजा ओर ॥ बिनां गिआंन सभ देवै छोर ॥६५॥ गिआन न गहैं करम सभ तिआगैं ॥ तम गुन मैं चित निहचे लागैं ॥ अरु सभ कहै आपस मांहि ॥ करमन कौ राजा न करांहि ॥६६॥ हम भी करम कैसे अब करे ॥ करम संसे मै डर डर मरें ॥ इस कारन ते स्रेष्ट जो आंही ॥ देह करम मैं नित रहाई ॥ अब आगे तेरा दुख दहों ॥ अपनां अउतार आप तुझ कहों ॥६७॥ दोहरा ॥ हे अरजन तुझ आख हों अपनी सोभा मीत ॥ बेद करम सभ मै करौ जिस कारन धर चीत ॥६८॥ दोहरा ॥ स्वर्ग पैआल भू लोक मै मुझ निमित को नांहि ॥ करम करौ तब पुन नही तिआगो पाप न पांहि ॥६९॥ दोहरा ॥ जगत लोक मुझ जान है ईसर परम अपार ॥ जो मै करौ सो सभ करे भाखें करे अउतार ॥७०॥ दोहरा ॥ जो कुछु मुझ सो होत है जग भी करे है सो ॥ तिआगौ सभ अर नां करौ अउर करे नही को ॥७१॥ दोहरा ॥ गिआन न आवै किसी कौ सभी पाप को पांहि ॥ लोको के उपकार कौ मैं सभ करम करांहि ॥७२॥ चौपई ॥ जो अरजन मै करम करौ ॥ बेद बात मैं चित न धरौ ॥ मुझ कौ देख छोड़ है लोक ॥ सभ जग बरन संकर तब होग ॥७३॥ पसू जैसे मानुख तब होवै ॥ गिआन करम यह दोनो खोवैं ॥ लोक दुखदाइक तब मै होइआ ॥ इत निमित करम मै गोइआ ॥७४॥ बिबेकी पुरख जो उतम अहै ॥ तिन के संग लोक बहु रहैं ॥ सो लोक दिखलावन करम सभ करें ॥ करमन मैं वहु चित न धरें ॥७५॥ जो उन की संगत मै आवै ॥ प्रिथमे तिन को गिआन द्रिड़ावै । जे करि गिआन उस रिदै न आवै ॥ तिस कौ करम उपदेस बतावै ॥७६॥ अपनी बुध सो तिन तिपति करै ॥ करम बात साची लै धरे ॥ देहि इंद्री ते करम सभ होइ ॥ गुन प्रकिरत नाना है सोइ ॥७७॥ जैसे गुन होइ बप के

मांहि ॥ सुभाव प्रकिरत तें करम करांहि ॥ हंकार मोह जो मूड़ता आही ॥ सोई कहै मैं करम करांही ॥७८॥ पारथ गिआन ईसर यिउ कहे ॥ गुन संजुगति इंद्री देह अहे ॥ गुन ही वरतें गुन ही मांहि ॥ इंद्री महि इंद्री वरताहि ॥७९॥ आतम इन मै साछी रूप ॥ अक्रै निरमल गिआंन सरूप ॥ आखे करम सुभावक होवै ॥ मूड़ पुरख संसे मै रोवै ॥८०॥ बिबेकी उदास देह तें रहै ॥ जीवन मुकत लछन इह अहै ॥ प्रकिरति माइआ ते सभ कछु होइ ॥ तिस ते भिंन गिआनी सोइ ॥८१॥ ममता देह के साथ न करे ॥ आतम मांहि चित कौ धरे ॥ आतम संगि जब मन कौ लावै ॥ बिखिआ ते मन वरज रखावै ॥८२॥ जब मन राखे आतम माहि ॥ मन बित्रेक कछु होवै नांहि ॥ सहजे ही सभ करम छुट जावै ॥ इस परकार वहु मुझे धिआवै ॥८३॥ तैसे अरजन तूं भी मांन ॥ मन का चेता मुझ मै आंन ॥ देह करम सौ जुध करि मीत ॥ फल करमो का ना धर चीत ॥८४॥ लाभ अलाभ एक सम जांन ॥ राग द्वैख एक सामांन ॥ मन मै क्रोध न धारै कोइ ॥ सगल बिखिआ तें रहित तूं होइ ॥८५॥ ऐसी भांति जुध सौ लाग ॥ सरधा फल की बेग तिआग ॥ येह मेरा उपदेस जो मांनें ॥ मन का चेता मुझ मैं आनें ॥८६॥ जो इस मेरे मारग चलै ॥ लेप करम तिस नर सौ टलै ॥ अर जो मेरी मत नहीं मानें ॥ मेरी मत की निंदा ठानें ॥८७॥ ते अगिआंनी मूड़ मतहीन ॥ तिन की बात नास तूं चीन ॥ चित नास तिस नर का होइ ॥ बुध नास जानो तुम सोइ ॥८८॥ दोहरा ॥ हे कुरनंदन अउर सुन प्रकिरति गुनौ की देहि ॥ जैसे प्रकिरति सुभाव है तैसे करम करेहि ॥८९॥ दोहरा ॥ अपनी अपनी प्रकिरति मै देह करम सभु करै ॥ बिबेकी ऐसे समझ करि उस्तति निंद न धरै ॥९०॥ दोहरा ॥ किस पै ऐसा ना कहै सुभ असुभ तुध कीओ ॥ बुरा भला सभ तिआग कै गिआन अंम्रित रस पीओ ॥९१॥ दोहरा ॥ करन ना करना आखि तूं सहज माहि छक जाहि ॥ साखी भूत तूं होइ कै जीवन मुकति कौ पाइ ॥९२॥ चौपई ॥ हे अरजन अब जो

तुझ करना ॥ मुझ ते सुन करि चित मैं धरनां ॥ इंद्री अरथ न वरतौ मीत ॥ इंद्री अरथ दोख धर चीत ॥९३॥ इंद्री गुन तूं उतपति जान ॥ तिन का तिआग सत करि मान ॥ मन का चेता मुझ मै राख ॥ अपनी कलिआन इसी मो लाख ॥९४॥ मन इंद्री के गुन सभ खोइ ॥ मेरी बात सो निरमल होइ ॥ जब इतनी भगवान बखानी ॥ अरजन सभ मन अपनें मानी ॥९५॥ प्रसन करै भगवान पै पारथ ॥ हे माधव तुम कही जथारथ ॥ एक प्रसन अउर मैं कहौ ॥ तिस का उतर तुम सौ लहौ ॥९६॥

अरजनोवाच ॥

चौपई ॥ पापी नर जो जग मैं आहि ॥ सो भी पाप बुरा कहि गाहि ॥ अर जो पुंनी वहु भी कहै ॥ पाप बुरा वहु मन मै गहै ॥९७॥ जानै बुरा अरु नित उहु करै ॥ बुरी बात मै किउ चित धरै ॥ ऐसा कउन जो पाप कराइ ॥ समझी बात कौ बहुड़ भुलाइ ॥ इस प्रसन का उतर पावौ ॥ उतर पाइ मन संक मिटावौ ॥९८॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ बासदेव ऐसे कहे सुन पारथ परधान ॥ उतपति काम क्रोध की रज गुन तें तूं जान ॥९९। दोहरा ॥ सोई पाप कराव हैं जाननिहारै मीत ॥ दोनो सत्रु हैं अति बली जिन भरमाइओ चीत ॥१००॥ दोहरा ॥ अहार बडा तिन दुसट का कबहूं तोख न पांहि ॥ पाप रूप है काम क्रोध ओही पाप करांहि ॥१०१॥ जब अरजन ऐसे सुनिओ प्रसन करे तब होर ॥ उतपति दोनो सत्र की सोई बतावो मोर ॥१०२॥ दोहरा ॥ किस ते उपजे सत्र दो अर बडे भांत किस होइ ॥ करतूत इना की कउन है अरु आतम इन है कोइ ॥१०३॥ दोहरा ॥ भली भांति विसथार करि मुझे बतावो देव ॥ इह जो दोनो दुसट हैं तिन का पावो भेव ॥१०४॥ सोरठा ॥ अरजन प्रसन भगवान जब सुनिओ बहु प्रीत सो ॥ आखे हरि प्रधांन हे पारथ सुन समझ ले ॥१०५ ॥ चौपई ॥ अरजन इह सूखम हैं सत्र ॥ देह इंद्रीआ

के ए हैं मित्र ॥ निवास इन का है बप के मांहि ॥ देह बिखे अति सूछम आंहि ॥१०६॥ देह पुरखो को मोह उपजावैं ॥ तिहं के संग मोहु ले जावैं ॥ अब इन की उतपति बखानौ ॥ जिस प्रकार कहौ सो जानौ ॥१०७॥ भले खाए सूंघे अरु पहरे ॥ मन के मांहि हरख आइ लहरे ॥ हरख तैं कांम की उतपति होइ ॥ काम तें उतपति क्रोध की होइ ॥१०८॥ क्रोध की उतपति इस बिध होइ ॥ आखे मुझ समांन ना कोइ ॥ यही अहंकार अभिमान कहावै ॥ अहंकार कांम तें नर दुख पावै ॥१०९॥ यहि दो सत्र महां बलवांन ॥ इन के करम पाप तूं जांन ॥ अब इन का फल सुनहो पारथ ॥ प्रिथम कांम फल कहों यथारथ ॥११०॥ कांम फल ॥ चौपई ॥ अपनी तीअ सौ जो संग करै ॥ संग उपरांत सोग मै परै ॥ सोग चिंता मैं मगन हो जावै ॥ मन को अंध कांम ते पावै ॥१११॥ जो पर इस्त्री साथ संग करै ॥ राज द्वार खबर जाइ चड़े ॥ बांधिआ मारिआ लूटिआ जावै ॥ इस लोक मै बहु दुख पावै ॥ परलोक बिखै जम सासना देइ ॥ एते फल कांमी नर लेइ ॥११२॥ क्रोध फल ॥ चौपई ॥ अभिमान साथ जे किसै दुखावै ॥ पुन आइध किस माहि चलावै ॥ तब उहु जावै राज द्वार ॥ किस के जोर की करै पुकार ॥११३॥ तब राजा तिस डांड लगावै ॥ परलोक बिखै जम सासनां पावै ॥ यहि सभ फल क्रोध के कहे ॥ सुख दुख कांम क्रोध तें लहे ॥११४॥ प्रांनी कौ यहि नित ही मोहैं ॥ पाप रूप अर नीच यहि दो हैं ॥ हे अरजन यहि दोनो वैरी ॥ जीउ मांहि सदा यहि खैरी ॥११५॥ यही कहे इह आपस मांहि ॥ कब इह सिंम्रिन तें भूल जांहि ॥ तब हम चोट चलावै इन पर ॥ जबै रहत सिंम्रिन ते होइ नर ॥११६॥ रज गुन ते उतपति है इन की ॥ मोह बढावन ब्रित है तिन की ॥ दोऊ उपद्रौ नरौ के मांहि ॥ तिन के संग नर अति दुख पांहि ॥११७।

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ कांम क्रोध इंद्रीओ का गिआंन ॥ जो इन रमे असुर तिन जांन ॥ इस का अरथ इंद्री सभ कहै ॥ वां का अरथ मत चित चहै ॥११८॥ इंद्रीओ मै रमै सोई है असुर ॥ अर सभ रहै जग मै पसर ॥ को विरला सुर द्रिसटी आवै ॥ आतम मांहि रमन को पावै ॥११९॥ सुर का अरथ बेदो इउ कहा ॥ सोई नाम गोबिंद को लहा ॥ दुरमति असुर सभ को कह गावै ॥ सुर सोई जो राम रमावै ॥१२०॥ तांते ऐसे वरतो मीत ॥ देहि बात राखो नां चीत ॥

श्री भगवानोवाच ॥

देह अनित तिस बात अनित ॥ सभ साधौ की एकै मत ॥१२१॥ इउ मुझ छादिआ जानन गिआन ॥ सो दिसटांत अब कहौ बखान ॥ दिसटांत ॥ धूम करि जैसे अगनि छप जावै ॥ असुध आरसी मै द्रिसटि न आवै ॥१२२॥ छादिआ गरभ जाली के मांहि ॥ तैसे गिआन मुझ छादिआ तांहि ॥ इह दो सत्र गिआन मुझ छादे । इंद्री मन मै सूखम गाडे ॥१२३॥ कांम अभर है रजता नांहि ॥ पाप रूप रहै मन मांहि ॥ मन बुधि इंद्रीओ मांहि यहि बसै ॥ जीओ को मोहैं अपनौ रसै ॥१२४॥ तिस कारन ते स्रेष्ट पारथ ॥ इंद्रीओ के सभ तिआग स्वारथ ॥ इंद्री अर मन एक है मीत ॥ एकोई दोवे धर चीत ॥१२५॥ मन बस कीए दोनो बस होइ ॥ मन बस करै पुरख है सोइ ॥ जे को मन की दउड़ न तिआगै ॥ सो मतमंद महां दुरभागै ॥ अब आगै देह जड़ की बात ॥ जड़ता तिसकी सुनहो तात ॥१२६॥ दोहरा ॥ देहि अनित निरचेतता जड़ जानो तुम मीत ॥ इस ते स्रेष्ट इंद्रीआ चईतन तिन की रीत ॥१२७॥ दोहरा ॥ देह ते स्रेष्ट इंद्रीआ अर मन उतम होइ ॥ चईतन मन कर इंद्रीआ यहि जानै सभ कोइ ॥१२८॥ दोहरा ॥ जो मन होवै अउर ठउर देखै सुनै न कोइ ॥ मन इस कारन स्रेष्ट है मन तें परे बुध होइ ॥१२९॥ दोहरा ॥ उतम बुधि इस कारने जानन है जिस धरम ॥ सुन कर बात मन मौ धरे फेर कहे तिस मरम ॥१३०॥ दोहरा ॥ बुध आखे

मै इह सुना अर देखी यह बात ॥ मन कौ ऐसी सकति नांहि चितवन तिस की गात ॥ १३१॥ दोहरा ॥ इस कारन बुध स्रेष्ट है बुध परे भगवांन ॥ जिन ते मन बुध इंद्रीआ सभी प्रकासे जान ॥१३२॥ दोहरा ॥ हे पारथ सो आतमां बुध परे धर चीत ॥ सो तो सभ के रिदे मैं तासों जुड़ तूं मीत ॥१३३॥ दोहरा ॥ जब तैं आतम जानिआं अपने हिरदे माहि ॥ तब समाध तुझ लगै है तिस ते बहु सुख पांहि ॥१३४॥ दोहरा ॥ दुखदाइक जो कांम है तिस कौ काटो मीत ॥ ऐसा गिआंन जो मै कहा सो तुम राखो चीत ॥१३५॥ सोरठा ॥ हे अरजन यहि गिआंन अब जो तुझ कौ मैं कहा ॥ ऐसे निसचै जांन जैसे अब फुन कहत हौ ॥१३६॥

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ तीसरा धिआइ गीता का भाई ॥ सो रिखीकेस अरजन प्रति गाई ॥ जोग सास्त्र इस नाम उचारे ॥ जो धारै सो आप कौ तारै ॥१३७॥ जैसे तत है बेदो माहि ॥ रिखीकेस कहिओ है ताहि ॥ जो को सुने अर मन मौ धारै ॥ पंच तीन कौ तिससो जारै ॥१३८॥ आतम जाने सभ के माहि ॥ वहु भी तो आतम ही आंहि ॥ जब ऐसी तिन मन मौ धरी ॥ जीवन मुकति तिस नर ने करी ॥ जनम मरन फिर तिसै न होइ ॥ अभिनासी पद मै प्रापत होइ ॥१३९॥

इति श्रीमद्भगवत गीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते करम संनिआस योगोनाम त्रितीओऽध्याय ॥ ३॥ ३७९॥

आगे चौथा अध्याय चलिआ ॥

श्री भगवानोवाच ॥

सोरठा ॥ अबिनासी यहि गिआंन अरजन तुझ कौ मै कहौ ॥ परा पुरातन जान   राजरिख वरते तिसी मो ॥१॥ कवित ॥ प्रिथमे मै सूरज कौ उपदेस यही गिआन कीआ तिस कौ वहु धार जीवन मुकत होइ जीउ है ॥

कहिओ सूरज पूत मांहि यही गिआंन अटल रूप मन सुत सूर तें इखवाक बहुड़ लीओ है ॥ तिस के प्रसादि तें राज लेप लागे नांहि परम तत अरजन तुझ यहि गिआन दीओ है ॥ बितीत भए चिरंकाल भाखा मै यहि गिआंन जगत के उधारन मै बहुड़ ईहां कहिओ है ॥२॥ दोहरा ॥ हे अरजन इस कारने ऐसा उत्तम गिआंन ॥ जो तूं मेरा प्रिअ भगत तो तुझ पै कीआ बखांन ॥३॥

अरजनोवाच ॥

सोरठा ॥ अरजन सुन करि बात पुंन भाखी भगवान पै ॥ रवि की कहो जो बात सो तुम सो आगै भइआ ॥४॥ दोहरा ॥ हे माधव तुम अब भए बासदेव ग्रिहि मांहि ॥ आगे तुमतें सूर था कैसे भाखिओ ताहि ॥५॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ तब भगवांन यहि बोलिआ सुन अरजन कुरनंद ॥ मेरे तेरे बहु जनम बीते हैं परचंड ॥६॥ दोहरा ॥ मैं जानौ सभ जनम कौ तूं नां जांनै मीत ॥ ईसर अज अबिनास हौ यही धारो तुम चीत ॥७॥ दोहरा ॥ अपनी माइआ के आसरे नित मैं जनम धरौ ॥ जब अधरम धरम छाद है हउ नास अधरम करौ ॥८॥ कवित ॥ साधो के सुख निमित देह धरौ जगत मांहि पाप दुख जगत के खंडन करत हौ ॥ ऐसी भांत जुगो जुग अउतार लीए जगत मांहि जैसे मेरे दिब करम तैसे ही कहत हौ ॥ अजनम अर अबरन हौ अक्रै अउ अकरम हौ ततो की देह ते भिंन मै रहत हौ ॥ जैसे जीउ करम साथ फसिआ रहै जगत मांहि तैसे उह करम ते सदा ही बचत हौ ॥९॥ चौपई ॥ जगत लोक है करमो बस ॥ करम गए सभ मुझ ते नस ॥ मै अजनम अकाल सरूप ॥ भीतर बाहर मेरो रूप ॥१०॥ बिआप रहिआ मै जगत के मांहि ॥ जहां तें चाहों तहां प्रगटांहि ॥ जनम दिब अपनों तुझ कहिओ ॥ सो तै सुन कर मन मो लहिओ ॥११॥ करम दिब अब तोहि बतावो ॥ अक्रै रूप मै तुझै सुनावों ॥ करम करत मुझ कसट न

लागै ॥ लेप करम का मुझ ते भागै ॥१२॥ जे करि किसी देह को मारौ ॥ सो बडभागी तिस कौ तारौ ॥ वहु तो मेरा रूप होइ जाइ ॥ दिब करम ए कहे सुनाइ ॥१३॥ जो इस भांत जन मुझ कों जानै ॥ देह छाड मुझ पद मैं ठानें ॥ बहुड़ माता के गरभ न आवै ॥ मुकत होइ मुझ संग समावै ॥१४॥ ऐसा फल मुझ जांनन जांन ॥ भगत प्रीत अब कहौ बखांन ॥ जिस की प्रीत मेरे संग लागी ॥ तिस के लछन सुन बडभागी ॥१५॥ दोहरा ॥ लछन तिन के पुन सुनों मोह नही उस मांहि ॥ क्रोध करे नही किसी पर निरभै बसै जग मांहि ॥१६॥ दोहरा ॥ मन राखे मेरे बिखे अर बाछे मेरा गिआंन ॥ गिआंन भान प्रकास तें मुझ को मिलिआ जांन ॥१७॥ छंद ॥ अरजन प्रति गोपाल बखांनै हे अरजन तुम चित मै धारो ॥ जिहं प्रकार भजन मो करता तैसे मैं उस जाप उचारों ॥ तिस का भजन पहिले मै करता पाछे मुझ ओहु सिम्रिनहारो ॥ पहिले हउ भगतौ कौ सिमरौ पीछे करत उहु भजन हमारो ॥१८॥ दोहरा ॥ जो कछु जग मैं हउ करों सभी मानुख मुझ देख ॥ तैसे सभ ही जगतमैं वरते मुझ कौ देख ॥१९॥ सोरठा ॥ अब मुझ कौ जो छाड अवर देवता मानते ॥ मन तन बरत हितकार पुत्र आदि फल मांगते ॥२०॥ चौपई ॥ सो तो देव अलप मै तोखै ॥ पूजारी कौ फल सों पोखै ॥ इस कारन सभ देवता पूजैं ॥ जिन पूजे ते फल को सूझै ॥२१॥ अब आगै तुझ अवर सुनावौ ॥ चार बरन की बात बतावौ ॥ ब्रहमन खत्री सूद्र बंस ॥ यहि चारो है मेरी अंस ॥२२॥ इन का उपजन मुझ तें जान ॥ अधिकार करम तिहं निआरे मांन ॥ चार बरन यहि मुझ ही बनाए ॥ तिन के करम भिंन भिंन उपजाए ॥२३॥ अबिनासी करता मुझ कौ जान ॥ दिसटांत कहौ अब सुन करि मान ॥ जैसे संसारी कछु करता ॥ बांछा फल की मन मौ धरता ॥२४॥ सकाम करम लेप तिन लागे ॥ करम फल तिन के तब जागे ॥ अर जो मैं कुछ करम करौ हौ ॥ गिआन अगन करि तिसे जरौ हौ ॥२५॥ तिसु कारन मुझ लेप न लागै ॥

ममता मोह सभ मुझ सो भागै ॥ किसी संग मै मोह न लावौ ॥ निरमल सदा आप कौ पावौ ॥२६॥ कोई मनोरथ बाछौ नाहि ॥ बालक रीत जग महि वरताहि ॥ जैसे बालक खेलन कारन ॥ कुंचर अस माटी कौ धारन ॥२७॥ धारै खेलै तिन के साथ ॥ बिसरे जब खेलन की गाथ ॥ फोड़ डारे तब सोग न करै ॥ हरख न करै खेल जब धरै ॥२८॥ जो उपजावै तउ भी खेलै ॥ फोड़े तब माटी संग मेलै ॥ तैसे मैं बालक की निआई ॥ अनिक भांत संसार बनांई ॥२९॥ खेलौ रचि संसार अपार ॥ जब चाहौ तब करों संखार ॥ उसार ढाहि मोहि लेप न लागै ॥ मुझ कौ चाहै तिन बडभागै ॥ वहु निरलेप करमौ ते होवै ॥ करमौ के बंधन सभ खोवै ॥३०॥

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ जो कछु बासदेव जी कहिओ ॥ तिस का अरथ मैं मन मै लहिओ ॥ एक ब्रहम जिस ने सभ धारा ॥ बालक रीत तिन खेल पसारा ॥३१॥ अनिक देहि तिस आप बनाए ॥ मध सभहूं के आप वरताए ॥ वरतै सभ के मध वहु आप ॥ सभ वहु एको रहिआ बिआप ॥३२॥ सभी कहा वहु एको ही है ॥ जगत कहां सभ ब्रहम सही है ॥ निरगुन रूप जब सरगुन होइ ॥ तब यिह बाजी राचै सोइ ॥३३॥ यिही बात निसचे सच जानो ॥ सुतहि सिध ब्रहम इकु मानों ॥ ताते जो कछु द्रिसटी आहि ॥ एक ब्रहम दूजा को नाहि ॥३४॥ अब आगै श्री क्रिसन अकाल ॥ कहे सुनो तुम हे पंड लाल ॥ करम बात बहुड़ तुझ कहो ॥ भले पुरख करमो ते लहो ॥३५॥ दोहरा ॥ अरजन तूं यह समझ करि देहि करम नित धार ॥ जिन की इछिआ मुकति की तिन सत करम बीचार ॥३६॥ दोहरा ॥ सत करम के कीए ते निरमल मन होइ मीत ॥ मन निरमल जब होइगा गिआन आवै तब चीत ॥३७॥ सोरठा ॥ जब उपजै तुझ गिआन मुकत रूप तू होइगा ॥ पारथ यिह तूं मान सत करम तूं नित कर ॥३८॥ जे को पुरख प्रधान प्रिथम करम तिन कीए है ॥ जब तिन कीओ गिआन गए

करम तिस रिदे ते ॥३९॥ दोहरा ॥ करम अकरम के समझने स्रुत भी समरथ नांहि ॥ करम अकरम की वारता भाखों तेरे मांहि ॥४०॥ दोहरा ॥ प्रिथम करम तुझ कौ कहौ जा ते दुख सभ जाइ ॥ संसार बंधन तें मुकत होइ जो समझै सो पाइ ॥४१॥ छंद ॥ करम अकरम बिकरम त्रै सो भिंन भिंन आखों ॥ जैसे गिआनी कहे हैं तैसे मैं तुझ पै भाखों ॥ सासत्र आगिआ पाइ बरन अधिकार जो आही ॥ अपने ही अधिकार मांहि जो करम कमाही ॥ सोई करम कहावते इही धरो मन सत ॥ आगे बात अकरम की तिन का भाखो तत ॥४२॥ दोहरा ॥ जो जानै मै सत करमु करता हों निस भोर ॥ सासत्र ते वहि भूल करि करता है कछु और ॥४३॥ दोहरा ॥ सोई अकरम कहावते जिह सासत्र आगिआ नाहि ॥ आगे बात बिकरम की भाख सुनावौ ताहि ॥४४॥ दोहरा ॥ जो अपने हंकार तें सासत्र आगिआ तिआग ॥ बरन करम तें रहत है सो बिकरम संग लाग ॥४५॥ दोहरा ॥ तीनो मै वहु स्रेष्ट है जो सासत्र आगिआ पाइ ॥ करम करत है देह कर मुकत सो प्रीत बढाइ ॥४६॥ सोरठा ॥ अबे गिआनी की बात अरजन तूं यिउ चित धर ॥ तिन ब्रहम जांनिओ सात मन के ब्रित तिन सो गए ॥४७॥ दोहरा ॥ रहे न मन मौ कामनां आरंभ करे को नांहि ॥ गिआंन अगन चितवन जलै अरंभ ब्रित सभ दांहि ॥४८॥ दोहरा ॥ गिआनीसर जो पुरख है पंडित कहीऐ सोइ ॥ तिस के लछन अब कहौ जैसा गिआनी होइ ॥४९॥ मंगल छंद ॥ यिउ गिआंनवांन वरतंत ॥ तिस ब्रहम का है मंत ॥ संसार करम तिआग ॥ रहिआ गिआंन ही सौ पाग ॥५०॥ गिआंन अंम्रित नामां जोइ ॥ पीउ अघाइ रहिआ सोइ ॥ को आस मन मों नांहि ॥ मुझ बाझ अवर न चाहि ॥५१॥ बीआ आसरा नां करें ॥ मुझ आसरा मन धरे ॥ ऐसा जो वरते कोइ ॥ तिस लेप नां कुछु होइ ॥५२॥ बांछा न राखै चित ॥ निरबांछ है वहि नित ॥ संसार बिखिआं मांहि ॥ मन वरज राखिओ ताहि ॥५३॥ संचा न करता कोइ ॥ बप मांझ वरते

सोइ ॥ तिस लेप करम न होइ ॥ मन बरत दीने खोइ ॥५४॥ जब छादन भोजन होइ ॥ सो किरत करता सोइ ॥ तिस लेप करम न होइ ॥ मन बरत दीने खोइ ॥५५॥ अजतन जो किछु आइ ॥ तिस मांहि वहु वरतांइ ॥ संतुसट तिस मै होइ ॥ हरख सोग करै न कोइ ॥५६॥ जो भली वसत आ मिलै ॥ तिस हरख नाही तिलै ॥ अर नीच वसतू पाइ ॥ मन सोग नां उपजाइ ॥५७॥ ऐसा निरबंधन रहै ॥ भाउ बीआ मन सौ दहै ॥ वहु मुकत जानो सत ॥ चिद गिआंन की जिन मत ॥५८॥ वहु गिआंन जग नित करै ॥ सभ पाप तिस के जरै ॥ जग करै पूजै मोहि ॥ यहि समझिआ है सोइ ॥५९॥ दोहरा ॥ ऐसा करम वहु करत है ब्रहम समाध लगाइ ॥ उस्तत ऐसे पुरख की पुन अब कहो सुनाइ ॥६०॥ दोहरा ॥ होम करे सो भी गोबिंद अगन इस्थान गोबिंद ॥ खीर आदि जो अरपई सो भी सभ गोबिंद ॥६१॥ दोहरा ॥ रूख जल सभ ब्रहम है द्रिसट अद्रिसट सभ ब्रहम ॥ जो दीसे सो ब्रहम है ब्रहम समाध एह मरम ॥६२॥ ऐसा गिआनी संत जो सो है मेरा रूप ॥ इत प्रकार जिन समझिआ सो है ब्रहम सरूप ॥६३॥ दोहरा ॥ लागे जिसे समाधु यहि सो ब्रहम जानिओ मीत ॥ जो दीसै सो ब्रहम है यहि धारो तुम चीत ॥६४॥ सोरठा ॥ सुन पारथ कुरनंद होर बिधि जो पूजते ॥ जिस जानै आनंद निसचे भाखो मीत रे ॥६५॥ चौपई ॥ होर जग करि जैसे पूजै ॥ सो जोगीसर भगत मो सूझै ॥ ऐसी करे उपासना मेरी ॥ मुझ धिआन मो चित चल हेरी ॥६६॥ अनिक संजम करि पूजा करते ॥ संजम अगन मै इंद्रीआं जरते ॥ होमे इंद्रीआ संजम मांहि ॥ नेम बरत सौ पूज कराहि ॥६७॥ एक प्रान अपान अर इंद्री धरम ॥ होमे आतमां अगनि मैं करम ॥ प्राणायाम करि मुझ कौ जजै ॥ मेरे धिआन मै निस दिन रजै ॥६८॥ एक मुझ कौ द्रब जग करि पूजै ॥ द्रब जग अरथ ऐसे बिधि सूझै ॥ देह धारीओ पर दइआ वहि करैं ॥ भोजन बसत्र तिन आगे धरैं ॥६९॥ मीठा बोलैं पख्खा कर फेरैं ॥ इत प्रकार मुझ कौ वहु हेरै ॥ एक पूजा

मुझ पाठ कर करते ॥ बेद रुचा असतोत्र पड़ते ॥७०॥ सहंस्र सीरखा अउर पुरान ॥ अउर सकल मो करे बखांन ॥ ऐसे पूजे मेरे तांईं ॥ जो चितवें सोई फल पाईं ॥ ७१॥ पूजैं एक मुझ अउर प्रकार ॥ मेरे नाम सौ करे पिआर ॥ राम किसन नाराइण आखैं ॥ मेरे बिसनपद मुख सौ भाखै ॥७२॥ गावै सदा मगन हो जावै ॥ जो चाहै सोई कछु पावै ॥ एक मुझ पूजा गिआन करि जानै ॥ कथा भागवत नित बखानै ॥७३॥ गोसट करें साधो के साथ ॥ भगवत बचन की आखै गाथ ॥ जो वहु कहूं साधना पावै ॥ मन मो पड़ पड़ मगन हो जावै ॥७४॥ गिआंन जग है इस का नांम ॥ गिआन करैं पावै आराम ॥ एक मो पूजै मन के माहि ॥ भाखै राम सभी कछु आंहि ॥७५॥ पूजा एक बरतो सो करैं ॥ तिन के पाप बरतौ मै टरैं ॥ एक अपान प्रान मै होवै ॥ दोनो जोड़ पाप मल धोवै ॥७६॥ सभ प्रकार के तू जग जांन ॥ मेरे निमित सभ जग करांन ॥ जानो सभ जगों को आप ॥ तिह जगों का कहौ प्रताप ॥७७॥ यहि सभ जग मुकति के दाते ॥ अकांम जग करि मुझ समाते ॥ जो प्रानी करते जग भाई ॥ जनमो के पापो को दाही ॥७८॥ जब लग जीवै जग के माहि ॥ तिन का जीवन अंम्रित आहि ॥ मेरी भगति निमित वहु जीवै ॥ मुझ पूजा करि अंम्रित पीवै ॥ मुझ इस्थान मै प्रापत होवै ॥ ब्रहम जान सभ अपदा खोवै ॥७९॥ दोहरा ॥ जो पूजा मुझ ना करे तिन को किआ सुख होइ ॥ इत लोक दुख पाइ कै आगे चले पति खोइ ॥८०॥ सोरठा ॥ बहु प्रकार के जग जैसे पारथ मैं कहे ॥ ब्रहमा कहिओ इहु तब आदि कलप जब उपजिओ ॥८१॥ दोहरा ॥ एते मै जो जग कहे जिस कर मुझ कौ जजे ॥ तिन का फल भी एक है सो सरूप मै रचे ॥८२॥ दोहरा ॥ गिआन सभू तें स्रेष्ट है सो तुम धारो मीत ॥ गिआन जग अति निरमला पारथ धरहो चीत ॥८३॥ दोहरा ॥ गिआंन जग इस आखीऐ जांनें सभ ही राम ॥ जो कछु द्रिसटी आवता सभ के मध बिस्राम ॥८४॥ दोहरा ॥ सभ जग गिआन निमित है

गिआन मुकति है सोइ ॥ पूरन जग यहि गिआन है सभ पाछै इस होइ ॥८५॥ सोरठा ॥ जिस ने धारिआ गिआन सगल जग तिस तें रहे ॥ हे अरजन यिओ जांन गिआन जग है मुकति रूप ॥८६॥ सोरठा ॥ जब गिआंन उपजिओ मीत सगल करम तब छुट गए ॥ इह राखो तुम चीत जैसे मै अब भाख हों ॥८७॥ कवित ॥ जैसे कूए खोदन निमित आइध पकड़ लीए तोड़ आइओ द्रिसटि मांहि आइध छाडि दीओ है ॥ तैसे गिआन कारन अनेक करम जीओ करे गिआन जब प्रकासिओ सभ करम बंध गइओ है ॥ ओहि ब्रहम चिदानंद सुपनै मै जीउ भइआ अपने बिबचार ते आपु खेद लीओ है ॥ सत चित आनंद अदुती एक ब्रहम रूप सुपने सौ जाग गिआन अंम्रित जिह पीओ है ॥८८॥ चौपई ॥ जिन मोह चेतन पाइआ गिआंन ॥ तिस को ब्रहम अरजन तूं जान ॥ आगे जे को उस तें लेवे ॥ ओहु गिआनी उस कैसे देवै ॥८९॥ दोनो जुगत कहौ तुझ मांहि ॥ तूं मेरा अति पिआरा आंहि ॥ लेनहार पुरख जे होइ ॥ नमामि करे गिआनी कौ सोइ ॥९०॥ हाथ जोड़ करे अरदास ॥ मै सेवक आइआ तुम पास ॥ हे गोपाल जी दीन दैआल ॥ हे गोबिंद सदा किरपाल ॥९१॥ क्रिपा करि मुझे गिआनु सुनावहु ॥ मेरे मन की चिंत मिटावहु ॥ एती अरदास सेवक जब करै ॥ बिनती करि तिस पाइन परै ॥९२॥ आगे गुर गिआनी की बात ॥ तिस की बुध सुनो रे तात ॥ प्रसंन होइ कहै बहु भला ॥ धन सेवक तुध कुल सभ भला ॥९३॥ मुझ पर बहु तुम क्रिपा करी ॥ तुम प्रसादि गावौ मै हरी ॥ अद्वैत महिमा मुझ भाखन लागे ॥ कहते सुनते सो बडभागे ॥९४॥ मेरे जानन का जो गिआंन ॥ जिन पाइओ सो ब्रहम पछांन ॥ मोहु न सकै माइआ तिस नर कौ ॥ फुन जाने वहु आतम पुर कौ ॥९५॥ हे पांडव सो इही गिआंन ॥ सरब मधि मुझ ही कौ जान ॥ सरब माहि तू आतम पेखे ॥ अपने मधि भी आतम देखे ॥९६॥

टीकाकारवाच ॥

स्वैया ॥ जीअन मै जल मै थल मै सभ रूपन मै अर भूपन मांही ॥ पावक मैं अर पउन हूं मै प्रिथवी थल मै कहौ कहू नांहीं ॥ सूरज मैं सस मैं नभ मैं चित लाइ हिरो चित लाइ तहां ही ॥ बिआपक है सभुहूं के बिखै कछु पाहन मैं परमेसर नाही ॥९७॥

श्री भगवानोवाच ॥

चौपई ॥ मेरा इह सरूप जिस पाइआ ॥ तस का फल अब आगे गाइआ ॥ जिनहूं बासदेव पहिचाना ॥ तिस का रिदा अद्वैत सो माना ॥९८॥ जदप तिन बपु मौ अघ कीए ॥ पाप कमाइ अर पाप ही लीए ॥ पापो की मूरति होइ रहा ॥ फेर मेरा जानन तिस लहा ।९९॥ सो मेरे जानन प्रसाद ॥ सगल पाप तिस जावन छाड ॥ गिआन नाम नउका के मांहि ॥ चड़ करि पाप सभ तरता जाइ ॥१००॥ गिआन प्रसादि मुकत ओहु भइओ ॥ जनम जनम के करम तिन दहिओ ॥ जल गए ब्रहम अगन मै करम ॥ सुविचार ते नासे भरम ॥१०१॥ जिउ कासट कौ अगन जलावै ॥ तिउ ही गिआन सौ पाप मिट जावै ॥ गिआन तुल दूजा को नांहि ॥ गिआन होइ आप कौ पांहि ॥ पवित्र गिआंन के सम किआ कहीऐ ॥ गिआंन तुल परमेसर लहीऐ ॥१०२॥ सोरठा ॥ गिआंन पावन की बात पारथ तुझ कौ कहत हौ ॥ मन जोड़े मुझ साथ जोगी तिस का नाम है ॥१०३॥ छंद ॥ ऐसा जोगी मीत करे है सिमरन मेरा ॥ सिंमरन उपजिउ गिआन बिनासिओ जिअ तिम्र अंधेरा ॥ एक बार के सिमरे मेरा गिआन न उपजे ॥ बहुत काल मुझ सेव गिआन हिरदे तब निपजै ॥ अब जिस करि गिआन मन आवै सोई कहो प्रसिध ॥ मुख सुनने सरधा करै वरनी जैसी बिधि ॥१०४॥ चौपई ॥ मन चितवन ते वरज करि राखै ॥ प्रेम भगति का अंम्रित चाखै ॥ इंद्री वरजे बिखिओ मांही ॥ तिस कौ गिआन प्रापत आही ॥१०५॥ जिस नर ऐसा गिआन मन धारा ॥ तिस की गति सुन पारथ पिआरा ॥ अर बहु सुख तिसे प्रापत होइ ॥ गिआंन धारन ते आतम सोइ ॥१०६॥ त्रिगुनमै जो मेरी माइआ ॥ तिस

को तर मुझ मांहि समाइआ ॥ सभ तरंग तिस के मिट गए ॥ तब गिआनी मुकत वहु भए ॥१०७॥ ढील न लागै मेरे गिआंन ॥ सुनते ही गिआन को पांन ॥ जब वहु सुने अरु प्रीति लगाइ ॥ ततकाल मुकति सुख पाइ ॥१०८॥ जे को होवै मूरख अग ॥ तिस के अंतर प्रीत न तग ॥ चिंता ही मै मगन वहु रहे ॥ मेरे बिखे संदेह वहु कहे ॥१०९॥ किआ जानै परमेसर कहां ॥ किसे न पाइआ मै किआ लहां ॥ जिन की ऐसी बुध मलीन ॥ तिन का फल तिन हिरदै चीन ॥११०॥ तिन कौ दोनो लोक सुख नांही ॥ दुखी रहै अर बहु पछुतांही ॥ जो सरूप अपनें तें भूलै ॥ मिरत भए वहु जमपुर झूलै ॥१११॥

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ मिरत अरथ अब टीकाकार ॥ ऐसी बिध अब कहै बीचार ॥ सुख सरूप है बप के मांहि ॥ सदा अकाल नित वहि आंहि ॥११२॥ देह साज माइआ संग रचै ॥ इंद्री के भोगो मै पचै ॥ कहे बप मै अर बरन आश्रम ॥ यहि कहनां है म्रित का धरम ॥११३॥ आप ते भूल देह ही मानै ॥ यही म्रित बिबेकी जानै ॥ जिस को उपजै ब्रहम गिआंन ॥ अद्वैत ब्रहम निसचै तिहं मांन ॥११४॥ अनंद सरूप अपना उस पाइआ ॥ यही अंम्रित बेदो ने गाइआ ॥ गोबिंद बाझ अवर कछु जाने ॥ सोई म्रित बिबेकी माने ॥११५॥ ताते सभ कछु गोबिंद जानौ ॥ सभु कछु एक ब्रहम ही मानौ ॥ अजात अनांम अरूप अनूप ॥ जब चितवै तब धरै सरूप ॥ रूप धार नाना बिधि होवै ॥ रूप तिआगै तब सुख सोवै ॥११६॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ मुझ कौ जजै गिआन सो जानै मन के माहि ॥ मेरे सिमरन जो जुड़े उस्तति तिस अब गांहि ॥११७॥ दोहरा ॥ जिस का मन मुझ भजन मैं जुड़िआ दिन अर रात ॥ लीन भइआ उहु मुझ बिखे सुनहो अरजन तात ॥११८॥ मन तें उठते सगल करम सो मन मुझ मै लीन ॥ कटे करम

तिस जनम के जिहं यिह निहचा कीन ॥११९॥ दोहरा ॥ मेरे गिआंन प्रसाद ते संसा रहै न कोइ ॥ काटै जोग मुझ सगल करम गिआन संदेह सभ खोइ ॥१२०॥ दोहरा ॥ हे पांडव हे सखे मीत तुझ रिद संसे मांहि ॥ सभ संदेह तुझ रिदै मै अगिआंन ही ते आहि ॥१२१॥ गिआन खड़ग करि पकड़ कै सभ संदेह कट डार ॥ ऐसे गिआंन की अगन सौ अघ बन कौ तूं जार ॥ लाभ अलाभ तिआग कै तू जुध कर हे मीत ॥ कलिआंन तेरा है इसी मौ दिड़ करि राखो चीत ॥१२३॥

टीकाकारवाच ॥

सोरठा ॥ एते बचन भगवान जब पारथ प्रति कहि रहे ॥ सुन करि कहे बखान पारथ केसव राइ सो ॥१२४॥ चौपई ॥ चतुरथ धिआउ गीता का मीता ॥ जो संबाद माधव जू कीता ॥ ब्रहम बात सभ तिसै बखांनी ॥ जिन के भाग तिनहूं ने जांनी ॥१२५॥ जे कौ सुनै अर मंन वसावै ॥ ईहा सुख आगै जै पावै ॥ आगै पीछै एको ब्रहम ॥ ब्रहम पहचांन का एहो मरम ॥ ब्रहम मांहि ब्रहम होइ रहै ॥ जे को धारे सुनें अर कहे ॥१२६॥

इति श्री मद्भगवत गीता–सूपनिषत्सु ब्रहम विद्यायां योग शास्त्रे श्री क्रिसन अरजन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते गिआन करम संन्यास योगो नाम चतुरथोऽध्याय ॥४॥५०५॥

आगे अध्याय पंजवा चलिआ ॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा ॥ हे माधव तुम कहत हो सगले करम तिआग ॥ संनिआसी पद धार कै आतम माहि नित लाग ॥१॥ दोहरा ॥ बहुड़ कहो उठ जुध कर खत्री देह यहि धरम ॥ मिस्रत बातें आख के मोहि उपजावहु भरम ॥२॥ सोरठा ॥ निसचे करि इक बात मधसूदन जी मुझ कहो ॥ कलिआन होइ

मुझ तात जिह ते संसा रहे नां ॥ ॥३॥ दोहरा ॥ मधसूदन जी सुनत ही भाखे अरजन मांहि ॥ सुन पारथ अब तुझ कहौ जैसे निसचे आहि ॥४॥

श्री भगवानोवाच ॥

चौपई ॥ करम तिआग नाम संनिआस ॥ तिस ते होवै गिआन प्रगास ॥ सत करम है ईसर अरथ ॥ करम जोग तिस नाम समरथ ॥५॥ जोग अरथ जुड़ने का मीत ॥ गिआंन नांम जांन धर चीत ॥ जब को मिलै किसी के मांहि ॥ मिलन बात तिस तें उठ जांहि ॥६॥ करम जोग ते गिआन को पावै ॥ गिआन पाइ तब करम भुलावै ॥ करम जोग अर तिआग संनिआस ॥ दोवै परम गिआंन को बास ॥७॥ जिस कौ समझ गिआन नही आवै ॥ ओहु नर करम मांहि चित लावै ॥ इह बिधि सत करम वहु करै ॥ मुझ अरपै फल मन नां धरै ॥८॥ तिस को करम जोग अति नीका ॥ करते होइ सुध मन जीका ॥ बहुड़ अब तिस की रहत बखानौ ॥ ऐसे को संनिआसी जानौ ॥९॥ बुरे भले का हरख न सोग ॥ लाभ अलाभ सम तिस को होग ॥ कंचन माटी एक समान ॥ जिस भासे सो मुकता जान ॥१०॥ जोग सांख का करो बीचार ॥ दोनो एक पारथ मन धार ॥ जांनन मिलन एक है भाई ॥ वसत एक दो नाम कहाई ॥११॥ सांख जोग ॥ गोसटि मेरे साधो संग करै ॥ साध ना मिलै ता मन मो धरै ॥ सांख जोग है इस का नांम ॥ नित अनित बीचार करांन ॥१२॥ जोग करम ॥ मेरे सिमरन धिआन के मांहि ॥ जुड़ै नित अर इसथित आंहि ॥ यही करम जोग रिद धरो ॥ दोनो को सम मन मो करो ॥१३॥ सांख जोग को भिंन भिंन भाखै ॥ पंडित तिन कौ बालक राखै ॥ पंडित कहै दोऊ इक देखै ॥ साधक सांख जोग सम पेखे ॥१४॥ जहां प्रापत सांख कौ पावै ॥ करम जोगी भी तहां समावै ॥ जिन सांख जोग एक करि जानिआ ॥ तिन का रिदा आतम सो मानिआ ॥१५॥ छंद ॥ मुझ सिमरन अर धिआन साथ जब लगि नही जुड़ै ॥ तब लग माइआ जगत सो तिस मन नही मुड़ै ॥ मन जुड़ने के बाझ तिआग

सोभा नही पावै ॥ कठन होवै तिस तिआग मन बिखिआ कौ धावै ॥१६॥ मेरे सिमरन धिआन साथ जिस का मन जुड़िआ ॥ जुड़ने के प्रसाद मन बिखिआ तें मुड़िआ ॥ संसार माइआ को तिआग ब्रहम मैं वहि मिलै ॥ सुख मै मगन होइ जाइ संसे सभ तिस के गले ॥ सिमरन धिआन की बात यही मै कही सत ॥ अब सुन अरजन मीत जुगत जोगी की मत ॥१७॥ दोहरा ॥ एते लछन जिस बिखे सो जोगी मुझ जांन ॥ मेरे साथ जो जुड़ रहिआ अर मेरा जिस गिआन ॥१८॥ दोहरा ॥ मेरे जोग प्रसादि तें मिट गए मन के रोग ॥ हिरदा तिस का सुध भइआ निहचल है तिस जोग ॥१९॥ दोहरा ॥ जैसे मै हो आतमा भूतो प्रानीओ मांहि ॥ लेप न लागे करम का मुझ बप करम कराहि ॥२०॥ दोहरा ॥ तैसे ही वहु करे करम लेप न लागे ताहि ॥ यही बीचार बिचारके मन के संसे दाहि ॥२१॥ छंद ॥ देखन सुनन सपरस सूंघन बोलन जो कहीऐ ॥ पलक फुरन अर स्वास लैन ग्रिह तिआग जो लहीऐ ॥ मीटन खोलन नैन अर पाछे जो कहिआ ॥ वरते इंद्री करम सभी ततव ते रहिआ ॥ जोगी ऐसे कहहि इंद्री तत गुण मिल वरते ॥ मै साखी सभ माहि करम मिल कर ए करते ॥२२॥ चौपई ॥ इत प्रकार वहु बप भिंन जानै ॥ करम लेप आप मांहि न मानै ॥ निरलेप बप मांहि जो रहता ॥ निसदिन वहु आतम ही कहता ॥२३॥ तिस का चेता मन के मांहि ॥ मुझ बिब्रेक को देखे नांहि ॥ तिस के देह की यहि गति जानो ॥ बसत्र रीति देह तिस मांनो ॥२४॥ जैसे बसत्र अंग लगाए ॥ भिंन देह बसत्र सौ पाए ॥ बसत्र निआई देह तिस धरे ॥ बसत्र जुगत बप भिंन करे ॥२५॥ बप करम तिस लेप न लागै ॥ कमल दिसटांत कहो अब आगै ॥ जल ते निआरा कमल जिउ अहै ॥ तिउ निआरा वहु बप मैं रहै ॥२६॥ दोहरा ॥ जिस मनसा मुझ मिलन की तिस की सुन अब बात ॥ मन इंद्री अर बुध सो करम निहकाम कमात ॥२७॥ सति करम जो नित करे अर अरपन मेरे मांहि ॥ आतम ही सभ जान कै मन बांछै कछु

नांहि ॥२८॥ दोहरा ॥ अपने अंतह सुध को सत करम नित करे ॥ करे समरपै वह मुझे फल तिस चित न धरे ॥२९॥ दोहरा ॥ तिस कौ निसचल सांत सुख प्रापत मुझ ते होइ ॥ सकाम करम जो करत है करम बंध तिस होइ ॥३०॥ दोहरा ॥ जिन इंद्री के सगल करम अर मन की चितवन जोइ ॥ सगल तिआगे रिदे ते सो संनिआसी होइ ॥३१॥ दोहरा ॥ संनिआसी सो जानीऐ देह अभिमांन जिस नांहि ॥ सदा रहै भिंन देह ते अक्रै कहीऐ ताहि ॥३२॥ दोहरा ॥ अपनी सोभा तुझ कहु जिउ मैं अक्रै रूप ॥ जो मुझ ऐसा जानता सो भी मुझी सरूप ॥३३॥ मंगल छंद ॥ कछु सोभा मेरी सुन ॥ जो कहौ अपने गुन ॥ मुझ कछु प्रजोजन नांहि ॥ संसार को उपजांहि ॥३४॥ तिस लेप मुझ नही कोइ ॥ अक्रै अचल जानो सोइ ॥ मुझ करम बंधन नाहि ॥ मै नित मुकत ही आहि ॥३५॥ संसार उतपत जो ॥ प्रितपाल तिन जो हो ॥ यहि माइआ मेरी करे ॥ सुभाव तें जग धरे ॥३६॥ जिउ करि कंनिआ कुवार ॥ गुडी साथ तिसहै पिआर ॥ तिउ संसार ऐसा जांन ॥ वहि खेल माइआ जान ॥३७॥ हउ निरलेप निआरा रहों ॥ निरंजन रूप अपना लहौ ॥ मै ना करावौ पाप ॥ पुंन ना करावौ आप ॥३८॥ जीउ अछादिआ अगिआन ॥ वहि मोहि रूपी जांन ॥ वहु कहे करम हम करें ॥ निरलेप चित न धरें ॥ तिन भांत मैं नही मीत ॥ निरलेप मेरी रीत ॥३९॥ दोहरा ॥ करन करावन मुझी कौ जो ऐसा मुझ जांन ॥ इस जानन के संग ते नासे तिस अगिआंन ॥४०॥ जिउ रवि को है चांदनां अपने चादन मांहि ॥ तैसे गिआनी गिआन तें मुकत रूप ही आंहि ॥४१॥ कवित्त ॥ बुध निहचा गिआनी का सदा रहै मेरे मांहि मेरा ही नाम जापै मेरी भाखै महिमां जी ॥ मेरी ही निहचा कीई तिसे गिआन अगनि भई उसी अगनि साथ सगल पाप घोर दहिमां जी ॥ मेरे अबिनासी पद प्रापत वहु होइ रहिआ जगत सभ अनित मिथिआ तिन मनिमां जी ॥४२॥ चौपई ॥ ऐसी द्रिसटी तिस नर की भई ॥ जो आगै मैं बहु बिधि

कही ॥ जैसे ब्रहमन का अउतार ॥ बिदिआ पड़ता होइ अपार ॥४३॥ ब्रहमन जनम अर विदिआ मांहि ॥ दोनों मैं हंकारी नांहि ॥ निमर भूत ऐसा को साधू ॥ ऐसा विरला बप को लाधू ॥४४॥ कुंचर स्वान अर नीच चण्डाल ॥ चतुरथ सुरभी होवहि नाल ॥ यहि पांचो वहि सम कर जानै ॥ बिबेकी ऐसा पंडित मानै ॥४५॥ किआ समझ करि सम वहि देखै ॥ सभहूं निरंत्र आतम पेखै ॥ सभ मै एको आतम जानै ॥ देह अंग कौ मूल न जानै ॥ ४६॥ इस समता सौ जिन मुझ देखिआ ॥ सो नर मुकत रूप मै पेखिआ ॥ बहुड़ जनम मै तिसै न देवों ॥ अपने संग आप कर लेवों ॥४७॥ जिन सभ अंतरि गोबिंद जाना ॥ गोबिंद मांहि तिस का मन मांनां ॥ भले पाइ प्रसंन न होइ ॥ बुरे पाइ चिंता नां कोइ ॥४८॥ सो इसथिर बिध गिआनी कहीऐ ॥ ऐसा ब्रहमवेता को लहीऐ ॥ ब्रहम मांहि इसथित जो रहै ॥ इंद्रीओ भोग वह मूल न चहै ॥४९॥ आतम सुख सौ मगन वहि भइआ ॥ ब्रहम समाध सौ ब्रहम हो रहिआ ॥ मन जो चलहै बाछा मांहि ॥ ब्रहम सो जुड़ै बाछा मिट जाहि ॥५०॥ ऐसा जोगी आतम सुख पावै ॥ निरबाण ब्रहम मै मगन हो जावै ॥ हे पारथ इह सुख तिस आइआ ॥ इंद्री का तिस स्वाद गवाइआ ॥५१॥ अनित सुख इंद्री के जानो ॥ जोगीसर तिहं रमत न मानो ॥ इंद्री सुख दुख है भाई ॥ छिन सुख होइ बहुड़ मिट जाई ॥५२॥ जो इंद्री के सुख नां देखै ॥ ऐसा भगत वहु मुझ कौ पेखै ॥ जिस कौ जनम आगे फिर नांही ॥ तिस की बात अब तुझे सुनाई ॥५३॥ दोहरा ॥ लछन मुकते पुरख के अब मै भाखो तोहि ॥ सोई मुकता जानीऐ जिस काम क्रोध ना होइ ॥५४॥ सोरठा ॥ तिस का अब दिसटांत हे पारथ तूं समझ ले ॥ समझे आवै सांत जिहं बिध सों अब कहत हों ॥५५॥ दोहरा ॥अंन पात्र जो अगन पर पाक निमित चड़ाइ ॥ किनका तिस सों काढ कर देखै दिसट लगाइ ॥५६॥ दोहरा ॥ जो वहु किनका गल गइआ तब अंन पकिओ मीत ॥ तैसे जिहं नही काम क्रोध मुकत रूप धर

चीत ॥५७॥ स्वैया ॥ जिस कौ काम क्रोध नही उपजै जो जुगत है तिसे निसांनी ॥ सोई मनुख सुखी अर मुकता ब्रहम अरूप अनूप पहिचानी ॥ अंताकरन मै जो ब्रहम सुख है तिस सुख सौ वा कौ मन मांनी ॥ ब्रहम जांने सो ब्रहम ही होवै ऐसी भांत मानै वहु गिआंनी ॥५८॥ चौपई ॥ मगन ब्रहम अद्वैत मैं भइआ ॥ सगल अघ तिस नर का गइआ ॥ दूजा भाउ तिस सो कित होइ ॥ जांने गोबिंद अद्वै सोइ ॥५९॥ बिखिआ ते मन जिस नर जीतो ॥ ब्रहम अंम्रित कौ तिस ही पीतो ॥ सभहूं प्रानीओ तिस नर प्रीति ॥ कलिआन सभहूं की बाछे मीत ॥६०॥ यही कहे सभ गिआंन को पावै ॥ गिआंन पाइ सभ सुखी कहावै ॥ काम क्रोध ते रहत वहु लहीऐ ॥ ऐसा पुरख जती वहु कहीऐ ॥६१॥ मन चेता जिस मुझिमैं राखिआ ॥ निसदिन अंम्रित तिस ही चाखिआ ॥ अउर भांत एक मुझ कौ जापें ॥ इंद्री के गुन सगले कांपे ॥६२॥ चछ करि त्रिकुटी धिआंन लगावै ॥ पांच बाउ को सीस चड़ावै ॥ नासका मांहि बाउ को राखै ॥ इद्री जीत राम रस चाखैं ॥६३॥ बुध निहचल अर मन का चेता ॥ मेरे बिखै राख सुख लेता ॥ मुख सौ मोन बाछ ते रहता ॥ निरभउ निरमम एक प्रभ कहता ॥६४॥ करनी करते गिआंन तिन आवै ॥ पाइ गिआन अमर होइ जावै ॥ सो तो सदा मुकत है भाई ॥ ब्रहम गिआन सों जिहं मन लाई ॥६५॥ दोहरा ॥ हे अरजन अब स्रवन कर मेरा कछु प्रताप ॥ अनिक भांत मै साज कै तिह मैं रहिआ बिआप ॥६६॥ दोहरा ॥ बहु भावन मन धार कै सगल जगत के लोग ॥ करे तपसिआ मुझ निमित तिस का भोगै भोग ॥६७॥ बहु प्रकार के जग दांन तिन भोगो हउ मीत ॥ बांछो भला हउ सभी का निसचे धर तूं चीत ॥६८॥ सोरठा ॥ मेरे चार प्रताप जे को प्रानी जानता ॥ तिस के मिटे संताप सांत पद मैं प्रापत भइआ ॥६९॥

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ पंचम धिआइ जो कहिआ सुनाइ ॥ संनिआस करम जोग मन लाइ ॥ जो ठाकुर अरजन प्रति भाखिओ ॥ खालसे कौ सभ ही मै आखिओ ॥७०॥ गीता अरथ विरला को जानें ॥ जो जाने सो मुकत पहचाने ॥ जो मुकता सो ब्रहम कहावै ॥ अक्रै अद्वैत माहि गति पावै ॥७१॥ यही जानै सभ घट है राम ॥ रमतीत अरथ राम को नाम ॥ तां ते वह भी राम ही आही ॥ राम बिना दूजा को नाही ॥७२॥ जो यहि सुनै अर मन मैं धारै ॥ राम होइ मैं कहो पुकारै ॥ जे को भिंन देह ते होइ ॥ मुकत रूप है निसचै सोइ ॥७३॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते सांख योगो नाम पंचमोऽध्याय ॥५॥५७८॥

आगै अध्याय छठवां चलिआ ॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ आतमा जुड़ने के निमित सत करम जो धार ॥ फल बाछै वहु कछू नाहि सोई जोगी सार ॥१॥ सलोकु ॥ संनिआसी सोई जानीऐ जिन करमो फल तिआग ॥ मुझ जुड़ने जोगी भइआ फल तिआगे बैराग ॥२॥ सलोक ॥ जोग संनिआस मेरी मत ऐसा अवर भांत नां कोइ ॥ अगन जलाए जटा वधाए भसम संनिआस न होइ ॥३॥ पउड़ी ॥ जोगी सोइ जिस होइ न आसा तब मुझ संग समावै ॥ फल तिआगे ते होइ संनिआसी एको नाम कहावै ॥ मन चलते को द्रिड़ करि राखै तो जोगी संनिआसी ॥ हे अरजन जिन आसा छाडी सो आतम सुखवासी ॥४॥ सलोक ॥ जो चाहे मुझ मिलन कौ सो यहि करम करे ॥ जैसा आगे मै कहो सो अरजन सुन ले ॥५॥ पउड़ी ॥ जो मुझ मिलिआ चाहे सो ऐसा करे ॥ गिआन सके नही धार करम सभ चित धरे ॥ करे करम वहु नित

अरपे मुझ हरे ॥ निहंकांम करम के कीए गिआन दीपक जरे ॥६॥ जोग अरूड़ इस कहीऐ सुख सोझी परै ॥ गिआन जगे घटि माहि करम फिर नां करे ॥ इछिआ जैसी होइ वरते उहु नरे ॥ सभ मैं जांने ब्रहम पछाने इक हरे ॥७॥ दोहरा ॥ जो होइ जोग अरूड़ लछण तिस के कहों ॥ चलत नां बिखिओ मांहि इंद्री तिस बस लहों ॥८॥ दोहरा ॥ बिनां आतम के सिमरनें चिंता करे न कोइ ॥ मनमैं उठे न ब्रित कछु जोग अरूड़ है सोइ ॥९॥ सलोक ॥ ऐसा जोग अरूड़ बिखिओ सो मन राखता ॥ ओहु मिलिआ मुझ संग बिखे स्वाद न चाखता ॥१०॥ दोहरा ॥ हे अरजन अब तुझ कहों निसचे एको बात ॥ अपनां ही आतमा मित्र है सत्र आप है तात ॥११॥ दोहरा ॥ मन ही कर सभ मुकत हैं मन ही करि बंधि आंहि ॥ बाहरि मित्र ना सत्र को मन ही मौ सभ आहि ॥१२॥ दोहरा ॥ जिना बिखिआ सो वरज करि मन राखिओ मुझ माहि ॥ सो मन तिस का मित्र है तिस ते बहु सुख पांहि ॥१३॥ दोहरा ॥ जो इंद्रीओ के बिखिओ मै मन कौ देवै मीत ॥ वहु मन तिस का सत्र है निसचै राखो चीत ॥१४॥ पउड़ी ॥ जो विखिआ ते मन वरज परमातम संग लागे ॥ सोई संत तुम जानौ पूरन है तिहं भागे ॥ यहि क्रिपा मुझ कीनी जिस ते वहि नर जागे ॥ मन बप के सभ दुख सगले तिहं बेग तिआगे ॥१५॥ सीत उसन सुख दुख हरख अर सोग तिआगे ॥ भला बुरा आदर निर–आदर तिस को सम लागे ॥ ऐसा पुरख सुख पाइ गिआंन बिगिआंन त्रिपतागे ॥ निरहंकारी निर्मम सगल संसे तिह दागे ॥१६॥ दोहरा ॥ माटी कंचन एक जिस सो अरूड़ है जोग ॥ सत्र मित्र सम जानता तिस कौ हरख न सोग ॥१७॥ दोहरा ॥ उदास रहै नित जग सौ बाधव पखु न करे ॥ बुरा न चितवै सत्र का दोनो सम मन धरे ॥१८॥ साध पापी सम जानता जोग अरूड़ है जो ॥ चेता मन का मुझ बिखे राखे है नित सो ॥१९॥ इकांत ठउर मै बैठ कै मन की बिरत तिआग ॥ आसा कोई नां करै आतम के संग लाग ॥२०॥

दोहरा ॥ ऐसा ठउर बनाइ कै आसन धारे सोइ ॥ चत्र उंगल ऊचा भूम ते नीच ऊचा ना होइ ॥२१॥ गोबर को लेपन करे ऊपर कुछा विछाइ ॥ म्रिग तुचा तहां डार कर उस पर आसन लाइ ॥२२॥ ऐसी ठउर बनाइ करि चितवन मन की तिआग ॥ इकांत करै मन इंद्रीआ आतम जोग सो लाग ॥२३॥ दोहरा ॥ टेढा बांका ना बहे चौकड़ी आसन धार ॥ सभी अंग सूधे रखे सगली चितवन जार ॥२४॥ दोहरा ॥ अगर नासका आपनी नेत्रो देखे सोइ ॥ बाएं दाएं न पेखता परम सांत तब होइ ॥२५॥ दोहरा ॥ मन मैं निरभउ हो रहै बीरज गिरन नां देइ ॥ संजम करके यिउ कहै मन चलते कौ लेइ ॥२६॥ पउड़ी ॥ ऐसा जोगी सिमर लेइ मुझ आतम तांई ॥ मन का चेता निहचल तिसका मुझ पर आंही ॥ मन जुड़ने के साथ सांत बुध वहु पाई ॥ रहत जोग इह रीत पेट भर अंनि न खाही ॥२७॥ बोलन चलन अहार बिउहार भी जुगत कराही ॥ देह बिउहार तिस जुगत जागन सोवन जो खांही ॥ जो वरतै ऐसी भांति अघ बप तिस सभ दाही ॥ सिध गति प्रापति हो ताहि संसे न रहाही ॥२८॥ दोहरा ॥ जोग प्रापत होइ जिस पाप नास तिस होइ ॥ मन राखै आतम बिखै चाह न बाछे कोइ ॥२९॥ दोहरा ॥ जे को ऐसा होत है सो जोगी तिह जुगत ॥ गिआन उपजे मुझ भगत ते गिआनो पावै मुकति ॥३०॥ दोहरा ॥ जोगी कौ एकांत ठउर इह बिधि कहीऐ मीत ॥ तिस का अब दिसटांत तूं सुन राखो धर चीत ॥ ३१॥ दोहरा ॥ जैसे दीपक पउन मैं जरे नही सुभ बिध ॥ ग्रहि मै पउन न लागही दीपक जरै प्रसिध ॥३२॥

टीकाकारवाच ॥

दोहरा ॥ संसार लोक तिस पउन है जोग मांहि जो लीन ॥ देखन सुनन तिआग करि एकांत ठउर मन कीन ॥३३॥ दोहरा ॥ जानै सगल ब्रहम है तिस मै बोलन नाहि ॥ जो को धारै मोन यहि सो निरबांछी आहि ॥३४॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ बिखिआ ते मन वरज करि आतम मैं कीओ लीन ॥ अपने आतम के बिखै प्रमातम तिह चीन ॥३५॥ दोहरा ॥ जो देखै प्रमातमा तोख रहै मन मांहि ॥ ऐसा सुख तिस उदै होइ जैसा कहो अब ताहि ॥३६॥ दोहरा ॥ वहु सुख नेत्रो ते परै बुध जानै यहि बात ॥ प्रापत जिस को वहु भइआ सगल बिखै तिस काट ॥३७॥ दोहरा ॥ ऐसे सुख के लाभ ते जोगी त्रिपतिओ मीत ॥ तिस के तुल न होर सुख यही बात धर चीत ॥३८॥ चौपई ॥ तिस सुख मांहि मगन जो भइआ ॥ तिस को कारज कोइ न रहिआ ॥ जो दुख तिस के बप को देइ ॥ सस्त्र के संग देह कटेइ ॥३९॥ अगनि मांहि जे को तिस जारे ॥ तउ भी उस कउ दूख न पिआरे ॥ अपने सुख मैं लीन वहु रहे ॥ निहचल सुख मै आप कौ लहै ॥४०॥ इस सुख मैं सभ दुख मिट जावै ॥ तिस तें पारथ मुकत वहु पावै ॥ माइआ तीर तिसी मै तरे ॥ माइआ तिआग मेरे मै जुड़े ॥४१॥ जोग सुख तिस नर ने पाइआ ॥ आतम जुड़े आतम चित लाइआ ॥ चितवना तिआगु मन को बस करे ॥ इंद्री जीत गिआन मन धरे ॥४२॥ मन चलते को पकड़ लिआवै ॥ देह अनित तिस जाप जपावै ॥ मन अर सगली इंद्री भाई ॥ एकबार पकरी नही जाई ॥४३॥ सहिज सहिज बुध सो मन पकड़े ॥ सत बीचार करि मन को जकड़े ॥ जब थांबहु मुझ सिम्रन माही ॥ चित ब्रित को वरज रहाई ॥४४॥ मन को चलने मूल न देवै ॥ बुध सौ बेग पकड़ कर लेवै ॥ या ऐसे मन कौ समझावै ॥ जहां जाइ तहां ब्रहम दिखावै ॥४५॥ मिथिआ माइआ मन कौ कहै ॥ आतम बुध सौ मन को गहै ॥ इह साधन मन का तब लग करे ॥ जब लग द्रिड़ अभिआस मन धरे ॥ ४६॥ मन जब माइआ ते द्रिड़ राखै ॥ आतम माहि आप को लाखै ॥ आप बीचार आतम को पावै ॥ यही मन आतम होइ जावै ॥ ४७। सांत सुख मै लीन मन होवै ॥ प्रकिरत गुन तब सगली खोवै ॥ रज तम मिटै पाप सभ जावै ॥ वहु जोगी ब्रहम भूत कहावै ॥४८॥ तब मुझ आतम सो इक होइ

॥ महां अनंद सुख पावै सोइ ॥ ब्रहम परसे ते ब्रहम होइ जावै ॥ ब्रहम होइ तब अति सुख पावै ॥४९॥ सभ को जानै अपने माहि ॥ आप जानै सभहूं मै आहि ॥ ऐसा जोगी ब्रहम मै लीन ॥ देखै मुझ कौ ऐसा चीन ॥५०॥ बैराठ रूप ब्रिछ मुझ को देखै ॥ चउरासी लख जीउ ब्रिछ पर पेखै ॥ जो कछु दीसै मुझ मै बसै ॥ यहि जानै मन ते दुख नसै ॥५१॥ जिस प्रकार मैं सभहूं माहि ॥ अब यहि कहौ जैसे सभ आहि ॥ एक ब्रहम अंतर सभ बिआपिआ ॥ इस प्रकार मै सभ बिध जापिआ ॥५२॥ जो मुझ को सभ के मध जानै ॥ आप कौ भिंन मुझ ते नही मानै ॥ उस के निकट सदा हउ रहौ ॥ जो वहु कहै सोई मै कहौ ॥ उह मुझ द्रिसटि आगै नित रहै ॥ उस की द्रिसटि मुझ पर नित अहै ॥५३॥ पउड़ी ॥ सभहूं प्रानीओ मांहि मुझ आतम नित देखता ॥ एक अद्वैत ब्रहम सभहूं मै पेखता ॥ ऐसा हो मै ब्रहम जिस रूप न रेखता ॥ मुझ को जो पहिचानै करम न लेखता ॥५४॥ तिस बहुड़ न होवे जनम मेरी सीखता ॥ मुझ मै वरते मीत मै तिस वल पेखता ॥ तिस की एह नीसानी जो मुझे न रेखता ॥ जो अपने दुख सुख अवर मै पेखता ॥५५॥ सलोक ॥ परम जोगी तिस नाम दुखावै किसै नां ॥ सभ को एही देखै एको ब्रहमु जाना ॥५६॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा ॥ अरजन इह बिध स्रवन करि मुख ते भाखिओ एह ॥ हे प्रभ मेरे प्रसन का बेग ही उतर देइ ॥५७॥ दोहरा ॥ प्रभ जो कही बिध जोग की जानै कठन अति एह ॥ तिन की जुगति अति कठन है करने ते दुख देह ॥५८॥ चंचल मन इंद्री सभी कउन भांति थिर होइ ॥ अति बलवान मन रूप है पकड़ न साकौ सोइ ॥५९॥ दोहरा ॥ इह मन पउन ते सरस है किह बिधि पकड़ो मीत ॥ बिन साधन जिस ते रहै सोई बतावहु रीति ॥६०॥

टीकाकार ॥

चौपई ॥ रिखीकेस सुन उतर कहे ॥ अरजन के सगले दुख दहे ॥
श्री भगवानोवाच ॥

हे महांबाहु मन ऐसा आही ॥ मारत रूप है संसा नाही ॥६१॥ बहुत कठन पकड़न मन होइ ॥ बहु अभिआस करे नित सोइ ॥ अभिआस बीचार जब मन मै आइआ ॥ चितवन रही सुख तिस पाइआ ॥६२॥ चितवन ठउर बीचार जब भइआ ॥ तब बीचार भी सभ ही रहिआ ॥ उनमनि अवसथा सोई होइ ॥ चलते रहत मन होवै सोइ ॥६३॥ दोऊ बातै इह बस होइ ॥ प्रिथम अभिआस बैराग है दोइ ॥ अभिआस बैराग ते निहचल रहै ॥ परम ब्रहम आप को लहै ॥६४॥ संसार ब्रित मन मै नही आवै ॥ जो आवै तिस बेग मिटावै ॥ जानै एको गोबिंद रूप ॥ जहां जावै तहां वही सरूप ॥६५॥ जिन अभिआस मै मन नही दीआ ॥ अउर बैरागु जगतु मै लीआ ॥ तिस कौ जगत नित ही भासै ॥ जगत जाल मै वहु नर फासै ॥६६॥ बैराग जगत सो जिन नर कीआ ॥ सत बीचार रिदे मै लीआ ॥ आठ पहर नित करे बीचार ॥ सो निहचै मुझ मिलिआ यार ॥६७॥ अखंड सुख तिस प्रापत होइ ॥ ब्रहम जल ते वहि बप मल धोइ ॥ अरजनोवाच ॥ फेर प्रसन अरजन यिउ कहे ॥ सुख तब ही जब ब्रहम को लहे ॥६८॥ अर जो जुड़े जोग के माहि ॥ चिरंकाल अभिआस कराहि ॥ तिस के मन को सांत न आवै ॥ पदवी सिधो की नही पावै ॥६९॥ छूट जाइ बीच जिस देहि ॥ छूटन समै अभिआस सभु लेहि ॥ अवर बात मै मन तिस लागै ॥ किआ गति तिस की कहीऐ आगै ॥७०॥ मैं सुनिओ बेदो मै एहि ॥ तिआग समे जिस सौ मन देहि ॥ तैसी ही देही वहु पावै ॥ ऐसे ही सभ बेद बतावै ॥७१॥ जिस का देह छूटन के समै ॥ अवर ठउर मै मन तिस रमै ॥ तुमरा धिआन बिसर तिस जाइ ॥ ब्रहम अभिआस वहु देइ भुलाइ ॥७२॥ ऐसा जोग भरिसट जो होइ ॥ तिस की गति प्रभ जी है कोइ ॥ तिस दिसटांत मै ऐसा पाइआ ॥ जैसे मेघ उमग के आइआ ॥७३॥ सभ को कहै जो

बरखा होइ ॥ परजा को सुख देवै सोइ ॥ तिसी समे अति तीखण बाउ ॥ तिस मेघ को देइ उडाइ ॥७४॥ तब वहु मेघ बरखा ते रहै ॥ सभ को मेघ गइआ तब कहै ॥ जोगी जुड़े तैसे तुम माहि ॥ देहि तिआग मै मन तिस दाहि ॥७५॥ अउर ठउर मै तिस मन जावै ॥ मेघो कौ जिउ पवन चलावै ॥ जोगी जोग तब कछू न रहै ॥ जावै जोग गति कैसे लहै ॥७६॥ हे प्रभ जी तिस उतर कहो ॥ उतर कहि मुझ संसा दहो ॥ तुमरे तुल मै अवर न जानो ॥ जिस की बात सुनो अर मानो ॥७७॥ दोहरा ॥ मधसूदन यहि सुनत ही भाखे अरजन मांहि ॥ अरजन निसचे जान तू जो आखो अब ताहि ॥७८॥

श्री भगवानोवाच ॥

मेरे सिमरन भजन नर एक बार मन धरै ॥ कलिआन बीज जिन बीजिआ सो वहि कैसे टरै ॥७९॥ दोहरा ॥ मिरत अवसथा समे जिस जोग अभिआस मिट जाइ ॥ बेग जाइ वहि स्वरग मै देवो पदवी पाइ ॥८०॥ दोहरा ॥ स्वरग माहि दिब भोग मै इंद्री बहु सुख पाइ ॥ तिन भोगो की बारता अब तुझ कहौ समझाइ ॥८१॥ दोहरा ॥ सूंघन को है दिब सुगंध सुणने कौ सुख राग ॥ अपसरा सुंदर रूप है बहु भूखन तिन लाग ॥८२॥ दोहरा ॥ ना इसत्री को पुरख है पुरख नही को नार ॥ जब इछिआ तिन होत है तब रमते करि पिआर ॥८३॥ दोहरा ॥ जोग भ्रिसट तब स्वरग मै ऐसे भोगे भोग ॥ बहु भोगै तब होइ अरुच गिड़े भ्रिसटी जोग ॥८४॥ दोहरा ॥ पवित्र कुल मै जनम ले ब्रहमन खत्री होइ ॥ बहु द्रब जिन के ग्रिह बिखै ऐसा कुल है सोइ ॥८५॥ दोहरा ॥ तहां उपजै सुख भोग कै बहुड़ जोग वहु करै ॥ निहचल मन वहु होइ करि निसदिन मुझ संग जुड़ै ॥८६॥ दोहरा ॥ जुड़ने के प्रसादि ते मुझ को प्रापत होइ ॥ थोड़ा अभिआस जिन नर कीआ तिस की गति है सोइ ॥८७॥ दोहरा ॥ दूसर जोगी अउर है बहु अभिआस जिह कीन ॥ मिरत अवसथा देह की मन

जगत बिखे भइओ लीन ॥८८॥ दोहरा ॥ तिस की गति यहि होत है वहु भी सुरगे जाइ ॥ अघाइ रहै जब भोग मै गिड़ै स्वरग ते आइ ॥८९॥ जोगीसर के ग्रिह बिखे जनम लेवै वहु साध ॥ जिउ सुखदेव बिआस के ग्रिह मै भए अगाध ॥९०॥ दोहरा ॥ जनमत ही तिस पुरख की बुध होइ प्रगास ॥ बहुड़ जुड़े मुझ जोग मै पावै सुख मै बास ॥९१॥ दोहरा ॥ जैसे कारज करत ही सोइ जाइ को मीत ॥ जब जागे तब फेर वहु कारज राखे चीत ॥९२॥ दोहरा ॥ अपने कारज मै लगे तैसे जोगी जान ॥ जोगीसर के ग्रिह बिखै उपजत जोग कमान ॥९३॥ दोहरा ॥ अभिआस जो पूरब जनम का तिसके मन मो सोइ ॥ जतन बिना अभिआस वहु आपे ही सो होइ ॥९४॥ दोहरा ॥ अब अभिआस के जोग सो ब्रहम सबद वहु पाइ ॥ अरथ सासत्र बेदांत का अपने मन मै लाइ ॥९५॥ दोहरा ॥ बीचार अरथ बेदांत ते मुझ को जानै मीत ॥ परम ब्रहम जो आतमा तिस को राखे चीत ॥९६॥ चौपई ॥ हे महांबाहु जो मै तुझ कहा ॥ जोगी गत तै मन मौ लहा ॥ एक जनम वहु सिध न पावै ॥ ओहु जोगी बहु देह हंढावै ॥९७॥ करम जोग सो जब सुध होइ ॥ सगल पाप मन के तब खोइ ॥ तब गिआंन तिस रिदे मै आवै ॥ गिआन धार मुकति को पावै ॥९८॥ तीन मारग करि मुझ कौ मिलै ॥ तीनौ मारग हैं अति भले ॥ प्रिथम गिआंन है दुती तपसिआ ॥ त्रितीऐ मारग जोग का दसिआ ॥९९॥ तप तें अधिक गिआंन कहावै ॥ करमजोग स्रेसट अति पावै ॥

टीकाकारवाच ॥

मन रोकन करम का अरथ ॥ जो मन रोकन होइ समरथ ॥१००॥ ऐसा करम करे जे कोई ॥ मन कौ सांत करे है सोई ॥ मन चलते तें सांत जब भइआ ॥ तब उस द्रिसटि एक ब्रहम ही रहिआ ॥ तां तें करम जोग अति नीका ॥ संसार जोग ते लागे फीका ॥१०१॥ गिआंन अरथ ॥ चौपई ॥ गिआंन अरथ ईहां यहि होइ ॥ जो जांनै सभ ब्रहम है सोइ ॥ मन की

दउड़ सांत नही करै ॥ बिखिअन मै निसदिन मन धरै ॥१०२॥ वहु गिआंन दुख समे न होइ ॥ मन जिस बिखिओ वरतै सोइ ॥ तपसिआ ते उतम है गिआंन ॥ तप को दुख रूप तूं जांन ॥१०३॥ तप निरमम जो नर को करै ॥ तिस को गिआंन दीपक तब जरै ॥ गिआंन ते करम जोग कौ पावै ॥ जोग बीचार ते चित न धावै ॥१०४॥ जब मन इसथर होवै मीत ॥ सोई ब्रहम राखो तुम चीत ॥ तांतें अरजन कौ भगवान ॥ करम जोग ही करै बखांन ॥१०५॥

श्री भगवानोवाच ॥

पउड़ी ॥ अरजन तूं जोगी होइ मीता अउर भांत मै तुझ कौ आखौ ॥ सो सभहूं जोगो ते स्रेसट जिस की बात तुझै मै भाखौ ॥ गलत भइआ मन तिस का मुझ मै जिउ पानी मै मिसरी लाखौ ॥ जिन कौ आपा भूल गइआ हउ अपने सिमरन मै तिस राखौ ॥ सरधा संजुगत मुझ देखे चाहे तिस को मै अति प्रीतमु लाखो ॥ मुझ बिब्रेक तिस मन नही जावै तिस कौ तब मैं मन मौ राखौ ॥ सभ जोगो मै स्रेसट जो कहीऐ हे अरजन मै तुझ कौ भाखौ ॥१०६॥

टीकाकारवाच ॥

चउपई ॥ छठवां धिआउ गीता कहि गाइआ ॥ जोग गिआन का भेद बताइआ ॥ मुख सो कहे निरभउ होइ वरते ॥ मन ठाके नही बिखिआ करते ॥१०७॥ गिआंन प्रापत तें वहु सुख पावै ॥ जब दुख होइ तब गिआंन भुलावै ॥ करमजोग ॥ करम जोग है इस का नांउ ॥ मन की चाल जो सांत करांह ॥१०८॥ मन धावत वरज करि राखे ॥ अंम्रित अपने अंतर राखे ॥ अमंन होइ फुरहै कछु नांहि ॥ स्रेसट करम जोग यिउ आहि ॥१०९॥ दोनो मारग मुकत के मीता ॥ दोनो साध मन अपना जीता ॥ मन जीता तब ब्रहम सुख पाइआ ॥ सभ ही ब्रहम तब दिसटी आइआ ॥११०॥ यही गिआंन बात प्रभ कही ॥ करम जोग मै स्रेसट लही ॥ करम जोग

गिआंन इक मीत ॥ दोनो की है एको रीत ॥१११॥ जो नर सभी एक हरि देखै ॥ आपस कौ भी हरि ही पेखै ॥ जो इह जानै मुकता सोइ ॥ तिस को आवागवन न होइ ॥११२॥ आवागवन नही कछु भाई ॥ मुकत बंध सभ मन तें पाई ॥ मन करि मुकत सो मुकता जानो ॥ मन करि बंध सो बंध पहिचानो ॥११३॥ जो दीसै सो एको मन है ॥ मन ही ब्रहम मन ही बहु तन है ॥ जो मन जाइ कछु द्रिसट न आवै ॥ अवाच दिसा ऐसा कहलावै ॥११४॥

इति श्रीमद्भगवत गीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते आत्म संयम योगो नाम छठवोऽध्याय ॥ ६ ॥ ६९२॥

आगे अध्याय सपतम चलिआ ॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ चेता अपने मन का जिह राखिओ मुझ मांहि ॥ सो जोगी अति स्रेसट है जोग पाइओ है तांहि ॥१॥ चौपई ॥ जो नर मेरे जोग सो जुड़िआ ॥ मन तिस का बिखिआ ते मुड़िआ ॥ मेरे आसरे होइ मुख कहै ॥ क्रिपा प्रभ ते इह जोग अहै ॥२॥ मुझ तें कछू न होवै स्वामी ॥ हे केसव जी अंतरजांमी ॥ ऐसे समझ जो जोग कमावै ॥ तिस के समझे गिआंन को पावै ॥३॥ गिआंन पाइ संदेह सभ जाई ॥ जिउ का तिउ मुझ देखे भाई ॥ जैसा मुझ को जोगी जानै ॥ जैसा जानै करौ बखानै ॥४॥ सगल मानस ते बिरकत को होई ॥ कोटि बिरकतो मै सिध को होई ॥ कोटि सिधो मै मुकति को पावै ॥ कोटन सो मुझ माहि समावै ॥५॥ को विरला मुझ को पहिचानै ॥ मेरे प्रताप को मन मै आनै ॥ आगे तुझ कौ जुगति बतावौ ॥ देह संजोग की कथा सुनावौ ॥६॥ छंद ॥ भूम जल अरु अगनि वाइ पंचम आकास तत है मीता ॥ यहि पाचो बाहिर भीतर वरते पांचो वरते देह के भीता ॥ मन बुध अहंकार यहि तीनो उपजन माइआ ते

इन कीता ॥ नउवां जीउ तिहं मांहि बिराजे सगल संसार तिह महि उपजीता ॥७॥ छंद ॥ लख चउरासीह जीउ तिह तें जब साजै ॥ सभी देह कौ साज ब्रहम तिह माहि बिराजै ॥ मेरी उसतत सुनो आपे जैसा मैं आही ॥ जगत साजो प्रितपालो अर संखार कराही ॥८॥ मुझ तें परे न कोई ऐसा जान तूं ॥ सगल संसार परोइआ जानो मुझ मूं ॥ सूत माहि जिउ मनके प्रोए जानीऐ ॥ तिउ संसार के भीतर मुझ कौ मानीऐ ॥९॥ दोहरा ॥ हे अरजन यिउ जान तूं सभ जग तोइ अधार ॥ तिस जल का जीउ रस है रस को जलै अधार ॥१०॥ सो रस मेरे आसरे मुझ अधार सो आहि ॥ जो मैं वरतो सरब मै तब सभ को दिसटाहि ॥११॥ मंगल छंद ॥ अपनी महिमा तुझ कौ कहौ ॥ सभ कछु आप ही कौ लहौ ॥ सूरज सोम की जो जोत ॥ तिस के आसरे सभ लोक ॥१२॥ तिन को जोत का अधार ॥ जोत मुझ आसरे है यार ॥ यहि गिआंन बेदौ मांहि ॥ सो प्रगास जगत कराहि ॥१३॥ जगत अधार है तिस गिआंन ॥ गिआंन अधार बेद पछांन ॥ बेद आसरे ओअंकार ॥ सो ओअंकार मुझ आधार ॥१४॥ सभ जग आसरे आकास ॥ जिह मै सबद का है बास ॥ आकास सबद आधार ॥ सबद आसरे मुझ यार ॥१५॥ बल आधार सभ जग फिरे ॥ बल आसरे मुझ करै ॥ सभी भूम का जीउ खंड ॥ भूम आसरा तिस बंध ॥१६॥ खंड अधार मेरा अहै ॥ तिस अधार तें वहि रहै ॥ अगनि आधार है संसार ॥ तेज अगनि को आधार ॥१७॥ तेज आधार मेरा होइ ॥ मेरे आधार है सभ कोइ ॥ जीउ का जीउ मुझ कौ जांन ॥ सभ ही मांहि मुझ कौ मांन ॥१८। तपसी तप का आधार ॥ तप मेरे आधार बीचार ॥ अरजन ऐसा मुझ कौ जांन ॥ मुझ कौ जगत के मध मांन ॥१९॥ सोरठा ॥ सभ संसार का बीज मुझ कौ जानौ मीत तूं ॥ ऐसे ही तूं समझ सभ का बीज है आतमा ॥२०॥ चौपई ॥ सनांतन पुरातन मै हौ मीता ॥ जिन यहि सगल पसारा कीता ॥

टीकाकारवाच ॥

नेत्र उघाड़ौ तब जग दिसटावै ॥ मूंदो आख सभ लै होइ जावै ॥२१॥ अंताकरन मै सुपन बतावौ ॥ सुपन तिआग सखोपत मै जावौ ॥ तहा अरूप निरदुंद बिराजौ ॥ सभ का साखी सभ कों साजौ ॥२२॥ जो दीसै सो सगल अकाल ॥ हरि है तरन बिरध है बाल ॥ सभ को रूप बिसन है भाई ॥ एको बिसन दूजा नही पाई ॥२३॥ वही बिसन जब माइआ राचै ॥ वरन आस्रम मै आपे नाचै ॥ आप तें भला अवर कौ जांनै ॥ जीउ दुखी आप कौ मांनै ॥२४॥ जब चाहौ मै पावौ आप ॥ नित अनित का जापो जाप । अनित देह कौ जब वहि मांनै ॥ नित बिसन आप कौ जानै ॥२५॥ वही बिसन फिरि आप ही होवै ॥ आप ते भला जो मन तें खोवै ॥ एक अद्वैत मै भला न बुरा ॥ सो जानै जो प्रभ सो जुड़ा ॥२६॥

श्री भागवानोवाच ॥

दोहरा ॥ तेजो का मै तेज हौ अर बुधो की मै बुध ॥ बलवंतो मै बल मै सिधो की मै सिध ॥२७॥ दोहरा ॥ किसी वसत की कांमनां राखो मन मे नाहि ॥ मोहु न राखौ किसी सौ ऐसे भाखो तांहि ॥२८॥ चउपई ॥ जेते धरम धारी जग मांही ॥ सभ के अंतर मै ही आही ॥ धरम मारग जो मारनहारे ॥ तिन मै कांमदेव मै पिआरे ॥२९॥ तीनो गुन भी मुझ को जानो ॥ अतीत सभहूं ते मुझ को मानो ॥ त्रिगुनमै माइआ मै कीनी ॥ सो माइआ मै जग को दीनी ॥३०॥ तिस माइआ जगत को मोहिओ ॥ माइआ लाग मुझ जानन खोइओ ॥ मै हो परम अबिनासी रूप ॥ सभ ही मुझ सो जानो भूप ॥३१॥ हे अरजन त्रिगुनी जो माइआ ॥ जिन यहि सगला जगत भुलाइआ ॥ अति दुतर है माइआ मेरी ॥ तिस का तरना कठन घनेरी ॥३२॥ जे को मेरी सरनी आवै ॥ सो यहि कठन माइआ तर जावै ॥ मूड़ प्रानी मानुख जो आही ॥ सो यहि माइआ तरते नाही ।३३॥ तिन का रिदा माइआ ने छादा ॥ अगिआन मोहु सो तिन मन बांधा ॥ तिस मैं अंध भए हैं प्रानी

॥ तिन प्रकिरत असुरो की मांनी ॥३४॥ दोहरा ॥ चार प्रकार यिउ आतमां मुझ को सिमरे मीत ॥ गिआंनी जोगी रोगी अरथी यहि चारो धर चीत ॥३५॥ दोहरा ॥ गिआनी सभ ते स्रेसट है जिउ का तिउ मुझ जांन ॥ एको मुझ को देखता गिआनी आप पहिचांन ॥३६॥ दोहरा ॥ गिआंनी इत प्रकार मो मुझ को अति प्रै आंहि ॥ बांछा कछू वहि ना करै मै तिस हिरदे मांहि ॥३७॥ जोगी यहि बिध सिंम्रता मुझ देखन धर चित ॥ रोगी रोग सरीर के अरथी अरथ नमित ॥३८॥ दोहरा ॥ यहि तीनो मुझ अति प्रै मन करि जाप करेन ॥ तीनो महां पुंन आतमां मेरी भगति मन देन ॥३९॥ दोहरा ॥ गिआंनी मेरा आतमां गिआनी मेरा रूप ॥ परम आतमा मुझ जानता वहि भी मुझ सरूप ॥४०॥ दोहरा ॥ गिआंनी सों मुझ प्रीत है यिउ प्रतखि तिस मांहि ॥ मुझ गिआनी मैं भेद नाहि दोनो एको आंहि ॥४१॥ सोरठा ॥ हे अरजन सुन बात आगे तुझ को मै कहों ॥ तुझ संदेहि मिट जात जिस के सुणने बेग ही ॥४२॥ छंद ॥ जोग आदि करि साधन बहुत जनम करते जब बीते ॥ तिह करते अंतह सुध होवै अंतह सुध ते इंद्री जीते ॥ जब इंद्री मन मै लै होवै मन बुध आतम मै लै कीते ॥ तब गिआन मेरा तिस उपजिआ सम लागे तिस वैरी मीते ॥४३॥ दोहरा ॥ जिस गिआन मुझ उपजिओ दिसटी ऐसी तिस होइ ॥ जानै सगला बासदेव दुतीआ नांही कोइ ॥४४॥ दोहरा ॥ द्रिसटा बकता सुरता लेता एको प्रभ जी होइ ॥ बासदेव जिन जांनिआं बासदेव है सोइ ॥४५॥ दोहरा ॥ ऐसा आतमा पुरख विरला जग मै जानीऐ ॥ संसार बिखे दुरलंभ है मुझ सरूप वहि मानीऐ ॥४६॥ दोहरा ॥ अरथ नमित उपासना देवो की जो करै ॥ मो सो होइ है कांमनां प्रीत न मुझ सो धरै ॥४७॥ चौपई ॥ कांमनां नमित देव जो मानै ॥ मेरा गिआंन वहु मूल न जांनै ॥ उपासनां देवो की मन करे ॥ निहचा द्रिड़ सुरो मै धरे ॥४८॥ तिन का रिदा सुरो सो लावो ॥ तिन की प्रीत सुर माहि बढावो ॥ जिस जिस देवता कौ जो जानै

॥ उपासक उपासनां तिस मै ठानें ॥४९॥ पूजा करि करि फल को चाहै ॥ तिसी देवता ते वर पाहै ॥ तिसी देव को मै समझावौ ॥ मांगनहार को फल देवावौ ॥५०॥ जो देवन सो बर को पावै ॥ सो बर अनित नास होइ जावै ॥ जिन की बुधि है महां मलीन ॥ मुझ को तिआग सुरो को चीन ॥५१॥ अराधन पूजा सुरो की करें ॥ सो देवों के लोक जा परें ॥ जब देह छाड देवपुर जावै ॥ देवपुरी तें फेर गिड़ आवै ॥५२॥ जो मुझ को अबगत नही जानैं ॥ बिगत जनमिआ मुझ को मानै ॥ मेरा प्रताप वहु जानै नाही ॥ जो उतम मै सभ तें आही ॥५३॥ मुझ ते उतम अवर न कोई ॥ अबिनासी मै आतम सोई ॥ ऐसा मुझ को जानै नाही ॥ सो है मेरी माइआ माही ॥ वह मूरख मुझ नाहि पछानै ॥ हउ अजनम जनम मुझ मानै ॥५४॥ दोहरा ॥ चउदा ही ब्रहमंड मै जो कुछु वरते जीउ ॥ सभहूं को मै जानता अर सभ ही मै कीउ ॥५५॥ दोहरा ॥ जिन को आगे होवना तिन को जानो मीत ॥ बीते पीछे लोक जो सभ ही मुझ को चीत ॥५६॥ दोहरा ॥ मुझ को ना कोई जानता मैं गोबिंद भगवान ॥ सभ देहो के अंतरे मै ही पुरख प्रधान ॥५७॥ दोहरा ॥ अरजन तूं इक जानता जिउ का तिउ मुझ मीत ॥ संसारी मुझे न जानते भोगो सो तिन प्रीत ॥५८॥ दोहरा ॥ भली वसत को चाहते बुरी वसत तें क्रोध ॥ गिआन हीन कर मूड़ है तिन को नाही बोध ॥५९॥ दोहरा ॥ दुबिधा करि करि आख है जनम मरै वहि नीत ॥ उपजैं बिनसै जगत मै हे अरजन धर चीत ॥६०॥ दोहरा ॥ हे पारथ अब अवर सुन सगल गए तिस पाप ॥ सोई आतम जीउ है तिनह पछाता आप ॥६१॥ सोरठा ॥ करम जोगी सो जांन पंच तीन ते मुकत है ॥ सो मेरे संग मांन जिन निहचा मेरे भजन का ॥६२॥ कवित ॥ मेरे ही आसरे मेरे ही पूजा सो मेरे धिआंन साथ मेरे संग जुड़े हैं ॥ जरा मरन आदि ते सगले जो दुख है अवर पाप देह के तिस के सभ मुड़े हैं ॥ गिआंन के प्रसादि तै जानै मुझ ईसर को मेरा ही सिमरन तिन अंतरि मै फुरे हैं ॥

अधिआतम वहु सभी तें जानैं है मेरे को मेरे पछांने करि अनंद माहि जुड़े है ॥६३॥ दोहरा ॥ अधभूतक अधदेव गिआनी जानै मुझी को ॥ तिस जानन प्रसादि निसदिन रहते मुझी मो ॥ ६४॥ दोहरा ॥ देह तिआंगन के समे मुझ सिम्रिन मै आहि ॥ तिआग करे जब देह का मुझ पदवी को पाहि ॥६५॥ सोरठा ॥ मेरे पद मे आइ जो नर प्रापत होत है ॥ महां परम सुख पाइ सदा रहे वहु मुझ बिखै ॥६६॥

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ धिआइ सपतमो पूरन भइआ ॥ हंस जोग नाम तिह कहिआ ॥ जो सुन धारे मन के माहि ॥ सोई बासदेव जी आहि ॥ संसार भरम तिस दिसटि न आवै ॥ एको बासदेव सभ पावै ॥६७॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रेश्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते गिआन विगिआन योगो नाम सपतमोऽध्याय ॥७॥७५९॥

आगे अध्याय असटवां चलिआ ॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा ॥ अरजन मुख सो यिउ कहै हे पुरखोतम देव ॥ ब्रहम अखर का अरथ किआ तांका आखो भेव ॥१॥ दोहरा ॥ अधिआतम अधभूत अधदेव अधजग तुम भाखहो ॥ आखो तांका भेउ अरथ जांनो तब सांतहो ॥२॥ सोरठा ॥ मधसूदन भगवांन यहि भी कहो क्रिपा करे ॥ छाडन समे प्रान किउ करि तिआगै देह को ॥३॥ दोहरा ॥ तिआग देह का जब करै तउ तेरे पद को जाहि ॥ किह बिधि यहि पदवी लहे मोहि समझावो आहि ॥४॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ अरजन प्रसन जब आखिओ उतर कहें भगवांन ॥ हे अरजन मै ब्रहम हो सभ ते परे मुझ जांन ।५॥ चउपई ॥ सभ ते परे अबिनासी आंही ॥ इह बिधि ब्रहम कहे मुझ मांही ॥ अधिआतम अरथ अखर चौपाई

॥ तिस का लछन सुन रे भाई ॥६॥ आधिआतम नाम जो मेरा गिआन ॥ तिस का अरथ तूं ऐसा जांन ॥ अपने प्रताप ते मुझ प्रताप ॥ अपने गिआंन सौ जापौ जाप ॥७॥ अपनै प्रकास जोत मुझ अहै ॥ मेरा प्रकास सभ बप मैं रहै ॥ ब्रहमा आदि चीटी परजंत ॥ तिन के मधि मै ही वरतंत ॥८॥ सभहूं को उतपत मै करता ॥ करम रेख सभ के सिर धरता ॥ जैसा लिखो मसतक के माहि ॥ तिसी भांति वहि देहि वरताहि ॥९॥ अधिभूत अरथ ॥ चउपई ॥ अब अधिभूतक अरथ सुणावो ॥भूत अरथ ततो को पावो ॥ तिन ततो मै रमिओ राम ॥ यिउ अधिभूत है मेरो नांम ॥१०॥ अधदेव अरथ ॥ अधदेव अरथ अखर पुन जानो ॥ देव नाम होनहार का मानो ॥ तिस होनहार का मै प्रभ आप ॥ अधदेव नाम है मुझ प्रताप ॥११॥ मै ठाकुर सभ सुरो का मीता ॥ सुरो जाप नित मेरा कीता ॥ ताते अधदेव अखर मैं आप ॥ सभ के अंतर रहिआ बिआप ॥१२॥ अधजग अरथ ॥ अधजग मै इह बिध होइआ ॥ जेते जग होवन विच भोइआ ॥ देवता पित्र नमित जो करते ॥ ठाकुर कउ अधिकारी धरते ॥१३॥ सभ जगो का मै अधिकारी ॥ प्रिथमे सभ मुझ नांम उचारी ॥ जिस जग मांहि प्रिथम मुझ पूजै ॥ सफला जग सो सभ को सूझै ॥१४॥ सो सुरपुर को प्रापत होइ ॥ अधजग नाम ऐसा मुझ सोइ ॥ देह भरतांबर नांम मुझ सुनो ॥ सो अरजन तुम सो अब भनों ॥१५॥ सभ तें सुंदर बप मुझ होइ ॥ मुझ बप सारखा देह न कोइ ॥ जो बल मेरी देह मै अहे ॥ तिस के सम अवर नां लहे ॥१६॥ देह धारीओ बिखे स्रेसट आहि ॥ देह भरतांबर मुझ नाम कहाइ ॥ सभ नामो का अरथ तुझ कहा ॥ सभी नाम अपनां मै लहा ॥१७॥ दोहरा ॥ प्रांन छोडने के समै सिमरे मेरो जाप ॥ जब वहु प्रान तिआग है मुझ मै रहै बिआप ॥१८॥ दोहरा ॥ संसा इस मै कछु नही मुझ को प्रापत होइ ॥ जो जीवत मुझ को मिलै मेरा रूप है सोइ ॥१९॥ मंगल छंद ॥ सभ बेद भी यिउ कहै ॥ संसार लोक जो अहै ॥ जो वसत सिंम्रिन करै ॥

तब जीउ तिस मैं धरै ॥२०॥ जब प्रांन तिआगै आंहि ॥ फिर तिस वसत ही को पाहि ॥ तिस कारन तुझ को कहौ ॥ अपनां मित्र तुझ को लहों ॥२१॥ निसदिन सिंम्रि मेरा नाम ॥ सिंम्रिन मांहि करि बिस्रांम ॥ छिन भंग्र देह है मीत ॥ तब तिआग तिस की प्रीत ॥२२॥ किआ जानीऐ कब जाइ ॥ तिस अभिआस ही को पाइ ॥ जो जांनतें मुझ नांम ॥ मुझ मांहि सभ बिस्रांम ॥२३॥ नाम बाझ जो अभिआस ॥ तिस मै सदा दुख को बास ॥ नाम बाझ जो बिस्राम ॥ सो नित दुख ही का काम ॥२४॥ जैसा अभिआस नित को करै ॥ तैसी जोन ही मैं परै ॥ ताते सुनो पारथ गाथ ॥ जुध करो मन के साथ ॥२५॥ मन चलत पकड़ि लिआइ ॥ बुध साथ मन ठहराइ ॥ चेता राख मेरे मांहि ॥ तांतें जोग को तूं पाहि ॥२६॥ यहि जोग करता जोइ ॥ मुझि पावता है सोइ ॥ इस मांहि संसा नांहि ॥ जैसी मति सो गति पाहि ॥२७॥ दोहरा ॥ जिस जैसा अभिआस करि मन राखिआ मुझ मांहि ॥ चितवन मन की सांत करि मुझि धिआन को आहि ॥२८॥ दोहरा ॥ सभ तें परे मैं दिब पुरख किस करि मुझ को पांहि ॥ सरबंगी सभ जानता सनातन पुरातन आहि ॥२९॥ दोहरा ॥ भलिओ ते मै भला हो सभ को आगिआ करो ॥ मुझि अगिआन को ना करै मै सूखम देह धरौ ॥३०॥ उतपत करता स्रिसटि का ऐसा मुझ प्रताप ॥ चित करि चितविआ जाइ ना अचिंत रूप मै आप ॥३१॥ दोहरा ॥ सूरज ते जो आदि ले प्रकास करे जग सोइ ॥ तिन की जोति मै जोति मुझ सो प्रकास मुझ होइ ॥३२॥ दोहरा ॥ ऐसा मुझ पहिचान करि मन सो सिमरे जोइ ॥ जब वहु प्रान तिआगता मुझ को प्रापत होइ ॥३३॥ चउपई ॥ भगत देह तिआगन के समे ॥ मेरे सरूप मैं मन करि रमैं ॥ जनम से आदि नास परजंत ॥ मेरी भगति के माहि वरतंत ॥३४॥ भगति जोग के बल करि प्रानी ॥ देह तिआग मै मेरो धिआंनी ॥ मेरे धिआन ते मुझ को मिले ॥ ऐसे भगत के किलविख सभ टले ॥३५॥ अर जोगीसर भले प्रकार ॥ लिआवै प्रान

त्रिकुटी मै यार ॥ प्रांनो को त्रिकुटी मैं ठाने ॥ दिब पुरख परे ते परे वहि जाने ॥३६॥ तिसी जाप मै प्रान तिआगै ॥ बेग मेरे पद मैं वहु लागै ॥ हे अरजन सभ तेज प्रताप ॥ तुझ कौ कहे सगल मै आप ॥३७॥ अबिनासी बेद बकता जिस कहते ॥ सगले जीउ तिसी मै रहते ॥ सभ प्रानी संसार मै जो हैं ॥ प्रान तिआग तिस प्रापत हो हैं ॥३८॥ नमित पावने तिस के कारन ॥ ब्रहमचरज ब्रहमचारी धारन ॥ तिस पुरख का इह प्रताप ॥ थोड़े मैं कहिओ तिस जाप ॥३९॥ आगे तुझ को अवर सुनावौ ॥ जोगीसर की जुगति बतावौ ॥ ऐसी भांति एक मुझ को चेते ॥ नउ द्वार संजम करि बैठे ॥४०॥ मन को मेरे मांहि वह राखै ॥ प्रानवाइ मसतक मै राखै ॥ जोग जुगति की धारना धारे ॥ ओअं ब्रहम इह जाप उचारें ॥४१॥ ऐसे जाप मै बप को छोड़े ॥ पांच तीन को बंधन तोड़े ॥ मेरी गति को प्रापत होवै ॥ मुझ कौ लाग बप मल धोवै ॥४२॥ दोहरा ॥ प्रिथमे मेरे भगत का वरतंत सुनो तुम मीत ॥ निहचल चेता चित का मुझ मै राखै नीत ॥४३॥ दोहरा ॥ मेरी करै उपासना मेरा नाम नित लेइ ॥ मेरे नाम अधार बिन स्वास न जानै देइ ॥४४॥ दोहरा ॥ तिन को मै सुख देत हों कसट बिना मुझ पाइ ॥ मेरे सुख सो मगन होइ मेरे जोग जुर जाइ ॥४५॥ दोहरा ॥ मुझ बेग वहु पावते सभ दुख तिस के जांहि ॥ जनम मरन तें मुकत होइ सदा रहे मुझ माहि ॥४६॥ दोहरा ॥ संसार जनम अति दुख है सुख नाही तिस कोइ ॥ जिन पुरखो हरि जानिआ यहि जाने है सोइ ॥४७॥ दोहरा ॥ परम पद बैकुंठ जो तिस मैं प्रापत पांहि ॥ ऐसे मुकति के लाभ तें बहुड़ न जग मैं आहि ॥४८॥ कबित ॥ ब्रहमां के लोग लग करमी जीउ जात हैं करमो को भोग करि तहां ते गिड़ि आवे हैं ॥ गिड़ करि संसार मै करमो के भाउ ते वही जीउ करमी फिर जनम पावे हैं ॥ करम अभिमानी की ऐसी गति कही मोहि निर–अभिमानी सो हरि मै समावे हैं ॥ जानै अनित दिन ब्रहमा अर मानसा का थोड़ा अरु बहुत बराबर मन लावे हैं ॥४९॥

चौपई ॥ जिन मुझ गिआन द्रिसटि सो पेखा ॥ तिस का गिआन मुझ ऐसे देखा ॥ ऐसा मन मो करे बीचार ॥ संसार माहि जुग वरतै चार ॥५०॥ चार सहंसर बार जब वरते ॥ एक दिन ब्रहमें का मन धरते ॥ जब बहुड़ चार सहंसर बार ॥ बरते रात्र तबै तिस यार ॥५१॥ जिन नर गिआंन सो मुझे पछानिआ ॥ तिस मुझ भगत ने ऐसा जानिआ ॥ ब्रहमे का दिन न नरो समांन ॥ लघ दीरघ अनित सभ जांन ॥५२॥ जो जो वसत बिनासी होइ ॥ लघ दीरघ एक सम सोइ ॥ जो कछु गिनती के मधि आइआ ॥ सो अनित बेदो ने गाइआ ॥५३॥ इस कारन ते पुरख गिआनी ॥ ब्रहमे नर की अउध सम जानी ॥ अब आगे जो अबगत रूप ॥ तिस की बात सुन अरजन भूप ॥५४॥ तिस मेरी अवगत मै होइ ॥ उतपत दिन ब्रहमे के जोइ ॥ तिस के दिन मै सभ जग होइ ॥ तिस की रात्र मै बिनसै सोइ ॥५५॥ रात्र मांहि स्रिसटि लै करौ ॥ अपनी अबगत मै सभ धरौ ॥ हे अरजन तुम ऐसा जानौ ॥ उतपत स्रिसटि ब्रहमे दिन मानौ ॥५६॥ ऐसे दिनस मांहि जग होइ ॥ रात्र मांहि बिनसै सभ कोइ ॥ ब्रहमे की रात्र परलै भाई ॥ उतपत परलै अनित कहि गाई ॥५७॥ तांते जीउ हाथ कछु नांहि ॥ ईसर की माइआ वरतांहि ॥ सो माइआ मेरे आधीन ॥ अबगत रूप मुझ ऐसा चीन ॥५८॥ वहु सरूप उपजिओ ही नांहि ॥ सभ ते परे सनांतन आंहि ॥ पुरातन ऐसा पुरख है सोइ ॥ जग नास वहु नास न होइ ॥५९॥ हरि अबगत अबिनासी रूप ॥ अखंड अचल अनास अनूप ॥ जिस के लाभ ते दुख मिट जावै ॥ बहुड़ जगत मैं जनम न पावै ॥६०॥ सो परम धांम तुम मेरा जांनो ॥ सभ तें परे गोबिंद को मांनो ॥

टीकाकारवाच ॥

जे को प्रांनी ऐसा जांनें ॥ आपस को जो बंध पहिचांनें ॥६१॥ जानै करता अवर है कोइ ॥ जिस ते प्रगट सभु कछु होइ ॥ जो तिस इछिआ सोई करे ॥ भरे सखारे खाली भरे ॥६२॥ सभु कछु वरतै तिसी रजाइ ॥ जित

भावै तित जीउ को लाइ ॥ जीउ मांहि सकत कछु नांहि ॥ जो तिस भावै सो वरताहि ॥६३॥ तांते आपा बेग तिआगो ॥ तिस के हुकम मै निसदिन लागो ॥ जानो मुझ सो होइ कछु नांही ॥ जो हरि भावै सो वरताही ॥६४॥ ताते एक गोबिंद है भाई ॥ यही बात निआइ कहि गाई ॥ बेदांत अरथ ॥ जो जानो बेदांत का जाप ॥ एको ब्रहम है सभ कछु आप ॥६५॥ तिसते भी दूजा को नांही ॥ एको राखो मन के मांही ॥ मीमांसा अरथ ॥ अरथ मीमांसा का जो जानो ॥ करम बात रिदे मैं मानो ॥६६॥ भले करम तें सुभ तुम पावहु ॥ बुरे करम ते दुख मैं धावहु ॥ बुरा भला तुम तें ही होइ ॥ सुख दुख तुम को देइ न कोइ ॥६७॥ तांते मीमांसा यहि कहै ॥ जैसा बीजै तैसा लहै ॥ सभ किछु है जो तुमरे हाथ ॥ तुम किउ राचो दुतीए साथ ॥६८॥ ब्रहम रूप करम सुभ बोवहु ॥ जैसा बोवहु तैसा होवहु ॥ ताते जो दीसै सो ब्रहम ॥ भला बुरा है मन का करम ॥६९॥ सांख अरथ ॥ अर जो सांख बात चित धरो ॥ नित अनित बिबेक नित करो ॥ ता भी जगत नही एक वही ॥ भरम मांहि जगत सभ अही ॥७०॥ एक ब्रहम सांख कहि गाइओ ॥ द्रिसटमान अनित बताइओ ॥ बसेखक अरथ ॥ जो बसेखक को तुम धारो ॥ सभ आधीन काल बीचारो ॥७१॥ समै माहि जो कछु तुम देखो ॥ साखी सभ मै आप को पेखो ॥ मरन जीवन की सोझी जानो ॥ सीत उसन कौ बेग पछानो ॥७२॥ तुमरी इछिआ समा है भाई ॥ इछिआ नित तुम बीज कहाई ॥ तुमरी इछिआ बीचे होइ ॥ वही समा फिर आवै सोइ ॥७३॥ ताते समां तुझ इछिआ मांहि ॥ दूजा नही समा एक आंहि ॥ तुम अर इछिआ एको आही ॥ जैसे बिरछ मांहि परछांही ॥७४॥ ताते एक ब्रहम है मीत ॥ ब्रहम इछ एको है नीत ॥ पातंजल अरथ ॥ जो पातंजल पर चित धरे ॥ जोग मारग को तूं नित करे ॥७५॥ दसवे चड़ाइ जोत को देखे ॥ सो भी एक आप को पेखे ॥ ऐसा है तूं पूरन प्रांनी ॥ उदम करि करि जोत तुम जांनी ॥७६॥ प्रिथम जोत के तुम हो मीता ॥

जिन देखन का उदम कीता ॥ अपने खिआल सभ जोत बनाई ॥ तूं देखे तब देहि दिखाई ॥७७॥ सभ का देखनहार तूं आप ॥ सरब मांहि तूं रहिओ बिआप ॥ सरब नही तूं गोबिंद एक ॥ एको तूं जिस ते अनेक ॥७८॥ तातें निरबचनी यहि बात ॥ खालसे मांहि कही अब सांत ॥ खालसा वही जो एको जाने ॥ जगत आप गोबिंद एक माने ॥७९॥

श्री भगवानोवाच ॥

सोरठा ॥ अबगत सरूप की बात हे पारथ तुझ को कहो ॥ अब तूं सुन हे तात जिस प्रकार ते लाभ हो ॥८०॥ दोहरा ॥ अबगत सरूप सभ तें परै कठन पावै तिस कोइ ॥ अखंड भगत मै जुड़ रहे तिस को पावै सोइ ॥८१॥ अखंड भगत का अरथ यहि जो जाने सभ एक ॥ आठ पहर नां देखता मुझ अबगत बिन्रेक ॥८२॥ दोहरा ॥ स्वास न लेता मुझ बिनां सुने नही बीआ बात ॥ सुने सुनावै मुझ कथा चितवे मेरी गाथ ॥८३॥ दोहरा ॥ मेरे बचन ते बाहरा स्वास न लेता कोइ ॥ इसी भांत जो वरतदा अटल भगत है सोइ ॥८४॥ दोहरा ॥ ऐसी भगति अति स्रेसट है तिस ते पावै मोहि ॥ मेरे ते सभ उपज है फेर लीन मुझ होइ ॥८५॥ दोहरा ॥ यहि मेरा परताप जो तुझ को कहा बखांन ॥ कहौ जोगीसर की कथा तिस दो मारग जान ॥८६॥ चौपई ॥ एक जोगी देह को तिआग ॥ मुझ ब्रहम संग रहता लाग ॥ मुझ कौ प्रापत होवहि जोगी ॥ जिन देखिआ एक हरि सभ लोगी ॥८७॥ एक चंद्रमा की जोत परजंत ॥ जावै गिरे फिर जग वरतंत ॥ तिन की जुगत विसथार करि सुनो ॥ हे अरजन जैसे अब भनौ ॥८८॥ वहु जोगी है इछिआ चारी ॥ आवन जावन इछिआ धारी ॥ जब इछिआ तिह मुकति की होइ ॥ देहि तिआग मुझ मिलते सोइ ॥८९॥ मेरे मांहि वहु लीन ही रहै ॥ जनम मरन का मारग दहै ॥ छाडन देह वहि ऐसी भांत ॥ सुन वरतंत जिह आवै सांत ॥९०॥ सुकल पख पित्रों का लहौ ॥ देवता दिवस अवर अब कहौ ॥ जब सूरज उतराइण आवै ॥ सोई देवों का

दिवस कहावै ॥९१॥ जब छै मास दखणांइण जावै ॥ देवो की वहु रात्र कहावै ॥ वहु जोगी देवों दिन मांही ॥ देह तिआग ब्रहमपुर मैं जाही ॥९२॥ प्रोजन तिन का अब सुन लेहि ॥ सुकल पख जो तिआगै देहि ॥ देवतिओ के लोको के मांहि ॥ तिन के लोक देखते जाहि ॥९३॥ देव दिन समें तिन कौ देखै ॥ देवन का मारग सभ पेखै ॥ वहि मारग को देख तिआगे ॥ अनित जांन ब्रहम संग लागे ॥९४॥ मुझ ब्रहम मै लीन जब होइ ॥ संसार मै बहुड़ ना आवै सोइ ॥ ब्रहम पहिचान ब्रहम होइ गइआ ॥ आवागवन जगत ते रहिआ ॥९५॥ दोहरा ॥ अब जो फिर जग आवता तां की आखो बात ॥ देहि तिआगे किसन पख जो सुर पित्रो रात ॥९६॥ दोहरा ॥ सूरज दखण होत है जब वहि तिआगे देह ॥ सो देवो की रात्र है हे अरजन सुन लेह ॥९७॥ दोहरा ॥ जोगी देह तिआग के सोम जोति मै जाइ ॥ तहां सुरन का मंद्र है ता मै प्रापत पाइ ॥९८॥ दोहरा ॥ तहां प्रापत जो भइआ बहुड़ गिड़े जग मांहि ॥ जनम लेत संसार मै करमो ही को पाहि ॥९९॥ चौपई ॥ दो मारग जोगी के मीता ॥ तिन का नाम सुनो दे चीता ॥ एक मारग सुकल गत कहीऐ ॥ तिस ते ब्रहम पदारथ लहीऐ ॥१००॥ दुतीआ मारग किसन गत जानौ ॥ जिस ते जोगी गिड़िआ मानौ ॥ पुरातन मै दो मारग कहीऐ ॥ तिन की गत भिंन भिंन लहीऐ ॥१०१॥ एक मारग ते मुकत को पावै ॥ दुती मारग ते फिर जनम आवै ॥ हे पारथ दो गति तुझ आखी ॥ जिन सुण समझी रिद मै राखी ॥१०२॥ सो जोगी ऐसी गति पावै ॥ माइआ करि मोहिआ नही जावै ॥ रैन दिनस मुझ जोग कमांवै ॥ मेरे जोग ते मुकति को पावै ॥१०३॥

टीकाकारवाच ॥

टीकाकार अबै यिउ आखै ॥ अरथ सुकल किसन का भाखै ॥ दो पख अरजन को प्रभ कहे ॥ तिन का अरथ मै ऐसे लहे ॥१०४॥ प्रिथम सुकल अरथ यिउ कहौ ॥ सुकल नाम चांदन का लहौ ॥ चांदन अरथ गिआन धर

चीत ॥ गिआंन मै बप जो तिआगै मीत ॥१०५॥ तिस प्रसादि सुरलोक वहु देखै ॥ तिन कौ देख अनित सभ पेखै ॥ सुरग बैकुंठ माहि ना रहे ॥ ब्रहम प्रापत जोगी लहे ॥१०६॥ ब्रहम जांन ब्रहम होइ जावै ॥ ब्रहम मिलै फिर जनम न आवै ॥ जिउ बूंद भिंन सागर ते होइ ॥ पानी बूंद कहै सभ कोइ ॥१०७॥ नांम बूंद तिस ते नही जाइ ॥ जब लग सागर मिलै न धाइ ॥ जब वहि बूंद सागर मै मिलै ॥ वही बूंद सागर होइ चलै ॥१०८॥ बूंद नाम तब कहै न कोइ ॥ वही बूंद सागर ही होइ ॥ बूंद सागर पांनी एको भाई ॥ गिआन नेत्र मै एक द्रिसटाई ॥१०९॥ आप मांहि ऐसी लिव लावहु ॥ बूंद मांहि सागर को पावहु ॥ तब जीउ बुध का नाम न रहै ॥ एको ब्रहम आप को लहै ॥११०॥ तैसे गिआंन मांहि बप तिआगै ॥ सो तो ब्रहम निरगुन मैं लागै ॥ तहां लाग फिर जनम न धारे ॥ बूंद विसार सागर वीचारे ॥१११॥ जिस मो भगत तिआग अर गिआंन ॥ भांन गिआंन उतराइण मांन ॥ गिआनी नर मैं चाहि न कोइ ॥ जीवत मुकत ब्रहम वहि सोइ ॥११२॥ सुकल पख उतम पुंन होइ ॥ दिवस पित्रो का कहीऐ सोइ ॥ सुर को अरथ गिआनी जांनो ॥ आतम रमे सो सुर तुम मांनो ॥११३॥ किसन पख का अरथ इहु भइआ ॥ अरथ सिआम किसन का लइआ ॥ अंधकार जड़ रूप है भाई ॥ सो देवो की रात्र कहाई ॥११४॥ जड़ को अरथ करम चित धरो ॥ करम मांहि ब्रहम ते गिड़ो ॥ बप जो तिआगे करमो मांही ॥ चंद लोक मै सुकल हो जाही ॥११५॥ वहु बीरज बरखा संग करै ॥ बहुड़ आंन धरती पर पड़ै ॥ सो बीरज फिर अंन होइ जावै ॥ तिस को काट करि सभ जग खावै ॥११६॥ जो खावै तिस बीरज होइ ॥ वही बीरज फिर जनमै सोइ ॥ किसन पख जो देह तिआगे ॥ आवागवन मांहि सो लागे ॥११७॥ करम सिआंम रूप है सोइ ॥ अगिआंन मांहि करम सभ होइ ॥ गिआंन बात को चित न धरै ॥ क्रिसन पख मै सहजे मरै ॥११८॥ तपसिआ वरत होइ जिह माहि ॥ सो करम पख दखणाइण मांहि ॥ तां ते फिर वहि जग

महि आइ ॥ भूप होइ करमो को पाइ ॥११९॥ भोग राज फिर नरके जाइ ॥ ऐसे ही आवै अर जाइ ॥ खालसे मांहि ऐसे अब भाखौ ॥ अकाल जाप तिन को नित आखौ ॥१२०॥ तुम भी सगल गिआन को धारो ॥ अकाल सरब के मध बीचारो ॥ सभ मै तुम भी आप को जानौ ॥ आप मध अकाल पहिचानौ ॥१२१॥ जो अकाल है तुमरे मांहि ॥ तुम नाही अकाल ही आंहि ॥ जब अकाल एक तुम जांनिआ ॥ अकाल माहि आप को मानिआं ॥१२२॥ अब तुम मुकत सगल ही होवहु ॥ अगिआंन क्रिसन पख कौ खोवहु ॥ ऐसा बासदेव जी कहिओ ॥ अपने मन मै अरजन लहिओ ॥१२३॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ फल इस अठवे धिआइ का ऐसे तू चित लाइ ॥ जे को सुने अथवा पड़े सो इत पद को पाइ ॥१२४॥ कवित ॥ चारो बेद पड़े ते सरब जग करे ते तीरथो के नाए ते जो कछु फल पावे है ॥ पुंन अनिक धरे ते अनाथ उदर भरे ते रण म्रित पाए ते जो अपसरा रमावे है ॥ तिन तें अवसेख फल जो को यहि ब्रहम विदिआ पड़े सुणें अर धारे समझावे है ॥ पावै वहु ऐसा नर पदवी मुझ ब्रहम की ब्रहम माहि लीन होइ सुख सो समावे है ॥१२५॥

टीकाकारवाच ॥

चउपई ॥ अठवां धिआउ अति निरमल रीत ॥ भाखिआ कही तिन की हे मीत ॥ जे को पड़े अर मन मै धारे ॥ ब्रहम विदिआ कौ नित वीचारे ॥ मुकति पावे है ऐसा सोइ ॥ सो भी आप ब्रहम ही होइ ॥१२६॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते अखर ब्रहम योगो नाम असटमोऽध्याय ॥८॥८८५॥

आगे अध्याय नावां चलिआ ॥

श्री भगवानोवाच ॥

सोरठा ॥ बोले सिरी भगवांन अरजन पिआरे मीत सो ॥ सुन पारथ यहि गिआन गुहज ते गुहज मै कहत हों ॥१॥ दोहरा ॥ तुझ कौ कहो इस कारनें जो तूं मेरा मीत ॥ मो भाखन निंदिआ ना करे सति सति माने नीत ॥२॥ कवित ॥ जेती है बिदिआ सभहूं को भूप एहु गुहज बात सगल ते उतम यहि गिआंन है ॥ अगम तें अगम जांन अगम की पहिचांन मांन जिस के उचरे अरु सुने ते अगम पुरख मांन है ॥ अबिनासी सुख प्रापत होइ जे को मन धारे सुन महिमां इस गिआंन की स्रेसट प्रधान है ॥ तिस के मन धारे तें बप सों निआरा मांन अपने ही आप मै देखै हरि भांन है ॥३॥ दोहरा ॥ जो यहि गिआंन न पावते ऐसी है तिह बात ॥ मुकत न होते देह मै आवागवन भ्रमात ॥४॥ दोहरा ॥ बार बार संसार मै जनमे मरे वहु नीत ॥ बिन सरधा मेरे गिआंन की मुकति न पावै मीत ॥५॥ दोहरा ॥ हे अरजन तूं अवर सुन त्रै बिधि मेरो रूप ॥ प्रिथमे अबिगत दुती वैराट त्रितीऐ क्रिसन सरूप ॥६॥ सोरठा ॥ अबगत रूप अपार सभ कछु प्रगट तिन कीआ ॥ नांनां बिधि संसार उपजिओ है सभ तिसी सो ॥७॥ सोरठा ॥ बैराठ भूप मुझ जांन धार रहिआ है सरब को ॥ सो है महां प्रधांन एक सरीर सभ जगत है ॥८॥ सोरठा ॥ इक सरूप इह पेख अपने रथ का सारथी ॥ परतख मुझ कों देख गिआन उपदेसो भगत को ॥९॥ अड़ल ॥ सरब जगत का ईसर सभ का बीज मै ॥ सभहूं के मध वरतौ रहौ अबीज मै ॥ निरलेप निआरौ वसौ उपजावौ सरब कौ ॥ जैसे पउन नित रहै अकास के उदर मौ ॥ अकास नांहि सो परसे तैसे जांन मुझ ॥ इस बिधि बीज निआरा भाखो मीत तुझ ॥१०॥ दोहरा ॥ उतपति करों सभ जगत कौ लेप न लागे मो ॥ सदा निरलेपी रहा मै उपजावां सभ को ॥११॥ मंगल छंद ॥ हे कुंती सुत तुझ को कहौ ॥ तुझ को मित्र अपना लहौं ॥ कलपंत की यहि बात ॥ महां प्रलै जब हो तात ॥१२॥ तब

सगल प्रानी जो ॥ लीन माइआ के मध हो ॥ सो माइआ मुझ मै रहै ॥ अरथ माइआ का इछ अहै ॥१३॥ जब बहुड़ इछा मै करौ ॥ आदि रूप अपनां धरौ ॥ जो इछ माइआ रूप ॥ संसार इछ सरूप ॥१४॥ सिरजो जगत माइआ साथ ॥ सभ ब्रहमंड का मै नाथ ॥ सो ब्रहमंड आप बस नांहि ॥ मेरी माइआ के बस आहि ॥१५॥ जो कछु करै प्रानी को ॥ तिस कौ लेप नाही हो ॥ मुझ इछ वरते मीत ॥ सभ करम माइआ रीत ॥१६॥ अब सुन धनंजै यार ॥ सिरजै अनिक बिधि संसार ॥ रचनां रचौ प्रितपालौं ॥ संखारों आप मै डालौं ॥१७॥ लागै नांहि मुझ को लेप ॥ रहता सरब मध अलेप ॥ अब निरलेप गति तुम सुनों ॥ हे अरजन जैसे भनों ॥१८॥ मम मोह नाही करौ ॥ उदासी रीत अपनी धरौ ॥ संसार ते जो उदास ॥ निरलेप जानो तास ॥१९॥ जो उदास जगत ते रहै ॥ तिस बंधन को ना लहै ॥ हे सखे यिउ धर चीत ॥ उदासी होहि तूं नीत ॥ तब को लेप तुझ ना लगै ॥ मम मोह तुझि सो भगै ॥२०॥ दोहरा ॥ अब मेरी बिरथा सुनौ जो मै कैसा मीत ॥ इसथावर जंगम जगत सभ माइआ मेरी कीत ॥२१॥ दोहरा ॥ उपजन ठउर संसार की मुझ सो अवर न जांन ॥ मुझ ते स्रेसट अवर को हे अरजन मत मान ॥२२॥ दोहरा ॥ बिराजो तेरे रथ बिखै मै प्रभ त्रिभवण नाथ ॥ जो कछु द्रिसटी आवता एको मैं सभ साथ ॥२३॥ दोहरा ॥ मुझ ईसर भगवांन को मूरख मूड़ अर अग ॥ मानुख रूप जो धारिआ पेखन नही करतग ॥२४॥ दोहरा ॥ जानै नही प्रताप मुझ पहिचानै नाही कोइ ॥ कहै किसन इक बप है अवर देहि जिउ होइ ॥२५॥ दोहरा ॥ तिन का फल तूं सुन सखे किआ पावै वहु लोक ॥ रहे गिआन ते हीन वहु बूडे सागर सोक ॥२६॥ दोहरा ॥ करम भले जो वहु करै तिन का फल दुख होइ ॥ गिआन सुनै अर पड़ै बहु रिदै न आवै सोइ ॥२७॥ दोहरा ॥ मुझे पहिचांने नाहि जो सो अगिआंनी मूड़ ॥ राखस दैत प्रकिरति तिह मोहे है सुन कूड़ ॥२८॥ दोहरा ॥ देवी प्रकरति

जिह नरो की सो है पुरख सुजान ॥ जैसा है प्रताप मुझ सो वहि ऐसा जान ॥२९॥ दोहरा ॥ मेरे पहिचानै बिना करे करम जो कोइ ॥ सोई करम तिस बंध है जनमै मरता सोइ ॥३०॥ दोहरा ॥ जिन मुझ को पहिचानिआं करम न करते जोइ ॥ अघाइ रहे हरि देख कै अवर चाहि नही कोइ ॥३१॥ दोहरा ॥ मुझ को ईसर जांन कै सिंम्रन मन मो धार ॥ इसथावर जंगम जगत के मुझ कौ आदि बीचार ॥३२॥ अबिनासी मुझ जान के नित सिंमरन मुझ करे ॥ निरंतर जपै गोबिंद कौ निहचा तिस मै धरे ॥३३॥ दोहरा ॥ पूजा मेरी करे वहु प्रेम भगत के साथ ॥ बारं बार नमसकार करि गावै मेरी गाथ ॥३४॥ दोहरा ॥ इत प्रकार नित जुगति सो देवी पुरख है जो ॥ दूजी गिआनी की कथा अब कहत हौं सो ॥३५॥ सोरठा ॥ गिआंनी मेरा भगत गिआंन जग करि पूजता ॥ गिआंनी अंम्रित को लगत जैसा हौ तैसा कहे ॥३६॥ कवित ॥ परम ब्रहम ईसर ते रचनां है रंगा रंग बहुते प्रकार एकु ईसुर बिआपिआ जी ॥ कारन कारज वही जग होम सभ वही करता तिस जग का एको प्रभु जापिआ जी ॥ समग्री अर धर वही मंत्र जग कर वही होम होमनहार वही सभी आप थापिआ जी ॥ ऐसे मुझ ब्रहम कौ जाने वही गिआंनी नर तिस के बीचार सो मगन हो ध्रापिआ जी ॥३७॥ चउपई ॥ हे अरजन तूं ऐसे जांन ॥ पितामा जगत का मुझ को मांन ॥ माता धाता सभ का मै हौ ॥ बांधव पिता सभ जग को कहहौ ॥३८॥ बेदो बिखै जो है ओअंकार ॥ सो भी मै हौ अरजन यार ॥ तीनो बेद भी मुझ को जानौ ॥ संसार प्रकिरत सभ मुझ सौ मानौ ॥३९॥ सभ का साखी मै हो पिआरे ॥ भजने जोग सभ नाम हमारे ॥ जो दीसै सो सभ मै आप ॥ सरब होइ मै रहा बिआप ॥४०॥ सभ जग मुझ ते उपजत पारथ ॥ सभ की परलै करौं जथारथ ॥ फिर सभ लीन आप मैं करौ ॥ कउतक अपनां आप मै धरों ॥४१॥ पूरन सभ बातो मुझ जानौ ॥ सभ का बीज इक मुझ कौ मानौ ॥ सूरज होइ तपावो ताप ॥ बरखौ जल

मेघ होइ आप ॥४२॥ संसार आप मै प्रगट करौ ॥ संखारौ फिर आप मै धरौ ॥ सुरगुन अमर मुझी तें जांन ॥ मिरत संसार की मुझ सो मांन ॥४३॥ अवर सुनौ अब अरजन मीत ॥ धरम अरथ मोख की रीत ॥ त्रिबिधि बिदिआ इहु जग कहावै ॥ करनहार तिस ते सुख पावै ॥४४॥ जो यहि जग करि मुझ कौ पूजै ॥ तिस की बात तिसी मै बूझै ॥ सुमति नामां इक जग है मीता ॥ तिस करि मुझ तिस पूजन कीता ॥४५॥ पूजा करि मांगे फल तिस के ॥ स्वरग प्रापति होवै उस के ॥ स्वरग माहि जाइ प्रापत होइ ॥ इंद्री भोग भोगे बहु सोइ ॥४६॥ मिरजादा पुंन होवै जिस जेती ॥ अति सुख भोगै देवो सेती ॥ तिस का पुंन खीण जब होइ ॥ जोन मानुख फिर पावै सोइ ॥४७॥ इत प्रकार त्रैबिधि जब करै ॥ तिन का फल नित मन मो धरै ॥ स्वरग जाइ वहु बहुड़ गिड़ आवै ॥ आवागवन नित वहि पावै ॥४८॥ सकाम करम ते नित दुख लहै ॥ नित जनम मरन मै रहै ॥ कांमनां मै दुखी है नित ॥ सुख नाही तिस चलता चित ॥४९॥ दोहरा ॥ कांमनां जिस को कछू नाहि निहकांम करे वहि भगति ॥ मन का चेता मुझ बिखै सुखी रहै वहु जगत ॥५०॥ सोरठा ॥ अचाह अर निहचल बुध ऐसा मेरा भगत जो ॥ सो है निरमल सुध चहूं ओर तिस के फिरो ॥५१॥ दोहरा ॥ तिस के सभ कलिआन को फिरता रहौ मै मीत ॥ तिस का अब दिसटांत यहि सुन करि राखो चीत ॥५२॥ दोहरा ॥ जैसे घर धंनवंत के पाहरू चउकी देह ॥ तैसे ही मै भगत की रखिआ नित करेह ॥५३॥ दोहरा ॥ आठ पहर तिस सो फिरों ऐसा मुझ कौ जांन ॥ जिउ तूं मेरा भगत है देवो तुझ कलिआन ॥५४॥ सोरठा ॥ ऐसे देख तूं आप तुझ रखिआ को सावधांन ॥ रथ तेरे पर बिआप सभ दिन देह तुझ राखता ॥५५॥ दोहरा ॥ तेरे देह अर रथ की रखिआ करौ मै मीत ॥ मन तुझ रखिआ यिउ करौ तिस की आखौ रीत ॥५६॥ अपनी महिमां सुनाइ तुझ नित राख हो ॥ ऐसा तूं चित लाइ सभ बिधि रखिआ तुझ करौ ॥५७॥ चउपई ॥ अब देव उपासक की

सुन बात ॥ जो देव उपासक हैं रे तात ॥ सरधा संजुगत देव को पूजैं ॥ अपने फल ते देव ते सूझै ॥५८॥ देव पूजा भी मेरी जान ॥ जो दीसै सो मुझ कौ मांन ॥ मुझे छाड देव चित धरे ॥ ते चतर नाहि भूल के करे ॥५९॥ कैसे भूलै वहु पूजारी ॥ जो जगों का मै हितकारी ॥ भोगता सरब जगत का मै हौ ॥ सभ का प्रभू आप को लै हौ ॥६०॥ प्रिथम पूजा सभ मेरी होइ ॥ मुझ पूजा तोखे सभ कोइ ॥ ऐसा मुझै पहिचानै नाही ॥ फिर देवो की पूज करांही ॥६१॥ तिस पूजा तें जनमे मरे ॥ सकाम पूज ते भ्रमता फिरै ॥ जनम मरन पावै वहु नीत ॥ तिस पूजारी की यहि रीत ॥६२॥ अवर प्रगट तुझ बात सुनावौ ॥ देव पूजा का लाभ बतावौ ॥ देवता कौ पूजै जे कोइ ॥ सो देव लोक मैं प्रापत होइ ॥६३॥ रहे तहा जेता पुंन होइ ॥ पुंन खीण गिड़े है सोइ ॥ पित्रौ को जो पूजनहार ॥ पित्रलोक मै तिसे बीचार ॥६४॥ भूत प्रेत जो पूजनहारे ॥ सो तिन के लोको माहि सधारे ॥ जैसी मति तैसी तिह गत ॥ यही बात जानो तुम सत ॥६५॥ ब्रहम पूज बिन मुकत न होइ ॥ ब्रहम पूजै सो ब्रहम है सोइ ॥ आगै अरजन तुझ आखौ बात ॥ प्रितमां पूजनहार की गाथ ॥६६॥ प्रितमां सालग्राम की होइ ॥ अथवा धात पखांन की जोइ ॥ मुझ कौ निसचे उस मो जानै ॥ मेरी प्रितमां की पूजा मानै ॥६७॥ सरधा संजुगत पूजै मुझ तांई ॥ मै तिस का दीआ भोजन खांई ॥ तिस कारन ते हे कुंती सुत ॥ ऐसी सुन तूं मेरी मत ॥६८॥ जो कछु करे अरु भोजन खावै ॥ होम वसत जो तेज मै पावै ॥ सभी समरपै मुझ कौ आप ॥ तिस के फल का सुन प्रताप ॥६९॥ संसार माहि भला अर बुरा ॥ इन दो बंधन मै जग जुड़ा ॥ तिन बंधन ते मुकता होवै ॥ मुकत आसन पहि निसदिन सोवै ॥७०॥ जिस गत कौ संनिआसी जांहि ॥ सो गत अरजन तूं भी पांहि ॥

टीकाकारवाच ॥

अब आगै यिउ टीकाकार ॥ प्रितमां अरथ कहै बीचार ॥७१॥ जे को गिआंन की बात न मानै ॥ करम जोग को मूल न जांनै ॥ सो तो अधम पुरख है भोगी ॥ उतम गिआंनी मधम जोगी ॥७२॥ अधम पुरख कौ प्रितमा दीजै ॥ प्रितमा संग प्रीत तिह कीजै ॥ जब वहु प्रीत प्रितमां सों करे ॥ सहजे करमजोग चित धरे ॥७३॥ करमजोग ते गिआन कौ पावै ॥ गिआन पाइ मुकत होइ जावै ॥ तांते प्रितमां की सुन बात ॥ बेदो मांहि कही यहि गाथ ॥७४॥ सतजुग का जुग पूरन भइआ ॥ त्रेताजुग बेद तब कहिआ ॥ बुध मलीन नरौ की होई ॥ निरमल बुध अपनी तिस खोई ॥७५॥ सरूप अपनें ते भूल वहु गए ॥ प्रभ खोजन ते नउनिधि लहै ॥ जे को तिन को गिआंन बतावै ॥ तिन के हिरदै गिआंन न आवै ॥७६॥ करमजोग करे वहु नांही ॥ कहै अउध अलप सी आही ॥ प्रभ को ढूढत जब वहु फिरे ॥ तब ब्रहमे बचन इहु करे ॥७७॥ धात पखान की प्रितमां साजो ॥ तिन के धिआंन मै नित बिराजो ॥ चिरंकाल धिआन तिन करा ॥ ऐसा तिन तब मन मौ धरा ॥७८॥ कहे रिदे मै ऐसी बात ॥ प्रितमां किआ पूजै हम सात ॥ नेत्र नास जो प्रितमां मांही ॥ सो सभ इंद्री मुझ मै आही ॥७९॥ मुख सीस प्रितमां जो अहै ॥ सो नित वहु भी मुझ मै रहै ॥ जो कछु प्रितमां मै मुझ देखिआ ॥ वसेख प्रितमां ते आप को पेखिआ ॥८०॥ बोलै नाही जड़ द्रिसट आवै ॥ मै चईतन जो सभ को पावै ॥ जब चईतन तिस आप कौ मानिआ ॥ साखी जड़ चईतन को जांनिआ ॥८१॥ कहे सभी कछु मुझ सो अहै ॥ जैसे सुपन तें सभ कछु लहै ॥ जग आप मै सुपनां जानै ॥ देखनहार आप कौ मांनै ॥८२॥ तब अपनां सरूप तिह पाइआ ॥ गिआंन पाइ करि भरम गवाइआ ॥ तिस दिसटांत बहुड़ अब कहौ ॥ जैसा सांख बेद मो लहौ ॥८३॥ भंग दुख यिउ मुख कौ होइ ॥

टेडा मुख होवै तब सोइ ॥ वैद तिन कौ यहि जुगति बतावै ॥ छै मास दरपन दिखरावै ॥ दरपन देख वहु मुख कौ फेरै ॥ ऐसे करत तैसे जब धरै ॥८४॥ तब मुख सीधा तिन का होइ ॥ जैसा था पावै है सोइ ॥ तिउ मलीन रिदा जिस होइ ॥ गिआंन बात न समझै सोइ ॥८५॥ करमजोग पर चित न धरै ॥ मोह लोभ मै निसदिन फिरै ॥ तिन को प्रितमां पूज कही है ॥ बेद मांहि यहि बात लही है ॥८६॥ अरजन मोहि सो मोहित भइआ ॥ प्रितमां पूजन तब हरि कहिआ ॥ अब आगै प्रभ अवर सुनावै ॥ अपना प्रताप अरजन पै गावै ॥८७॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ देव उपासक साथ वैर भाउ मै न करों ॥ सभ को एक समांन ऐसे मन अपनें धरौ ॥८८॥ दोहरा ॥ प्रीत नही मै किसी सो वैर न काहूसाथ ॥ जो मेरा सिमरन करै बेग गहौ तिह हाथ ॥८९॥ दोहरा ॥ हे अरजन अब अवर सुन जे को मूरख अग ॥ बुरे करम करता रहे नाही तिस को तग ॥९०॥ दोहरा ॥ किसी समे अति प्रेम सों मुझ को जपता सोइ ॥ मुखौ कहे हे महांराज मै जैसा कैसा तोहि ॥९१॥ दोहरा ॥ तिस कौ भी तूं साध जान हे अरजन परधान ॥ जिस का निहचा मुझ बिखै सोई साध परवान ॥९२॥ दोहरा । तिस का अब दिसटांत सुन जैसे ईधन ढेर ॥ जब उस पहुचे टुक अगन जलत न लागै बेर ॥९३॥ दोहरा ॥ तैसे मेरे भजन तें पाप होहि सभ नास ॥ तातकाल मुझ भजन तें पावै मुझ मैं बास ॥९४॥ सोरठा ॥ हे कुंती सुत जांन नास न मेरे भगत का ॥ भगतो उपजै गिआंन गिआंन पाइ मुझ को मिलै ॥९५॥ सोरठा ॥ पाप जोन जो आहि इसत्री सूदर बैस भी ॥ वहु भी मुकते जान जब मुझ करे उपासनां ॥९६॥ सोरठा ॥ ते भी परम गति पाहि मेरे पद को आवते ॥

पुंन जनम जो आहि खत्री ब्रहमन राज रिख ॥९७॥ दोहरा ॥ तिन किरतारथ होवना किआ असचरज है मीत ॥ अरजन यहि मानुख देह उतम धर तूं चीत ॥९८॥ दोहरा ॥ सुख नाही इस देह मैं ता को गिड़िआ जांन ॥ सदा रहो मुझ भजन मै तिस ते पावै गिआन ॥९९॥ दोहरा ॥ मन का चेता मुझ बिखे यही भजन तूं जांन ॥ मेरा भगत तूं होइ करि पूजो मुझ करि गिआंन ॥१००॥ दोहरा ॥ इत प्रकार मुझ भगति करि मन राखो मुझ मांहि ॥ जैसे जल सो जल मिलै तिउ तूं मुझै मिलांहि ॥१०१॥ चउपई ॥ नउमौ धिआइ संपूरन भइआ ॥ विदिआ राज नाम तिहं लहिआ ॥ जे को सुने अर मन मो धारे ॥ सो भगवांन को अति हैं पिआरे ॥१०२॥ धिआवनहार भगवांन हैं आप ॥ जापै वही सभ अपनां जाप ॥ एक गोबिंद सभी कछु आप ॥ बाजीधार विच रहिआ बिआप ॥ बाजी बाजीगर है एक ॥ तिसी एक सो होइ अनेक ॥१०३॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते राज विदिआ राज गुह्य योगो नाम नवमोऽध्याय ॥९॥९८८॥

आगे अध्याय दसवां चलिआ ॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ हे अरजन तूं अवर सुन तुझ आखों यहि रीत ॥ जो तूं मेरा भगत हैं सुणने की तुझ प्रीत ॥१॥ दोहरा ॥ तुझ कलिआंन नमित मै

अपनां कहौ प्रताप ॥ ब्रहमां रुद्र अर देवता नां जाणै यहि जाप ॥२॥ सोरठा ॥ सपत रिख ते आदि रिख मुझ प्रताप नही जांनते ॥ रिख अर देव मानुख सभ उपजे हैं मुझी सो ॥३॥ चउपई ॥ एह बात प्रगट सभ मानै ॥ कारन कारज गत नही जानै ॥ जो सुत पित ते उपजत भइओ ॥ पित की महिमां को नही लहिओ ॥४॥ सरबमई को मैं उपजाइआ ॥ मुझ प्रताप किसही नही पाइआ ॥ इत कारन सभ देव रिखीसर ॥ नां जांनत महिमां मुझ ईसर ॥५॥ अब अरजन सुन मुझ प्रताप ॥ जिस के सुने मिटै संताप ॥ जनम रहत जो मुझ को जांनै ॥ सभ लोको का ईसर मांनै ॥६॥ जिनहूं ऐसा मन मो जानिआ ॥ मुकत पाप तें वही पछानिआ ॥ तीस प्रकार के लछन मांहि ॥ भूत प्रानी सगले बरतांहि ॥ हउ तीसो तें निआरा भाई ॥ तीसों जुगति कहों प्रगटाई ॥७॥ छंद ॥ बुध गिआंन मोह अर खिमां इंद्री जीतन बोलन सत ॥ उपजन खपन अर भै निरभैता दइआ संतोख अर समता मत ॥ सुख दुख अर दांन तपसिआ जस अपजस अर क्रोध ममत ॥ हरख सोग राग द्वैख अहंकार लोभ मतसर अर जत ॥ तीसवी निंदिआ इह सभ लछन इस मांही सभ देह वरतंत ॥ मै निआरा तीसो ते अरजन मुझ प्रताप की ऐसी गत ॥८॥ मंगल छंद ॥ अब जांन ले तूं मीत ॥ मुझ बात धर तूं चीत ॥ हउ पुरख अपर अपार ॥ ब्रहमा भइओ मुझ ते यार ॥९॥ ब्रहमा उपजिओ जब मीत ॥ मनसा स्रिसटि की तिन कीत ॥ सपत रिख उपजत भए ॥ मन चार उतपत लहै ॥१०॥ तिन सिरजिआ संसार ॥ सभ मुझ ही सौ बीचार ॥ सभ अंस मेरी जांन ॥ सभ का तेज मुझ कौ मांन ॥११॥ जिन यहि रिदै जांनी बात ॥ तिन जोग पाइआ तात ॥ इस बिख संसा नांहि ॥ उपजांवनहार सभ का आहि ॥१२॥ मुझ कुंभार की है रीत ॥ तिन कारज माटी कीत ॥ भांजन माटी ही सो धरै ॥ माटी बाझु कछु नां

करै ॥१३॥ मैं तिस निआई नांहि ॥ सभ ही लोको कौ उपजाहि ॥ दुतीए रहत सभु कछु कीआ ॥ मुझ इछ तें सभ भइआ ॥१४॥ जे को ऐसा मुझ को कहै ॥ सो नर गिआंनी मेरे अहै ॥ यह जान सिमरे मोहि ॥ नित संजुगत सरधा होइ ॥ मेरा भजन करते मीत ॥ निसदिन भजन सौ तिह प्रीत ॥१५॥ दोहरा ॥ ऐसा मेरा भजन वहु करते है दिन रात ॥ मन का चेता मुझ बिखै निसचल राखै तात ॥१६॥ सोरठा ॥ गलत भए तिह प्रान मेरे प्रेम की बात सो ॥ संसार बात मै नाहि जगत जुगति तिन सो रहे ॥१७॥ दोहरा ॥ आपस मांहि इकत्र हो कहे कथा मुझ नीत ॥ सुन सुन कहे करि कथा मो अति सुख पावै मीत ॥१८॥ दिन दिन प्रीत तिन नरों की मुझ मै बढती जाइ ॥ प्रीत संजुगत जो सिमरते सो अति नउनिधि पाइ ॥१९॥ दोहरा ॥ किरपा करौ मै तिनों पर देवों तिह बुध जोग ॥ जिस बुध करि मुझ पावते आवै मेरे लोक ॥२०॥ दोहरा ॥ जिस पर किरपा मै करौ तिस को देवो गिआंन ॥ तिन के घट मैं गिआन दीप तूं प्रकासे जांन ॥२१॥ दोहरा ॥ तिस प्रकास ते जीउ बुध सहजे गलत होइ जाइ ॥ मेरा रूप वहु होत है गिआंन रूप कौ पाइ ॥॥२२॥ दोहरा ॥ सुन कर अरजन बारता बोले हे भगवांन ॥ एक बिनती मै करौ सुन करि दीजै दान ॥२३॥

अरजनोवाच ॥

चउपई ॥ हे प्रभ जी तूं ब्रहम सरूप ॥ जो देखो सो तेरा रूप ॥ परतख ब्रहम है तेरा नांम ॥ सभ जग का तुम मै बिस्राम ॥२४॥ तुमरा धाम सभू ते परे ॥ तुम पारब्रहम परमेश्वर हरे ॥ तीरथ सगल गंगा ते आदि ॥ तुमरे चरनौ तें उपजादि ॥२५॥ ऐसे हो तुम परम पवित्र ॥ सरब बिआपी सभ के मित्र ॥ पुरातन अर भलिओ ते भले ॥ तुम किरपा ते किलविख दले ॥२६॥

दिब पुरख देवो के देव ॥ अजनम अजात प्रभू सरबेव ॥ तुमरी महिमां रिखो ते सुनी ॥ बिआसदेव नारद जी भनी ॥२७॥ सभ रिख तुमरी महिमां कहै ॥ एती कहें जेती बुध लहें ॥ तुमरी महिमां है बेअंत ॥ बरन न साकै सिध अर संत ॥२८॥ प्रभ अपनी महिमां आपे कहो ॥ जैसे भगवांन पूरन तुम अहो ॥ तुमरी महिमां का परताप ॥ देव दानव नही जानत आप ॥२९॥ अपना प्रताप आप तुम जानों ॥ उपजावनहार मै तुझे पहिचानो ॥ हे ईसर देवन के देव ॥ अपने प्रताप का आखो भेव ॥३०। अपनी दिब बिभूत मुझ कहौ ॥ सरब तिआग जिस मैं नित रहो ॥ हे महां जोग न मुझै बतावहु ॥ दिब ठउर अपुना मुझे सुनावहु ॥३१॥ तिसी ठउर मै तुझ कौ पावौ ॥ सदा सरबदा तुझे धिआवौ ॥ एहु ब्रहमांड जो पसरिआ देखों ॥ एह बिभूत सभ तुमरी पेखों ॥३२॥ बिभूत प्रताप तुम देखिआ चाहौ ॥ तिस कौ देखनहार को पावौ ॥ एह बचन मुखकमल ते आखो ॥ अंम्रितमई महिमां अब भाखौ ॥३३॥ तिस के सुने मुझे त्रिपत न होइ ॥ अपनी बिभूत कहीऐ प्रभ सोइ ॥ जब अरजन ऐसी अरदास ॥ कही प्रेम सो केसव पास ।३४॥ तब केसव अरजन कौ कहै ॥ कुरबंसो उतम तुम अहै ॥ अपनी बिभूत मै तुझ कों आखो । दिब प्रधान बात मै भाखो ॥३५॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ मेरे सभ बिसथार का अंत नही कछु होइ ॥ दिब प्रधान बिभूत जो सुन अरजन तुम सोइ ॥३६॥ सोरठा ॥ तिस का इह दिसटांत जिउ भूपत के देस मो ॥ मानुख होइ बहु भांति स्रेसट तिन मैं अलप हैं ॥३७॥ दोहरा ॥ तिन अलपो सौ एक एक लीजै पुरख प्रधांन ॥ निपट अलप प्रधान नर तिन सौ निकसे जांन ॥३८॥ दोहरा ॥ तैसे ही मै आपनी भाखो अलप बिभूत ॥ सरब निरंतर मैं वसां जिउ मनकिउं मै सूत ॥३९॥

दोहरा ॥ सभ प्रानीओ का आतमा मुझ कौ जांनो मीत ॥ आदि अंति सभ जगत का मुझ को राखौ चीत ॥४०॥ दोहरा ॥ बारह सूरज के बिखै बिसनभांन जिह नांम ॥ वहु प्रकासे लोक मैं सो तू मुझ को जांन ॥४१॥ सोरठा ॥ प्रकास करनैहार जेते है ब्रहमांड मै ॥ रवि तिन मै मुझै बीचार हे अरजन अब अउर सुन ॥४२॥ दोहरा ॥ अठाईस नखत्रौ मांहि चंद्रमा मुझ कौ जान तूं ॥ उनचास पउन के मांहि मरीच पउन है नाम मूं ॥४३॥ सोरठा ॥ चारो बेदो मांहि सिआम बेद मै आप हौ ॥ कोट तेतीस देव जो आंहि इंद्र मैं हो तिनहु मै ॥४४॥ दोहरा ॥ दस इंद्रीओ के मध मन राजा है मुझ सरूप ॥ जिह चईतंनता प्रानी मध सो चेतंनता है मुझ सरूप ॥४५॥ सोरठा ॥ यारह रुद्रौ बीच संकर मेरा नामु है ॥ राखस जोन जो नीच मैं कुमेर हौ तिनहुं मै ॥४६॥ दोहरा ॥ आठ बिसो मै अगन हौ अर परबतो बिखै सुमेर ॥ ब्रहसपत प्रोहितो के बिखै मुझ को जानो फेर ॥४७॥ दोहरा ॥ सैना के नाइको बिखे सिआंम कारतक मुझ जान ॥ सगल सरोवर के बिखे सागर मुझ को मांन ॥४८॥ भ्रिग रिख हों रिखों मै अर बानी ओअंकार ॥ सगल इसथावर के बिखे हिमांचल मुझ बीचार ॥४९॥ दोहरा ॥ अराधें मुझे जो जगत मै ऐसा हों तिन मांहि । स्वास स्वास जो सिमरते सोई जप मै आहि ॥५०॥ दोहरा ॥ पिपल बिरछो के बिखै मुझ को जांनो मीत ॥ गंधरबों बिखै चित्ररथ मै हौ राखौ चीत ॥५१॥ दोहरा ॥ सिधो बिखै मै कपल हौ नारद मुन रिख माहि ॥ रतनो माहि जो अस्व है सो मै ही वहु आहि ॥५२॥ दोहरा ॥ ऐरावत हौं गजों मै नर मै राज सरूप ॥ चक्रवरती जो भूप हैं सो हैं मेरो रूप ॥५३॥ दोहरा ॥ आइधो बिखै मै वज्र हों कामधेन गो आहि ॥ परजा के उपजात मै कांमरूप मैं आंहि ॥५४॥ दोहरा ॥ बासक सरपो के बिखै नागो मांहि

मैं सेख ॥ जलौ विखे मै वरन हों ऐसा पुरख बिसेख ॥५५॥ सोरठा ॥ डंड वालिओ के माहि जम जांनो तुम मुझी को ॥ सगल दैंत जो आंहि तिन के बीच प्रहलाद मै ॥५६॥ दोहरा ॥ म्रिगो मांहि मै सिंघ हों कालरूप मुझ जांन ॥ पंखेरू बिखै जो गरड़ है वह मूरत मुझ मांन ॥५७॥ दोहरा ॥ ससत्रधारीओ मैं रामचंद बलभद्र मेरा नाम ॥ मछो मांहि मैं मागरमछ नदीओ गंगा जांन ॥५८॥ हे अरजन सभ स्रिसट का करता मुझ कौ जांन ॥ आदि अंत अर मध मै एको ब्रहम पहिचांन ॥५९॥ चउपई ॥ अधिआतम विदिआ विदिआ माहि ॥ अधिआतम अरथ कहौ प्रगटांहि ॥ चउरासीह मै जो कछु विआपिआ ॥ अधिआतम ठाकुर नाम तिस जापिआ ॥६०॥ सभ तें स्रेसट अधिआतम जांन ॥ ठाकुर अधिआतम मुझ को मान ॥ झगड़ा करनहारिओ के मांहि ॥ जो को ब्रहम गिआंन करि आंहि ॥ ६१॥ ओहु गोसट है मेरो रूप ॥ अकार अखर है मुझी सरूप ॥ बिआकरनो मांहि वड बेद बिआस ॥ सभ हूं काल मै हो प्रगास ॥६२॥ उतपत करता बिश्व का मै हौ ॥ मिरत रूप अपनां ही लै हो ॥ इस्त्री बिखै सातो मै इस्त्री ॥ कीरति आखै सुरसती श्री ॥६३॥ सिंमरत बुध धिरत अर खिमां ॥ इह सातो मै आप को गनां ॥ गाइत्री छंदो मांहि मुझ जांन ॥ मंघर मासो मांहि पहिचांन ॥६४॥ रुतो माहि बसंत मुझ जानो ॥ उदम बिखे गिआंन उदमानो ॥ कपटो बिखै जूआ मैं आप ॥ तेजो बिखै मैं रहिआ बिआप ॥६५॥ जहां दो दल जुध कों धावै ॥ तिन मै जे को जीत कौ पावैं ॥ जीतनहार तुम मुझ कौ जानो ॥ बलवंतो मै बल मेरा मानो ॥६६॥ बासदेव जादो मै मीता ॥ पांडव मांहि अरजन धर चीता ॥ मुनो मांहि बिआस मुझ रूप ॥ कब बुधी सभ मेरो रूप ॥६७॥ निवाइन–हारिओ माहि मै डंड ॥ धरम नीत मै हो प्रचंड ॥ गिआंनी मांहि गिआंन मुझ जानो ॥ मोन रूप मेरा पहिचानों ॥६८॥ सभ

प्रानीओ का बीज मै मीता ॥ इह दिब प्रताप जो वरनन कीता ॥ तिस का भी अंत कछु नांही । सो अंस मात्र तुझ कहि समझांही ॥६९॥ जिउ भर पात्र मैं गंगा लही ॥ तैसी अलप बिभूत तुझ कही ॥ अवर सुनो अब मीत सुजांन ॥ जे को आतम पुरख प्रधान ॥७०॥ अर सोभावंत प्रताप संजुगत ॥ गिआंनवांन अर जीवन मुकत ॥ सो सभ मेरी अंस तूं जान ॥ ऐसा प्रताप मुझ कहा बखान ॥७१॥ अलप प्रताप मैं तुझ को कहा ॥ यहि सभ एक ब्रहमंड मै लहा ॥ ब्रहमंड की सारी बात न कही ॥ अलप मात्र ही वरनन भई ॥ ७२॥ असंख ब्रहमंड नाना प्रकार ॥ मुझ बिभूत सों भरे बीचार ॥ सभ ब्रहमंडो को मै थापिआ ॥ मेरे प्रताप सो सभ को कांपिआ ॥७३॥ नेत्र उघाड़ो सभु कछु होइ ॥ मूंदो नैन न रहतो कोइ ॥ यहि बिभूत कही तुझ मांहि ॥ जो तेरे रथ पर मै आहि ॥७४॥ आदि अंति मेरो कछु नाही ॥ सभहूं का ईसर मै आही ॥ तेरे निकट बिराजो आप ॥ सरब मध मै रहिआ बिआप ॥७५॥

टीकाकारवाच ॥

नेत्र उघारन का जो अरथ ॥ समझे पंडित बुध समरथ ॥ हे नर ऐसा आप को जानौ ॥ अपने ही मै सभ जग मांनो ॥७६॥ नेत्र उघाड़ो सभ दिसट आवै ॥ मूंदो नैन सगल मिट जावै ॥ तांतें सभ को बिसन है भाई ॥ सभी बिसन है जो द्रिसटाई ॥७७॥ अकाल रूप सरब कौ जानो ॥ देहि सभी तुम भरम पहिचानौ ॥ मै गोबिंद खालसे को आप ॥ गोबिंद अकाल इक दीनो जाप ॥ ताते सभी है एक अकाल ॥ गुरसिख अकाल एक ही भाल ॥७८॥ चउपई ॥ दसवां धिआइ सुभ जुगति बताइआ ॥ सभ ही खालसे मांहि सुनाइआ ॥ तुम हरि महि हरि है तुम माहि ॥ प्रेम सो अकाल रूप को पाहि ॥७९॥ सुनते पड़ते मुकते आंहि ॥ ब्रहम मैं मुकत बंध कछु

नांहि ॥ तां ते एक अकाल तुम जानो ॥ बिन अकाल दूजा नही मानों ॥८०॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते विभूति योगो नाम दसमोऽध्याय ॥ १०॥१०६८॥

आगे अध्याय यारवां चलिआ ॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा ॥ अरजन कहे भगवांन को हे केसव गोबिंद ॥ जब सुनिओ प्रताप तुम तब उपजिओ आनंद ॥१॥ दोहरा ॥ तुमरे बचन के स्रवन ते मोहि बिनासिओ मो ॥ हे कमल लोचन जो तुम कहिओ सभ मै सुनिओ सो ॥२॥ उतपत परले की कथा सुनी सभी मै मीत ॥ अबिनासी प्रताप सुनि सो मै राखिओ चीत ॥३॥ दोहरा ॥ हे प्रभ अब यहि बेनती तुम पै भाखो मीत ॥ जैसा तुम प्रताप है तिस देखन की प्रीति ॥४॥ दोहरा ॥ तिस बिभूत के देखने हे प्रभ इछिआ मोहि ॥ करों बेनती हे प्रभू मुझे दिखावहु सोइ ॥५॥ दोहरा ॥ जो तुम मानो बेनती देह दरस भगवांन ॥ सकत भी देवो आपनी देखो तुझ को जांन ॥६॥ सोरठा ॥ अपने प्रताप संजुगत बिभूत दिखावौ सिख कौ ॥ देखन पावौ मुकति दरसन तेरा हे प्रभू ॥७॥ हे ईसर हे पारब्रहम दरस दिखावहु मोहि ॥ बिभूत प्रताप संजुगत मै नैनी देखौ सोइ ॥८॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ अरजन की अरदास सुन भाखे गोबिंद देउ ॥ हे पारथ तूं देख ले सभ बिभूत का भेउ ॥९॥ चउपई ॥ हे अरजन बिभूत सभ देख ॥ मेरे रूप सहंसर पेख ॥ नांनां प्रकार बरन है मेरे ॥ मेरे बपु मै थांन घनेरे ॥१०॥ कई

बिश्व मेरे देहि मांही ॥ कई रुद्र तहां वरतांही ॥ असुनी कुमार कोटि हैं भाई ॥ देखो मुझ मै हे पंडराई ॥११॥ जो देखिआ तुझ नाही आगे ॥ सो अब देख मुझ बप सौ लागे ॥ अवर अचरज नांनां तूं देख ॥ इसथावर जंगम मुझ मै पेख ॥१२॥ सो सभ मेरे बप के मांही ॥ अवर देख जो देखिआ चांही ॥ चरम द्रिसटि मै द्रिसटि न आवै ॥ दिब द्रिसटि मै दरसन पावै ॥१३॥ ताते दिब द्रिसटि सो देखो ॥ जोग समाधि लाइ सभ पेखो ॥ दसवै पउण चड़ावो मीत ॥ ईसवरज मुझ देखो इह रीत ॥१४॥ ऐसे पारथ पै हरि भाखिओ ॥ अरजन पउन दसवै मैं राखिओ ॥ समाध माहि अरजन जब देखिओ ॥ तातकाल बिभूत हरि पेखिओ ॥१५॥

संजिओवाच ॥

दोहरा ॥ संजै कहे ध्रितरास्ट्र पै हे राजन परधांन ॥ अरजन लाइ समाध को देखिओ रूप भगवांन ॥१६॥ दोहरा ॥ ऐसा रूप मै देखिआ मो पै कहिआ न जाइ ॥ जो अरजन ने देखिआ सो सभ कहौ सुनाइ ॥१७॥

टीकाकारवाच ॥

सोरठा ॥ मुख चख कान अनेक हसत पाद अनेक पुन ॥ सभ को ठाकुर एक बैराट रूप जिन धारिआ ॥१८॥ चउपई ॥ अधभुत दरसन महां अनूप ॥ दिब भूखण लागै तिह रूप ॥ अनेक सस्त्र तिन हाथो मांहि ॥ सस्त्र नगन सत्र को दाहि ॥१९॥ दिब माला तिहं कंठो माही ॥ दिब बस्त्र तिह बप कौ आही ॥ दिब सुगंध तहां तें आवै ॥ अरजन देखि असचरज कौ पावै ॥२०॥ जहां देखे तहां हरि भगवांन ॥ अनिक भांत वहु एक सुजांन ॥ दसो दिसा मै गोबिंद देखै ॥ सहंस्र रूप प्रकासक पेखै ॥२१॥ भगवांन समाध मै यहि दिखराइआ ॥ अरजन देख असचरज अति पाइआ ॥ सहंस्र रवि सम हरि कौ पेखिओ ॥ सभ ते उतम हरि को देखिओ ॥२२॥ माधव

बप मै यहि दिसटावै ॥ सगल संसार पसरिआ पावै ॥ अनिक भांत संसार जब देखिआ ॥ बैराट रूप कौ पारथ पेखिआ ॥२३॥ सो सभ क्रिसन देव के मांहि ॥ धनंजै देखि बिसम कौ पांहि ॥ अति बिसमाद अरजन जब भइआ ॥ अपनां सीस प्रभ चरनी गहिआ ॥ डंडउत करै अंचल तब जोड़ ॥ मुख सो बोले हे प्रभ मोर ॥२४॥

अरजनोवाच ॥

चउपई ॥ हे माधव नाराइण स्वामी ॥ दइआल अकाल प्रभ अंतरजामी ॥ तुमरे देह माहि यहि देखौ ॥ सभ समूह जगत का पेखौ ॥२५॥ नाभकमल तुमरे महि देव ॥ ब्रहमा देखो करता सेव ॥ तुमरे देह पर सभ कछु देखौ ॥ सपत रिख ब्रहमा सुत पेखौ ॥२६॥ दिब नाग मुझ दिसटी आवै ॥ अनेक रुद्र समाध लगावै ॥ सहंसर भुजा सहंसर नैन ॥ सहंसर मुख तुम करते बैन ॥२७॥ अनिक उदर तुम मुझ दिसट आइ ॥ तुमरा आदि अंति नही पाइ ॥ बिस रूप तुमरा मै देखौ ॥ अनेक सीस पर मुकट सभ पेखौ ॥२८॥ गदा सभहूं के कर मै पिआरे ॥ अनेक सस्त्र विच हाथ तुमारे ॥ दसो दिसा तुम रहे बिआप ॥ सभ देखो तुम तेज प्रताप ॥२९॥ तुमरा तेज देखिओ नही जाइ ॥ महां प्रलै मुझ दिसटी आइ ॥ दिब अगनि जलत तिह मांही ॥ अनेक सूर तहां तपतांही ॥३०॥ ऐसे ठउर ठउर दिसट आइ ॥ दरसन यहि देखिओ नही जाइ ॥ अप्रमेव अद्वै तेज तुमारा ॥ तुम ही हो प्रभ अपर अपारा ॥ ३१॥ दूसरी दिसटी नही को पेखौ ॥ जिस सो तुमरा दरसन देखौ ॥ तुम समान तुमही हो आप ॥ अनेक भांत तुम रहे बिआप ॥३२॥

संजिओवाच ॥

चौपई ॥ भगवांन रूप अरजन यिउ पेखिआ ॥ अपने नेत्रो सो जो देखिआ ॥ हे राजन सभ कहिओ सुनाइ ॥ अब अवर कहौ सुनौ चित लाइ ॥३३॥

अरजनोवाच ॥

स्वैया ॥ सभ के परे अबिनासी प्रभ तुम ईसर दइआल क्रिपाल स्वांमी ॥ एक रूप तें सभु कछु साजिओ जिउ के तिउ तुम अंतरजांमी ॥ जैसे थे तैसे ही दीसो ऊन नही तुम पारगिरामी ॥ कोटि बिसु उपजे हैं तुम सो तुम भरपूर सदा सुखगामी ॥३४॥ स्वैया ॥ बिसु निधान पूरन परमेसर सभ तें परे सनांतन आंही ॥ अति बलवंत ईसर के ईसर धरम रखिआ तुम नित करांही ॥ नही दूसरा तुम सर गोबिंद ऐसे आवै मुझ मत मांही ॥तुम एको प्रभ जी हो पूरन इसथावर जंगम है परछांही ॥३५॥ दोहरा ॥ सनातन पुरातन तुम प्रभू आदि अंति मधि माहि ॥ इहु जो रवि अरु चंद्रमा नेत्र तुमारे आहि ॥३६॥ दोहरा ॥ ऐसा देखौ मैं प्रभू तुमरे मुख के मांहि ॥ महां अगन अत तेज सो सगली बिस को दाहि ॥३७॥ दोहरा ॥ भूम अकास अर दहि दिसा तुम बिआपे भगवंत ॥ अदभुत भइआनक रूप देख मुझ को उपजिओ चिंत ॥३८॥ दोहरा ॥ ऐसा तुमरा रूप देख डर है तीनौ लोक ॥ कोटि देव तुम देहि मै दीसै करते जोग ॥३९॥ सोरठा ॥ देव पुंन अनेक समूह करे प्रवेस तुम देहि मै ॥ अनेक अकास अर भूम मुझ को दिसटी आवते ॥४०॥ मंगल छंद ॥ कई कोटि देव अपार ॥ तुम उसतत करे पुकार ॥ कई कोटि रिख अर सिध ॥ करते बेनती बहु बिधि ॥४१॥ उसतति करे रिख देव ॥ कई बरखा बहुत करेव ॥ रुद्र अनेक द्रिसटी आहि ॥ कई बिसन तुम बप मांहि ॥४२॥ कई साध देव अर जछ ॥ असनी कुमार अनिक परतछ ॥ बहु पउन तुम मै बहै ॥ कई गंध्रब तुम मो लहे ॥४३॥ सभ देख बिसमै होइ ॥ अधभुत रूप तुमरा सोइ ॥ तुम

सहंस्र रूप अपार ॥ मुख चछ सहंस्र बीचार ॥४४॥ जो नेत्र मुख दिसटाहि ॥ सो सभी तुझ बप मांहि ॥ बहु भुजा पाद तुम भए ॥ उदर अनिक तुमरे लहे ॥४५॥ बहु भइआनक अर बिकराल ॥ अनिक दाड़ तुम मुख लाल ॥ यहि रूप तुमरा देख ॥ त्रैलोक डरे बिसेख ॥४६॥ हउ डरौ प्रभ अबिनास ॥ तुम बप जिउ आकास ॥ बहु भांत अंग है तोइ ॥ बडे नैन पेखो सोइ ॥४७॥ ऐसा रूप तुमरा देख ॥ मै डरू गइआ तुझ पेख ॥ धीरज ना रहिओ मुझ मांहि ॥ जब दरस तुमरा पाहि ॥४८॥ हे बिसन प्रसंन हो ॥ दरसन देखता मै सो ॥ देखो अवर मै गोपाल ॥ भइआनक दाड़ तुम मुख नाल ॥४९॥ सो दाड़ कैसी आंहि ॥ सम काल के वहि पांहि ॥ देख दिसा भूली मो ॥ नही सांत मन मो हो ॥५०॥ हे जग निवास क्रिपाल ॥ प्रसंन होवो दइआल ॥ अब मै अउर देखो बात ॥ तुमरे मुख बिखे हे तात ॥५१॥ दुरजोधन सैनां सहत ॥ भीखम द्रोण जो है महत ॥ अर जोधा जो हैं प्रधान ॥ देखौ पउन ते पहिचांन ॥५२॥ जो अगनि तुम मुख माहि ॥ देखो तिस विखे वहु दाहि ॥ वहु सभ मुख तेरे परे ॥ तुमरी दाड़ ते वहि मरे ॥५३॥ कई अटके दाड़ो मांहि ॥ कई दंद सो लै खांहि ॥ कई सिर दांत तेरे मांहि ॥ अटके देखिहौ मै ताहि ॥५४॥ जिउ सभ नदी को प्रवाहि ॥ सागर मांहि लीन हो जांहि ॥ जैसे जोधा कैरव जो ॥ प्रापत सभी तुम मुख हो ॥५५॥ तिस मुख मांहि जो है अगन ॥ कैरव भए तिस मो मगन ॥ सभ पड़ै तुम मुख मांहि ॥ फिर वहि दिसटि आवैं नाहि ॥५६॥ तुमरा तेज अति बलवान ॥ तिस कर लोक पूरन जांन ॥ ऐसा भैआनक तुमरा रूप ॥ वहु है बहुत तेज अनूप ॥५७॥ तिस रूप को नमसकार ॥ हे देव क्रिसन मुरार ॥ प्रसंन होहु मुझ मांहि ॥ तोहि रूप अचरज आहि ॥५८॥ ऐसा चाहता मन मांहि ॥ तुझि आदि अंति देखाहि ॥ देख सकौं

अब न दइआल ॥ प्रताप तुम गोपाल ।५९॥ दोहरा ॥ जब अरजन ऐसे कहिओ तब भगवांन गोपाल ॥ मुखौ कहे सुन पारथा मै तुझ पर क्रिपाल ॥६०॥ सोरठा ॥ अब सुन बडा जो रूप इसी समे मैं धारिआ ॥ सो है काल सरूप सभ ग्रासन कौ प्रगटिआ ॥६१॥ सोरठा ॥ सभ को ग्रासौ मीत एह सभ ही न होइगे ॥ हे अरजन धर चीत उठ सत्रो सो जुध कर ॥६२॥ दोहरा ॥ सत्र सभ ही जीत के राज भूम का लेउ ॥ राज भोग सुख भोग तूं प्रजा को सुख देउ ॥६३॥ सोरठा ॥ ए सभ जोधा जो ठांढे देखे अरजनां ॥ हति कीए मै सो जस लै तूं उठ जुध कर ॥६४॥ सोरठा ॥ अरजन तूं जस ले सभ को जग मैं कहेगा ॥ सैनां कैरउ एह सभ ही पारथ हत कीए ॥६५॥ चउपई ॥ सो जोधा कैसे हैं आखो ॥ सभ ही महांरथी मैं भाखो ॥ द्रोनाचारज बिदिआवंत ॥ देवै सभ को सस्त्र मंत ॥६६॥ सस्त्र विदिआ तिह ते तुम लीन ॥ बांन बिदिआ मै अति प्रबीन ॥ बांन चोट करे सभ मारे ॥ अर सराप दे सभ को जारे ॥६७॥ ऐसा द्रोणाचारज बली ॥ भीखम सो सभ धरती हली ॥ पितामे को वर पिता का एह ॥ जब भावै तब देहि तजेह ॥६८॥ पितामा तुमरा इछिआचारी ॥ अर जैदरथ सूर महां हंकारी ॥ तिस का पिता कुरखेत्र मांहि ॥ तप करे बैठा ही ताहि ॥६९॥ बाछा मन मो ऐसी करे ॥ जो को मुझ सुत को हत करे ॥ सुत का सीस भूम नां गिड़े ॥ जैदरथ पिता यहि बांछा करे ॥७० ॥ करन को रवि का सुत जांनो ॥ भांन अवतार करन पहिचानों ॥ अवर सभी जो जोधा देखो ॥ अति बलवंत सभी को पेखो ॥७१॥ तुझ सौ वहि मारे नही जांहि ॥ मार राखे मैं सभ ही आहि ॥ मारिओ कौ उठ हत कर यार ॥ मत डर कर मैं मारे डार ॥ जुध कर तूं पारथ जस लेइ ॥ मेरी बात को मन चित देइ ॥७२॥

संजिओवाच ॥

दोहरा ॥ संजै कहै ध्रितरास्ट्र को हे राजा प्रधान ॥ अति प्रिअ सो पारथ सुनिओ जो भाखिओ भगवांन ॥७३॥ दोहरा ॥ अरजन दो कर जोड़ करि करै बेनती एह ॥ थरहर कांपो हे प्रभू नमसकार मुझ लेह ॥७४॥ दोहरा ॥ बहुड़ नमो तुझ को करों हे पूरन भगवांन ॥ तुमरे बप मो देख हो सिध साध प्रधान ॥७५॥

अरजनोवाच ॥

सोरठा ॥ तुमरे बप के मांहि जगत सभ द्रिसटि आवता ॥ तिस मो बहु ठउर आहि ठउर ठउर सिध मंडली ॥७६॥ चौपई ॥ कोट महंत ठउर मो पेखो ॥ गिआन मंडली कोट ही देखौ ॥ तुमरी महिमां कीरत गावहि ॥ तिस को पड़ पड़ अति सुख पांवहि ॥७७॥ तुमरी कीरति की प्रसादि ॥ तिन सो रहिओ संसार बिबादि ॥ तर संसार सोग को नीर ॥ चले बैकुंठ मांहि वहि धीर ॥७८॥ अवर रूप तुम कैसा पेखौ ॥ सगल दिसा को भखता देखौ ॥ कोट समूह सिधो अवतार ॥ करते हैं तुम को नमसकार ॥७९॥ किउं न करे तुम को आदेस ॥ बडिओ ते बडा तुम देस ॥ संसार करता जो ब्रहमा कहीऐ । सो तो उपजिओ तुम सो लहीऐ ॥८०॥ हे जग निवास सभ अंतरजामी ॥ हे बिसन प्रभू तुम पूरन स्वांमी ॥ सूखम रूप जीव जो कहीऐ ॥ तिस ते परै प्रभ तुम कौ लहीऐ ॥८१॥ हे निधान तुम परे ते परे ॥ चार बेद तुम उतपत करे ॥ जो कछु सरूप मै जानन बात ॥ सो तुम हो गोबिंद ठाकुर सात ॥ सारा तेज यहि तुम ते भइओ ॥ बिस रूप तुम ही होइ रहिओ ॥८२॥ कवित ॥ जम तुहैं नार तुहैं सस अर संसार तुहैं पित अरु पितामां जो दीसै सो तुम हो ॥ सहंस्र मुख तुम मुरार चख पाण तुम अपार सहंस्र ही स्रवन नास सरब मांहि रम हो ॥ दीसै सो तुझ सरूप

तुम ही सभ रंक भूप सहंस्र पाद तुझ ही को ठउर ठउर गम हो ॥ अद्वैत तुझ कौ बीचार तुमरा तुम नमसकार राग नाद तुहीं एक तुही जीर बंम हो ॥८३॥ दोहरा ॥ सहंस्र मूरति तुम देखीऐ तिन सभ को जोहार ॥ तिन मूरतों कौ भिंन भिंन नमो नमो अपार ॥८४॥ अड़िल ॥ तुमरे सनमुख अर पीठ दांए बांए मुझ नमित है ॥ तहां लग करौ जुहार जहां बुध गमत है ॥ सरबमई भगवान नमो तुझ बासदेव ॥ नमाम करे तुम आप अपने आप मै लहिओ है ॥८५॥ दोहरा ॥ सरब बिआपी तुम प्रभू अमित रूप तुझ आहि ॥ अद्वैत अकाल सरूप मैं दूसर कोइ नांहि ॥८६॥ चउपई ॥ इस कारन मैं बिनती करों ॥ दुतीए भाउ कीए ते डरौ ॥ जो मै जांन अविगिआ करी ॥ सो तुम बखसो हे प्रभ हरी ॥८७॥ ऐसे बचन कहे तुम पिआरे ॥ किसन जादव तुम नाम उचारे ॥ अर सखे बचन जो तुझ को कहा ॥ इस कहते सो अति दुख लहा ॥८८॥ तुम अनाम अरूप अद्वीत ॥ पीछे कहिआ सो बखसो मीत ॥ तुमरा नाम कहिआ नही जाइ ॥ अबाच दिसा मै बचन न काइ ॥८९॥ अर भोजन जो तुम संग कीता ॥ तुमरे थान पर आसन लीता ॥ तुमरे समांन मारग मै चलिआ ॥ तुमरे कंठ सो सम होइ मिलिआ ॥९०॥ सो सभ अजांन भाउ ते होई ॥ अचुत अबिनासी बखसो सोई ॥ जैसा कैसा मै हो तेरा ॥ खिमा करो दुख जावै मेरा ॥९१॥ सगल अप्राध मेरे तुम हरो ॥ जो दुतीए भाउ ते करो ॥

टीकाकारवाच ॥

आप को जो हरि सो नहीं जांनिआ ॥ बडा अप्राध यही पहिचांनिआ ९२ ॥ जो जानै हरि आप को दोइ ॥ सो अपराधी पापी होइ ॥ प्रभ बिन अवर नही को भाई ॥ हरि बिन दूजा कहां समाई ॥९३॥ अरजन प्रभ सो भिंन जब जानिआ ॥ यही अप्राध अपने मन मानिआ ॥

अरजनोवाच ॥

अब अरजन गोबिंद पै आखै ॥ हरि की उसतति मुख सौ भाखै ॥९४॥ हे अप्रमेव प्रभ क्रिपा निधांना ॥ इस्थावर जंगम के भगवांना ॥ सभ के करता हो तुम स्वांमी ॥ गुर के गुर तुम अंतरजांमी ॥९५॥ त्रिलोकी मांहि तुम सम को नाही ॥ मै जानो ऐसा मन मांही । डंडउत देहि साथ तुझ करो ॥ असटांग डंडउत तुझि आगे धरौ ॥९६॥ हे प्रभ तूं उसतति के जोग ॥ हे माधव ठाकुर त्रिलोक ॥ मेरे यहि अप्राध निवारो ॥ अप्राध यही जो दुती बिचारो ॥९७॥ मुझ पर खिमा करो प्रभ सात ॥ जैसे सुत पर करता तात ॥ जैसे सखा सखे पर करे ॥ जिउ तीअ अप्राध भरता बिसमरे ॥९८॥ तैसे खिमा तुम मुझ पै धारो ॥ निवारो पाप जो दुती बीचारो ॥ मैं नही कबहू रूप यहि पेखिआ ॥ जो अब रूप तुमारा देखिआ ॥९९॥ डरिआ हो देवो के देव ॥ डर कर तुमरी कर हों सेव ॥ हे जग निवास प्रसंन तुम होवहु ॥ पिछले पाप मेरे सभ धोवहु ॥१००॥ अब वहु रूप दिखावहु सोइ ॥ सुंदर मुकट जिहं माथै होइ ॥ एक हाथ मै गदा होइ जिस के ॥ चक्र होइ दुतीए करि तिस के ॥१०१॥ त्रिती पांन अस्वो की बाग ॥ जो अस्व मेरे रथ कौ लाग ॥ चत्र हाथ छटी प्रेरन की ॥ यिह ते रथ की गति फेरन की ॥१०२॥ तिसी रूप कौ मुझै दिखावहु ॥ हे बिस रूप यहि रूप छिपावहु ॥ चत्रभुज रूप होइ दरसन देउ ॥ मेरी बिनती प्रभ सुन लेउ ॥ जब अरजन यहि बिनती करी ॥ तब बोले मुख ते प्रभ हरी ॥१०३॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ प्रसंन होइ दिखाइआ ऐसा तुझै सरूप ॥ बिसुमै अर तेजमै अनंत अनादि अज रूप ॥१०४॥ सोरठा ॥ तुझै देखाइआ एहु आगे किसे न देखिआ ॥ हे अरजन सुन लेह तुध आगै नही पेखिआ ॥१०५॥ सोरठा

॥ मेरा ऐसा रूप जो पाठी चारो बेद के ॥ है दुरलंभ सरूप वहु भी देखै मूल नां ॥१०६॥ सोरठा ॥ जो सभ ही जग कराहि तिन को भी दुरलंभ है ॥ सो भी देखन नांहि ऐसा मेरा बिस रूप ॥१०७॥ चउपई ॥ जो जग मै सभ ही तप करै ॥ ऐसा रूप तिस दिसटि न परै ॥ सुभ प्रकार जो सभ जग साधे ॥ देखे नही यहि रूप अगाधे ॥१०८॥ कुरबंसिओ मांहि स्रेसट तूं पारथ ॥ तुझे दिखाइआ रूप जथारथ ॥ त्रिलोकी मांहि ऐसा को नांहि ॥ ऐसा रूप जो देखै आहि ॥१०९॥ हे अरजन तूं डर को तिआग ॥ काट मोहु मुझ सरनी लाग ॥ भइआनक रूप जो तुझ दिसटाइआ ॥ उस को देख तैं अति डर पाइआ ॥११०॥ अब तूं तिआग डर अपना मीत ॥ भइआनक रूप मुझे अंतरि कीत ॥ उही सरूप बहुड़ तूं देख ॥ जो चाहै सोई कछु पेख ॥१११॥

संजिओवाच ॥

संजै ऐसा फिर कहे हे राजा सुन लेहि ॥ पारथ को यिउ कहत है बासदेव सरबेहि ॥११२॥ दोहरा ॥ बिस रूप सभ आपना अंतर लीओ मिलाइ ॥ भइआनक रूप महातमां तिस को दीओ छपाइ ॥११३॥ दोहरा ॥ सखे रूप तब होइ करि धिआंन अरजन के मांहि ॥ लागे दिसटी आवनें पारथ बोले तांहि ॥११४॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा ॥ सुख सरूप जो चतुरभुज अब देखिओ मै मीत ॥ अब सभ कछु मैं जांनिआं उपजी चईतन रीत ॥११५॥ सोरठा ॥ अपनी प्रकिरत के मांहि हे प्रभ जी मै आइआ ॥ नमसकार तुझ आहि ऐसा है सुख रूप तुझ ॥११६॥

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ बिस रूप जो अरजन देखा ॥ तिस का रूप मै मन मैं पेखा ॥ अवर किसी को दिसटी न आवै ॥ गिआनी होइ सो तिस नो पावै ॥११७॥ ऐसे गुर नानक प्रधान ॥ कहिओ सुखमनी मांहि बखांन ॥ ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥ नानक ब्रहम गिआनी आप परमेसुर ॥११८॥ गिआनी की उसतति कहा को कहै ॥ गिआंनी हरि एक सम अहै ॥ हरि ते गिआनी भी है ऊचा ॥ जो सभ छाड हरि मांहि पहूचा ॥११९॥ ऐसी बात कोई विरला पावै ॥ जे को अद्वीत मांहि चित लावै ॥ गिआंन नैन सो तिस को देखै ॥ चरम चछ सो कोइ न पेखै ॥१२०॥ खालसे को वहु रूप दिखावो ॥ तिन मै जो अधिकारी पावो ॥ अब देखो गिआंन के मांहि ॥ संसार सगल बिस रूप ही आंहि ॥१२२॥ स्रवन पाद सहंस्र भाई ॥ भगवांन देहि मैं देत दिखाई ॥ हसत नास सहंसर जानो ॥ सभी पारब्रहम मै मानो ॥१२३॥ अगन प्रिथवी आब अरु वाउ ॥ देहि गोबिंद मै सभ दिसट आउ ॥ अकास सूर चंद अर तरवा ॥ गोबिंद देहि ते प्रगट करवा ॥१२४॥ मरन जीवन जीओ की जोइ ॥ सभ बैराट के बप मैं होइ ॥ बैराठ रूप मै है सभ कोइ ॥ एक अद्वैत ब्रहम पुनि होइ ॥ तैसे ही गुर नानक आप ॥ आरती मांहि कहिओ प्रताप ॥१२५॥ गगनमै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआन लो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१२६॥ कैसी आरती होइ भव खडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद बध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥१२७॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुर साखी

जोति परगटु होइ ॥ जो तिस भावै सु आरती होइ ॥१२८॥ हरि चरन कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा ॥१२९॥ चउपई ॥ यहि जानै सो खालसा होइ ॥ ब्रहम मै सभ कछु देखै सोइ ॥ सभहूं मांहि ब्रहम को जांनैं ॥ आप जगत गोबिंद एक मानै ॥१३०॥ को विरला ऐसी गत पावै ॥ गिआंन धार गोबिंद होइ जावै ॥ गिआन बैराग भगति जो सहत ॥ ब्रहम गिआंन अद्वै यिओ कहत ॥१३१॥

श्री भगवानोवाच ॥

सोरठा ॥ हे पारथ बिसरूप जो तुझ देखिआ अरजनां ॥ आगै किसै न देखिआ इह सरूप मुझ राजनां ॥१३२॥ दोहरा ॥ देवता भी नित चाहते देखन ऐसा रूप ॥ देखन इस का कठन है नां देखै को भूप ॥१३३॥ ऐसे रूप की चाहि मों तपसी नित तप करें ॥ तिन को दिसट न आवता नित वहु जनमै मरे ॥१३४॥ चउपई ॥ बहु दानो नही पावै कोइ ॥ द्रिसटि ना आवै धरमो सोइ ॥ जैसा तैं यहि देखिआ मीत ॥ अब यहि बात निसचै धर चीत ॥१३५॥ जो तूं मेरा भगत पिआरे ॥ मुझ ते दूसर नाहि बिचारे ॥ मेरे धिआन मैं तूं नित रहै ॥ केवल मेरा आसरा गहै ॥१३६॥ ऐसी भगत ते दरसन पाइओ ॥ इसी भगत ते मुझै रिझाइओ ॥ तब तै नेत्रो सो भी देखिआ ॥ गिआंन मांहि समझ करि पेखिआ ॥१३७॥ अर अरजन मुझ को तै पाइआ ॥ जो तूं ब्रहम मांहि चित लाइआ ॥ मेरी भगत तुझ प्रापत होइ ॥ तुझ सारखा अवर न कोइ ॥१३८॥ अब जो तुझ को करना आइआ ॥ सो सुन पारथ हे पंड राइआ ॥ मेरी पूजा नित कर मीत ॥ एक अद्वै राख तूं चीत ॥१३९॥ गोबिंद बाझ कछु अवर न जांन ॥ दिसट अदिसट सभ मुझ को मांन ॥ यही पूजा है पारथ पिआरे ॥ सगला एक ब्रहम बीचारे

॥१४०॥ संसार लोक का संग न करै ॥ संसार तिआग हरि मन मैं धरै ॥ संसार नही सभ ब्रहम है भाई ॥ एक मांहि कछु कहिआ न जाई ॥१४१॥ रहो निरवैर सभहूं ते मीत ॥ मुझ सरूप राखो तुम चीत ॥ जब यहि गिआंन अरजन दिड़ होइ ॥ मेरी पदवी पावै सोइ ॥ एह उपदेस सभ भगतों मांहि ॥ जो धारे सोई सुख पांहि ॥१४२॥

टीकाकारवाच ॥

चउपई ॥ यारवां धिआइ बिसु को रूप ॥ अरजन देखिआ भगवांन सरूप ॥ मै गोबिंद खालसे प्रति भाखिओ ॥ जथारथ सभ मै तिन को आखिओ ॥१४३॥ सभ का नाम सिंघ मै धरा ॥ जीउ ते नामु प्रमातम करा ॥ सिंघ अरथ बेदो के मांहि ॥ बेद मांहि प्रमातम आहि ।१४४॥ अनंद बानी उपनिखद है जोइ ॥ अरथ सिंघ का तिस मै होइ ॥ अकाल प्रीत जिहं नर को होइ ॥ यही बचन मन धारे सोइ ॥१४५॥ बचनों ते अकाल को पावै ॥ अकाल पाइ अकाल होइ जावै ॥ सिंघ अरथ प्रमातम जानो ॥ सभ को एक ब्रहम ही मानो ॥१४६॥ मेरी क्रिपा यहि है भाई ॥ अनभउ बात सभ तुमे सुनाई ॥ आगै धारन तुमरे हाथ ॥ भगवांन जानों नित अपने साथ ॥१४७॥ तुम को अवर न तारे कोइ ॥ जैसी मति तैसी गति होइ ॥ जो चाहो सोई कछु करो ॥ तुम अकाल मन मो यहि धरो ॥१४८॥ तुमरे बाझ अवर नही कोइ ॥ जो देखो सो गोबिंद सोइ ॥ गोबिंद बिना अवर नही भाई ॥ संसार ब्रहम एक द्रिसटाई ॥१४९॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते विश्वरूप दर्शन योगो नाम यारवां अध्याय ॥११॥१२१७॥

आगे अध्याय बारवां चलिआ ॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा ॥ एते बचन स्रवन करि अरजन बोले एह ॥ हे माधव हे रिखीकेस हे बासदेव सरबेह ॥१। दोहरा ॥ एह जो तुमरा रूप मैं सरगुन देखिओ मीत ॥ उपासक एक इस रूप के मन मै राखै नीत ॥२॥ दोहरा ॥ निरगुन रूप जो दूसरा सो अबिनासी आहि ॥ महिमां बिखे न आवता अबचनी कहीऐ ताहि ॥३॥ दोहरा ॥ दो उपासक के बिखै स्रेसट उपासक है कवन ॥ मुझ को यहि समझाईऐ हे नाइक त्रैभवन ॥४॥ दोहरा ॥ अरजन बिनती सुनत ही भाखे गोबिंद भूप ॥ भगतो के सुख देन को धारिओ सरगुन रूप ॥५॥ दोहरा ॥ इस मेरे सरगुन रूप को भगत राखै मन माहि ॥ मन तिन का तिस रूप मै नित जुगत ही आहि ॥६॥ दोहरा ॥ परम सरधा अर प्रीत सो नित उपासे मोहि ॥ उपासक सरगुण रूप का उतम सभ ते होइ ॥७॥

टीकाकारवाच ॥

दोहरा ॥ पूरन ब्रहम यहि जगत को सरगुण धारिओ रूप ॥ जो जानै सभ ब्रहम है सु उपासक सरगुण सरूप ॥८॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ निरगुण दूसर रूप मुझ अबिनासी आखंड ॥ महिमा जिस के बचन मै आवै नही प्रचंड ॥९॥ दोहरा ॥ अबगत ऐसा रूप मुझ जो पेखे कबहूं नाहि ॥ भगत जानै यहि मन बिखै सरब बिआपी आहि ॥१०॥ दोहरा ॥ चितवन परे वहु रूप है निर अकार अद्वीत ॥ निहचल अचल प्रताप जिह निरगुण जानों मीत ॥११॥ दोहरा ॥ उपासक जो इस रूप के सो करते है एहु ॥ इंद्री संजम राखते जग मै सम वरतेहु ॥१२॥ चउपई ॥

उपासक जो निरगुण के आही ॥ कलिआन सभी लोको के चांही ॥ सभ सौ प्रीत करे वहि नीत ॥ सुखी चाहे सभ को हे मीत ॥१३॥ ऐसी द्रिसटि सम जिस को होइ ॥ तिस ही पाइओ रूप मुझ सोइ ॥ ऐसे भगत मुझ रूप कौ पावै ॥ समता सो मुझ माहि समावै ॥१४॥ बहुत कठन है निरगुन रूप ॥ परै बचन ते तिसी सरूप ॥ जिहबा तिस को सकै न गाइ ॥ मन करि वहु चितविआ नही जाइ ॥१५॥ बुध करि तिस देखै को नांहि ॥ ऐसा रूप कठन सो पाहि ॥ जीतन इंद्री समता भाई ॥ सो भी कठन बात मैं पाई ॥१६॥ दइआ सभूं लोको के माहि ॥ एह भी बहुत कठन ही आहि ॥ निरगुण उपासक जो है मीत ॥ तिन कौ सभी कठन है रीत ॥१७॥ भगतौ के अब सुख नमित ॥ सरगुण सरूप धारा मै मित ॥ जो इस सरगुण सरनी आवै ॥ सोई भगत मुझ पदवी पावै ॥१८॥ अपने करम सभ मुझ पै अरपै ॥ जो कुछु करै मुझ मांहि समरपै ॥ कहे करे है सभ भगवांन ॥ जो वरते तिस आगिआ जांन ॥१९॥ ऐसे जोगु करि मुझ सो जुड़े ॥ आठ पहर मुझ सिमरन करै ॥ मेरे उपासक जो है मीत ॥ जनम मरन नाही तिन रीत ॥२०॥ संसार भरम ते तिस कौ तारौ ॥ तातकाल मै तिसी उबारौ ॥ जिन मन का चेता मुझ मैं राखा ॥ भगत अंम्रित तिस नर ने चाखा ॥२१॥ इस उपरंत कछु करनां नांही ॥ सभु कछु जांनै हुकम हरि माही ॥ यहि बात सत वहु जानै ॥ संसार नही सभ ईस पहिचानै ॥२२॥ हे अरजन मन मुझ मै राख ॥ सभ कछु मेरी आगिआ लाख ॥ बुध चेता जब निहचा होइ ॥ परम कलिआन पावैगा सोइ ॥२३॥ अर जो मन तुझ लागै नांही ॥ आठ पहर चितवन के मांही ॥ अभिआस करो तुम अपनी बुध सौ ॥ मन कौ पकड़ो जुध कर बुध सौ ॥२४॥ बुध करि पकड़ गोबिंद मै राखो ॥ यही अभिआस उतम मै आखो ॥ अर अभिआस जो कीआ न जाइ ॥ मन

चलते को सांत न पाइ ॥२५॥ तब मेरे नमित करम नित करो ॥ मेरी सेवा मन मै धरो ॥ प्रातकाल सोने परजंत ॥ पूजा मांहि रहो वरतंत ॥२६॥ यही पूजा जो मुझ को जानहुं ॥ सभी बासदेव चित मानहु ॥ इत प्रकार मुझ लागै जब मन ॥ मेरे मारग का पावै तूं धन ॥२७॥ मेरी पूजा करते जोइ ॥ तिस कौ मुकत प्रापत होइ ॥ जो तूं यहि नाही कर साकै ॥ इस पूजा मै मन नही राखै ॥२८॥ अवर सुनो हो अरजन यार ॥ दो कर जोड़ करो नमसकार ॥ मुख ते कहो हे किसन स्वांमी ॥ सरब घटा के अंतरजामी ॥२९॥ तुमरी सरनि राखो तुम आप ॥ जो तुम सभ मै रहै बिआप ॥ यहि कहि करि मुझ पाइन परो ॥ बांछा कोई न मन मैं धरो ॥ करमो का फल तिआगो मीत ॥ बिखिआ ते मन राखो जीत ॥३०॥ दोहरा ॥ मन भगवांन मैं राखता तिस का नाउ अभिआस ॥ अभिआस जोग जो नर करै पावै मुझ मै बास ॥३१॥ दोहरा ॥ परम कलिआंन अभिआस जो भगतौ कौ नित देइ ॥ भगत मेरे अभिआस तें सांत सुख सभ लेइ ॥३२॥ दोहरा ॥ मुझ जानन का गिआन गीता भागवत मांहि जो ॥ सहजे प्रापत होत है भगत मेरे को सो ॥३३॥ सोरठा ॥ ऐसा मेरा गिआंन भगत पावै आनंद सुख ॥ उपजै तिन को गिआंन मुझ लीला मै नित रहै ॥३४॥ सोरठा ॥ रमत जो लीला मांहि तिस का नाम धिआन है ॥ मेरी पदवी माहि लीन रहे वहि धिआंन सों ॥३५॥ सोरठा ॥ बहु जनमो के करम भले बुरे जो तिन कीए ॥ तिसी धिआन के धरम सभी करम तिह तिआग जांहि ॥३६॥ दोहरा ॥ करम आगै तिस के रहै पावै पदवी सांत ॥ सांत रूप जो भगत है लछन तिस इह भांत ॥३७॥ दोहरा ॥ बुरा न चितवै किसी का मन चित बचनों मांहि ॥ देवे दुख न किसी को सभ सो मित्र आहि ॥३८॥ दोहरा ॥ दइआल रहै वहु सभूं परि मम अहंकार ते रहत ॥ सुख दुख माहि समांन

हो संतुसट रहै मुझ सहत ॥ ३९॥ दोहरा ॥ निरंतर मुझ सो जुड़ रहै मन राखै वहु जीत ॥ द्रिड़ निहचा जिस मुझ बिखै बिखै न राखै चीत ॥ दोहरा ॥ ऐसा जो को भगत है मुझ को पिआरा होइ ॥ हरख सोग ते रहत वहु भउ राखै नही कोइ ॥४१॥ दोहरा ॥ भउ न दिखावै किसी कौ सभ सौ राखै हित ॥ ऐसा भगत वहु मुकत है सोई मेरा मित ॥४२॥ दोहरा ॥ बाछै नांही वसत किछु नित राखै मुझ धिआंन ॥ पवित्र राखै देहि कौ जल सौ करे इसनांन ॥४३॥ दोहरा ॥ देहि पवित्र इसनान सौ मन पवित्र मुझ गिआंन ॥ नित राखै वहु अमल भगत उतम नर प्रधान ॥४४॥ मंगल छंद ॥ ऐसा भगत मेरा जो ॥ ऐसी रहत जा मै हो ॥ सुख रूप नित वहु रहै ॥ चईतन आप माही लहै ॥४५॥ संसार माहि उदास ॥ तिस सदा मुझ मै बास ॥ सभ अरथ तिआगै मीत ॥ ऐसे भगत सो मुझ प्रीत ॥ कछु हरख सोग न करै ॥ बुरा भला सम चित धरै ॥ चिंता करै नाही कोइ ॥ कांखा किसी की नही होइ ॥४७॥ सुभ असुभ दोऊ तिआग ॥ वहु तो रहिआ मुझि सौ लाग ॥ मुझ साथ मिलिआ रहै ॥ वहु भगत प्रीतम अहै ॥४८॥ मित्र सत्र एक समांन ॥ यहि बिधि भगत कौ पहिचांन ॥ निरादर आदर तिस सम होइ ॥ तिस कौ उसन सीत न कोइ ॥४९॥ दुख सुख देहि का सम लहै ॥ दुतीए भाउ मैं न रहै ॥ उसतति निंद दोऊ समान ॥ मोनी होइ ब्रहम पहिचान ॥५०॥ सभ एक जानै मीत ॥ एक अबाच राखै चीत ॥ यहि मोन उतम होइ ॥ जानै एक हरि सभ सोइ ॥५१॥ संतुसट नित वहु रहै ॥ धीरज गिआन को वहु गहै ॥ बसती ठउर ना को करे ॥ घर का अरंभ मन नही धरे ॥५२॥ ठउर बनी होई होइ ॥ तहां वहु जाइ बसता सोइ ॥ तहां वहु बैठ मुझ सो जुड़ै ॥ वहु नित भजन मेरा करे ॥५३॥ मन राखै वहु मुझ मांहि ॥ रहै लीन मुझ सौ आहि ॥ पिआरा भगत मेरा सोइ

॥ एते लछन जिस मो होइ ॥५४॥ जैसे लछन तुझ कौ कहे ॥ जे को नित तिन मो रहे ॥ सो लछन अंम्रित आंहि ॥ वरतै जो को इन के मांहि ॥५५॥ तिस को रोग दूख न होइ ॥ अंम्रित चाखिआ तिन सोइ ॥ ऐसा धरम उतम अहै ॥ पाछै सभी तुझ कौ कहै ॥५६॥ ऐसे धरम सेवै कोइ ॥ सभ ते स्रेसट मुझ को होइ ॥ नाम भगत तिस नर होइ ॥ जो यहि धरम पावै कोइ ॥५७॥

टीकाकारवाच ॥

चउपई ॥ द्वादसमो धिआइ संपूरन कहा ॥ लछन संत का तिस मो लहा ॥ खालसा सो जो इस मै वरतै ॥ संतुसट रहै धरम इस करते ॥५८॥ सो खालसा अति सुख कौ पावै ॥ जीवन मुकत वहु पुरख कहावै ॥ गोबिंद रूप वहु सभ को जानै ॥ सभ संसार हरि रूप पहिचानै ॥५९॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते भक्ति योगो नाम बारवां अध्याय ॥ १२॥१२७६॥

आगे अध्याय तेरवां चलिआ ॥

अरजनोवाच ॥

छंद ॥ प्रसन कहे है अरजन श्री भगवान पै ॥ हे केसव दीन दइआल मुझ को उतर देह ॥ प्रकिरत पुरख को अरथ खेत्र खेत्रग बतावहु ॥ गिआन गेउ इह खसट मुझे तुम भाख सुनावहु ॥ सभ को अरथ मुझ भाखो माधोदेव सति ॥ यही मेरी अरदास भाखो खसट गति ॥१॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ उतर देवै रिखीकेस पारथ प्रसन जो आहि ॥ हे अरजन तूं समझ लै सभ मै भाखो तांहि ॥२॥ चउपई ॥ खेत्र खेत्रग अरथ ॥ यहि

जो दीसै मानस देहि ॥ इस को खेत्र मन मो लेहि ॥ जो कछु बोए खेत्र मांहीं ॥ सो सभ खेत्री द्रिसटी आंही ॥३॥ तैसे करम जो देहि मै करै ॥ तिस का फलु सभ नदरी परै ॥ इस कारन देहि खेत्र कहीऐ ॥ बहुत वसत तें थित तिह लहीऐ ॥४॥ सो थित एक ठाकुर जी करा ॥ थित कौ जानन मन मौ धरा ॥ जाननहार खेत्रग कहावै ॥ जो देहि थित कौ सगल बतावै ॥५॥ सो सभ जाननहार मै पारथ ॥ मेरो नाम खेत्रग जथारथ ॥ सो खेत्रग तुम मुझ को जानो ॥ अब खेत्र समग्री सगल बखानो ॥६॥ आगै रिखो कही बहु भांत ॥ स्रुत भी कहिओ सभ देहि ब्रितांत ॥ ब्रहम वेता जो वेद कौ जानें ॥ तिन भी थित के अरथ बखानें ॥७॥ तिनो बिखै जो स्रेसट मै हौं ॥ समग्री देहि अब तुझ सो कहिहौं ॥ जो निहचे करि तुझ को कहौं ॥ सो विसेख सरब तें लहों ॥८॥ दिब खेत्र जो देहि मानुख ॥ तिस ते सीत उसन सुख दुख ॥ भिंन भिंन ब्रितंत सभ भाखौ ॥ प्रिथमे पंच तत कौ आखौ ॥९॥ भूम जल अगन बाइ अकास ॥ तिन ते देहि खेत्र प्रकास ॥ भूम अंस मास को जानों ॥ रुध्र अंस तोइ को मानों ॥१०॥ अगन अंस खुधिआ है मीत ॥ पउन अंस स्वास धर चीत ॥ अकास अंस पोलार सभ कहीऐ ॥ देहि पांच भूत को लहीऐ ॥११॥ अवर वसत पाछै जब मिलै ॥ ताते देहि प्रगट हो चलै ॥ मन चित बुधि अहंकार यहि चार ॥ इंद्री दस अब कहौ पुकार ॥१२॥ पंच इंद्री गिआंन तुम जांनो ॥ करम इंद्री पंच फुन मांनो ॥ नेत्र स्रोत्र अरु जिहवा नास ॥ पंचम तुचा गिआंन इंद्री रास ॥१३॥ वाक हाथ पांउ गुद पाउ ॥ पांचो करम इंद्री चित लाउ ॥ इंद्री अहार भिंन भिंन जानो ॥ नेत्र अहार देखन को मानो ॥१४॥ जिहवा अहार स्वाद धर चीत ॥ गंध अहार नास कौ मीत ॥ सबद अहार स्रोत्र को भाई ॥ तुचा अहार सपरस बताई ॥१५॥ दस इंद्री को थित एह मांहि ॥ आगै कहो जो तिस वरतांहि ॥ भली वसत महि इछिआ रहै ॥ बुरी वसत को बिखिआ कहै ॥१६॥ कबहूं सुख कबहूं है दुख ॥ चारो मै वरतै मानुख ॥ इन मै

देखो चईतन जैसा ॥ इन चारो मै साखी कैसा ॥१७॥ सुख पावै कहै हउ सुखी ॥ दुखी होइ कहै हउ दुखी ॥ यहि चारो देहि खेत्र मांहि ॥ सो चारो तिस मै वरतांहि ॥१८॥ खेत्र ब्रितांत थोरे मै कहिआ ॥ देहि थित संपूरन भइआ ॥ आगै चईतन जांनन गिआंन ॥ हे अरजन अब कहौं बखांन ॥ एते लछन जो कोई करहै ॥ गिआन दीप तिह घट मै जर है ॥१९ ॥ दोहरा ॥ मान भाउ को दूर करि डिंभ न राखै कोइ ॥ मन बचनन अर करम सौ सभ को मित्र होइ ॥२०॥ दोहरा ॥ इसथावर जंगम जीव को दुख ना देवै सोइ ॥॥ खिमावंत अर दइआवांन निरमल नित ही होइ॥२१॥ दोहरा ॥ सेवा करै गुरदेव की जो उस देवै गिआंन ॥ सो गुर हरि का रूप है गोबिंद तिस को मान ॥२२॥दोहरा ॥ पवित्र राखे देह को जल सौ करि इसनान ॥ मन पवित्र नित करै सुन सुन मेरा गिआंन ॥२३॥ दोहरा ॥ धीरज सो मन द्रिड़ करे जावन कहूं न देइ ॥ नित अनित जो सांख है तिह बीचार करेइ ॥२४॥ दोहरा ॥ इंद्री अरथ जो भोग है तिह का करै तिआग ॥ रहत होइ अहंकार ते गिआन साधन मै लाग ॥२५॥ दोहरा ॥ यहि साधन गिआन नमित है जो धारै है कोइ ॥ जनम मरन अरु जरा सौ वहु नर मुकता होइ ॥२६॥ दोहरा ॥ ऐसी जो सरधा करै रोग दोख होइ नास ॥ ऐसे साधन ते सखे गिआन होइ प्रगास ॥२७॥ दोहरा ॥ अवर साधन अब कहत हौ जिउ ग्रिहि वरतै सोइ ॥ इस्त्री पुत्र कुटंब सभ मित्र न जानै कोइ ॥२८॥ दोहरा ॥ उदास रहै नित जग सौ जानै ऐसी रीत ॥ पांधी जिवैं सराइ मै रैन बसेरा कीत ॥२९॥ दोहरा ॥ ऐसे ग्रिह को जानता इह बिध वरते सोइ ॥ सत्र मित्र करि मानता देखै सम सभ कोइ ॥३०॥ मंगल छंद ॥ मुझ भगत ऐसा होइ ॥ अखंड भगत धारै सोइ ॥ सील भगत यिउ मुझ साथ ॥ गावै नित मेरी गात ॥३१॥ अब बसै ऐसी ठउर ॥ मानुख जहां नांही होर ॥ ऐसी इकात ठउर बन बसै ॥ मेरे भजन सौ वहु रसै ॥३२॥ सुख संसार संग न करै ॥ मेरा गिआन नित मन धरै ॥ यहि सभ गिआन

की है बात ॥ जो को धारै मन मौ सांत ॥३३॥ उपजै तिसी मन गिआन ॥ तिस दिसटांत ऐसा मान ॥ जैसे दीप धरे जलाइ ॥ ग्रिह मैं चांदना प्रगटाइ ॥३४॥ देखै सभी चांदना मांहि ॥ तैसे गिआंन दीपक आंहि ॥ गिआनो देख है मुझ सोइ ॥ गिआंन ऐसी भांत होइ ॥३५॥ लछन पावने यहि गिआंन ॥ पारथ सभी साचे मांन ॥ जे को कहै अवर प्रकार ॥ सो सभ झूठ तूं बीचार ॥ गेउ अरथ अब मै कहों ॥ गेउ नाम अपना लहौं ॥३६॥ दोहरा ॥ गेउ नाम अनाद है परै सभू ते आहि ॥ परम ब्रहम मै एक हौं गेउ नाम मुझ तांहि ॥३७॥ दोहरा ॥ परे देहि ते ब्रहम है सरब बिआपी जांन ॥ सरब ठउरो मैं हाथ पाउ एको हरि के मांन ॥३८॥ दोहरा ॥ सभ ठउरौ मैं चछ तिस सीस सभी दिसटाहि ॥ मुख सगले जो देखीऐ सभी ब्रहम को आंहि ॥३९॥ दोहरा ॥ नासां कान सभ ठउर मै तिस धारे है मीत ॥ सरब बिआपी ब्रहम जो अद्वै है इह रीत ॥४०॥ दोहरा ॥ प्रकास करे सभ इंद्रीआ भिंन रहै वहु आप ॥ निरमोह रहै नित सभी ते सभ मै रहिआ बिआप ॥४१॥ दोहरा ॥ निरगुण है वहु आतमा गुन भोगै है सोइ ॥ इसथावर जंगम के बिखे बाहिर भीतर होइ ॥४२॥ दोहरा ॥ बाहर भीतर रम रहिआ   एको गोबिंद रूप ॥ सूखम ते सूखम वही आपे थूल सरूप ॥४३॥ दोहरा ॥ जानन तिस का अत कठन कहते है सभ कोइ ॥ किआ जानीऐ वहु कहां है यहि भी कहिहै सोइ ॥४४॥ दोहरा ॥ सभ के बिखै वहु बिआपिआ सभ का प्रेरनहार ॥ ऐसा ब्रहम अद्वैत जो गेउ तिसी बीचार ॥४५॥ ऐसा जानो गेउ तुम जब ग्रासै सभ लोग ॥ अपनें मो सभ मेलता ग्रासन नाम तिस जोग ॥४६॥ दोहरा ॥ प्रगट करे संसार वहि प्रणवो होइ तिस नाम ॥ ईसर हो जब बिआपता बिसन नांम तिह राम ॥४७॥ दोहरा ॥ जोतो मै सभ जोति तिस तम अगिआन ते दूर ॥ मम अहंकार ते परे है सभ अंतर भरपूर ॥४८॥ दोहरा ॥ गेउ रूप मुझ नाम है गिआनौ देखन होइ ॥ तिस को देखै कोइ नां गिआनो पाए सोइ ॥४९॥

टीकाकारवाच ॥

देखन दुतीआ भाउ है दिसट दिसटा वहि आप ॥ ऐसा गेउ वहि आतमां सभ मै रहिआ बिआप ॥५०॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ खेत्र खेत्रग अर गेउ गिआन तुझ पै आखिओ मीत ॥ जो को मेरा भगत है सो समझे यहि रीत ॥५१॥ दोहरा ॥ इस प्रताप को समझ करि सरधा प्रीत बडाइ ॥ मेरे जोग सो जुड़त है तिस ते वहु सुख पाइ ॥५२॥ सोरठा ॥ पुरख प्रकिरत ब्रितांत हे अरजन अब सुनो तुम ॥ सुनते उपजे सांत जैसे मै अब कहत हौ ॥५३॥ चउपई ॥ प्रकिरत नाम माइआ का भाई ॥ पुरख जीउ को नाम कहाई ॥ यहि दोनो अनादि तुम जानो ॥ जैसे अनादी मुझ को मानो ॥५४॥ जब का हउ हों तब के एह ॥ तीनो गुन अनादि सुन लेह ॥ पांचो तत अरु तीनो गुन ॥ मन बुध अहंकार सभ इंद्री फुन ॥५५॥ तिन कौ उपजावै सो माइआ ॥ यही प्रकिरत नाम कहि गाइआ ॥ कारज कारन करता तीन ॥ सो भी एक माइआ तूं चीन ॥५६॥ तिन का अरथ ऐसा मुझ लहा ॥ जीउ माटी ते भांजन भइआ ॥ बासन कारज रूप है भाई ॥ माटी को कारन कहि गाई ॥५७॥ बासन करता जिउ कुंभार ॥ सो करता मन मांहि बीचार ॥ तिउ संसार सभ कारज रूप॥ तिस का कारन माइआ भूप ॥५८॥ माइआ ते संसार जब भइआ ॥ पदारथ तीन माइआ मै लहिआ ॥ अब पुरख की बात सुनौ तुम ॥ देहि प्रकिरत ते भइओ सूछम ॥५९॥ जीव पुरख बसे बप मांही ॥ इंद्री गुन माइआ उपजांही ॥ इंद्रीओ संग गुनो को भोगै ॥ भ्रमता फिरै जीउ विच लोगै ॥६०॥ अब मुझ बात सुनो रे पारथ ॥ माइआ पुरख जो कहिओ जथारथ ॥ दोनो मिल संसार बनावै ॥ मुझ आगै कउतक दिखरावै ॥६१॥ कउतक

देखनहार मुझ जानों ॥ बनावनहार सभ का मुझ मांनो ॥ संसार कउतक जो दिसटी आइ ॥ भोगी तिस का मुझ को पाइ ॥६२॥ महां ईसर मै ईसर आंहि ॥ मेरो करनहार को नाहि ॥ देहि जीउ ते परे जो कहीऐ ॥ सो प्रमातमा मुझ को लहीऐ ॥६३॥ सुख दुख जो को भोगता जानै ॥ तिस को कारन त्रैगुन मानै ॥ उतपति तिस माइआ ते मानै ॥ कउतक साखी मुझै पहिचानै ॥६४॥ इस जानन ते यहि फल पावै ॥ जनम मरन मै बहुड़ न आवै ॥ मुकत होइ यहि जानै सोइ ॥ जांननहार सरूप मुझ होइ ॥६५॥ दोहरा ॥ एक भगत मुझ धिआन को मन मे धरते नीत ॥ एक सांख सास्त्र बीचार कै मुझ कौ राखै चीत ॥६६॥ एक करे है करम जोग सरगुण धिआन लगाइ ॥ एक सुनै प्रताप मुझ मेरे गुन ही गाइ ॥६७॥ दोहरा ॥ जो सुन करि मुझ संग लागते वधै तिनहु की प्रीत ॥ वहि भी तर संसार ते मुझ को धरते चीत ॥६८॥ दोहरा ॥ एते भगत सभ तरत हैं मुझ सौ लावै प्रेम ॥ जो पावै सो प्रेम तें ऐसा मेरा नेम ॥६९॥ दोहरा ॥ हे अरजन अब अवर सुन इस्थावर जंगम जो ॥ सभ मै सम जीउ वरतदा सभ को राखै सोइ ॥७०॥ दोहरा ॥ देहि खेत्र को अरथ है जीउ खेत्रग है सोइ ॥ दोनो के संजोग ते सरब पसारा होइ ॥७१॥ दोहरा ॥ परमेसुर जो प्रमातमां सम सभहूं के मांहि ॥ बिआप रहिआ सभ के बिखे सो अबिनासी आंहि ॥७२॥ दोहरा ॥ देहि बिनास सरूप है तिस का नाही बिनास ॥ जिन अबिनासी जानिआं तिस को गिआंन प्रगास ॥७३॥ दोहरा ॥ गिआंन नेत्र सो देखीऐ ऐसा हरि का रूप ॥ समान बिआपिआ सरब मै गोबिंद पुरख अनूप ॥७४॥ दोहरा ॥ यही पहिचान गोबिंद की सभ मैं सम तूं जांन ॥ इसथावर जंगम जीउ कौ मूल दुखावै नाहि ॥७५॥ दोहरा ॥ सुखदाई हो सभन का सभ पर हो क्रिपाल ॥ जानै सभ मै सम प्रभू

गोबिंद दीन दइआल ॥७६॥ दोहरा ॥ ऐसा जो को जानता परम गति वै नर पाइ ॥ प्रापत होवै मुझ बिखै मुझ सरूप होइ जाइ ॥७७॥ सोरठा ॥ ऐसा जानै जो सभ इंद्री वरजै बिखिओ ते ॥ सभ माइआ ते सो आतम अक्रै रूप है ॥७८॥ दोहरा ॥ माइआ सो सभ वरतदा आतम साखी रूप ॥ जैसे दीपक ग्रिह बिखै दूर करे तम कूप ॥७९॥ दोहरा ॥ चांदन करे सभ ग्रिह विखै वहु कछु करता नांहि ॥ सभ ग्रिह को प्रकासता आप निरलेपी आंहि ॥८०॥ दोहरा ॥ तैसे ही प्रमातमां इंद्री गुन के मांहि ॥ प्रकास करे वहु सभी को आप निआरा आंहि ॥८१॥ दोहरा ॥ अकरता हरि को देखता वहि भी अक्रै होइ ॥ जैसी होवै मत तिस गति पावै है सोइ ॥८२॥ चउपई ॥ हे अरजन अब सुन तूं बात ॥ यहि भूत प्रानी जो द्रिसटात ॥ मलीन बुध ते भिंन भिंन जानै ॥ एकम मांहि नां नित वहु ठानै ॥८३॥ मलीन बुध जब गत हो आवै ॥ तब ऐसे तिस कौ द्रिसटावै ॥ जानै एको आतम राम ॥ सरब मांहि तिस को बिस्राम ॥८४॥ एक ब्रहम अद्वैत अज सोइ ॥ दूसर कोई होवा न होइ ॥ जब ऐसी बुध परगट होइ ॥ तिन जाननहारे पाइआ सोइ ॥८५॥ सो तो मिलिओ ब्रहम के मांहि ॥ ब्रहम अनाद निरगुन ही आहि ॥ प्रमातमा अबिनासी कहीऐ ॥ सभ सरीर मै तिस कौ लहीऐ ॥८६॥ हे अरजन तूं ऐसे जांन ॥ सरीरो मांहि एक तूं मांन ॥ तहां बसे अर कछु न करे ॥ अकरता अलेप सो गोबिंद हरे ॥८७॥ सभ देहो के अंतर मांही ॥ बसे अलेप लगे तिह नाही ॥ तिस दिसटाति ऐसे वहु होइ ॥ बिआपिओ तिहं भीतर सभ कोइ ॥८८॥ सभहूं ते निआरा वहु कहीऐ ॥ ऐसा निरलेप ब्रहम को लहीऐ ॥ सभहूं मध बिआपिआ सोइ ॥ सदा निरलेप सरब मै होइ ॥८९॥ गेउ नाम जो मेरा पिआरे ॥ तिस प्रताप अब कहौ पुकारे ॥ उदे भांन जिउ होइ प्रभात ॥ ब्रहमंड मांहि प्रकासै तात

॥९०॥ बहुत देस ब्रहमंड मै आहि ॥ सभ को सम प्रकास कराहि ॥ आगै पाछै प्रकास न करै ॥ एको दिसट सभू पर धरै ॥९१॥ तिउ ब्रहमा आदि चीटी परजंत ॥ मै समान सभ मै वरतंत ॥ एक बार सभ को प्रकासौ ॥ समान सभूं के भीतर बासौं ॥९२॥ उघाड़ो नैन स्रिसट सभ होइ ॥ मूंदो नैन परलै है सोइ ॥ जो इस धिआइ मै गेउ सुनाइ ॥ जो यहि गिआंन सुन मन मै लाइ ॥९३॥ अर गिआंन नेत्र सो मुझ कों जांनै ॥ समझै धारै मुझै पहिचांनै ॥ तिस को इह फल प्रापति होइ ॥ संसार जाल मै फसै न कोइ ॥९४॥ वहु जाल तोड़ मुझ पद मै आवै ॥ अबिनासी इस्थान सो नर पावै ॥ ब्रहम आनंद मै प्रापत होइ ॥ तिस ते परै अवर नही कोइ ॥९५॥

टीकाकारवाच ॥

तिरोदस धिआइ अति सुंदर मीत ॥ सो भाखा मै पूरन कीत ॥ जो बासदेव कहिओ अरजन मांहि ॥ खालसे को उपदेस यहि आहि ॥९६॥ मेरी अर भगवांन की बात ॥ एको जांनों मन मों सात ॥ सभ भगवान तिस बिन को नाहि ॥ तुम हम एक अकाल ही आहि ॥९७॥ पड़ो सुनो अर मन मै धारो ॥ गीता अरथ तुम रिदै बीचारो ॥ बेद तें परे यहि गीता भई ॥ सो बासदेव अरजन प्रति कही ॥९८॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते खेत्र खेत्रग विभाग योगो नाम तेरवां अध्याय ॥१३॥१३७४॥

आगे अध्याय चौदवां चलिआ ॥

श्री भगवानोवाच ॥

अड़िल ॥ भाखे श्री भगवांन ऐसी बात फुन ॥ धरम गिआन अति उतम अरजन बहुड़ सुन ॥ जिस के जाने बेग माइआ तरी जाए ॥ परम सिध

संजुगत मुकत प्रापत पाए ॥१॥ जिन समझिआ यहि गिआंन तिन सिमरन कीआ ॥ धारनहार का धरम मुझ जैसा थीआ ॥ यिउ उतपति परलो मांहि निआरा मैं रहौं ॥ जिन धारिआ यहि गिआन तैसा तिन लहौ ॥२॥ दोहरा ॥ तूं भी ऐसा समझ करि मेरी सरनी आइ ॥ मेरे सिमरन भजन ते संसार समुंद्र तर जाइ ॥३॥ दोहरा ॥ उतपति परलै संसार सो निआरा मै हो मीत ॥ मुझ समांन तूं होइगा गिआन धार धर चीत ॥४॥ दोहरा ॥ यहि प्रताप जिस गिआंन का सोई गिआंन मै आप ॥ मेरा नाम महद ब्रहम सभ मो रहिआ बिआप ॥५॥ दोहरा ॥ महद ब्रहम इत कारने सभ की उतपत ठउर ॥ उपजावनहारा जगत का मुझ बिन नांही अउर ॥६॥ दोहरा ॥ अपने गरभ तें सभी को प्रगट कर हौ मीत ॥ महद ब्रहम है नाम मुझ इस कारन धर चीत ॥७॥ दोहरा ॥ मेरा नाम इक ब्रहम भी हे कुंती सुत जान ॥ इस्थावर जंगम उपजिआ एक ब्रहम तें मान ॥८॥ दोहरा ॥ लख चउरासी मेदनी उपजी नांनां रंग ॥ एक सम दूजा नांहि को सभ अद्वैत असंग ॥९॥ दोहरा ॥ आगे बीते सगल नर जो अब जग मैं आहि ॥ जिन को आगे होवनां किसी समांन को नांहि ॥१०॥ दोहरा ॥ एको ही मुझ ब्रहम ते बहु बिधि उपजिओ मीत ॥ ब्रहम महद इस कारने मेरा नाम धर चीत ॥११॥ दोहरा ॥ मै हौ पित संसार का बडी जोन मुझ आंहि ॥ मुझ ते परे न अवर कछु ऐसा जांन मन मांहि ॥१२॥ दोहरा ॥ मेरी माइआ ते तीन गुन परगट होए मीत ॥ जीउ अबिनास अखंड को तिनही बंधन कीत ॥१३॥ दोहरा ॥ अबिनासी जीव सभ देहि मै जैसे बांधिओ मीत ॥ तीन गुनौ सिउ बांधिआ भिंन भिंन राखो चीत ॥१४॥ चउपई ॥ तीन गुनौ की कथा सुनावौ ॥ जिउ जीउ फसिआ तिन मैं पावौ ॥ पहिले सुन सांतक बीचार ॥ जिउ बांधिओ जीउ सांतक यार ॥१५॥ सांतकी मानस ऐसा होइ ॥ निरमल सुभाउ पवित्र ही होइ ॥ तिन के रिदे होइ प्रकास ॥ सदा सुखी सांत मैं बास ॥१६॥ तिन के बप कौ कसट न लागै ॥ गिआन दीप तिन के

घट जागै ॥ हे निहपाप अरजन प्रधान ॥ ऐसी बिधि सांतक के जान ॥१७॥ राजस ॥ अब ब्रतंत राजस का सुनौ ॥ जैसे मै तुझ पै अब भनौ ॥ राजस गुन को यहि सुभाउ ॥ देहि कुटंब सौ मोह लगाउ ॥१८॥ राजस मांहि जीउ जब आवै ॥ त्रिसना धंन की अति बहु पावै ॥ उपजावन द्रब का उदम करै ॥ सोग हरख सदा मन धरै ॥१९॥ इत प्रकार बाधिओ जीव राजस ॥ आगे कहों बात सुन तामस ॥ तांमस ॥ तम गुन जीउ जो जग मैं आही ॥ अगिआंन मांहि सदा वरताही ॥२०॥ मोहनहार जीव का जोइ ॥ आलस नीद मै वरतै सोइ ॥ बाधिओ जीउ तम गुन यहि रीत ॥ अवर सुनो अब अरजन मीत ॥२१॥ सांतक गुन बहु सुख उपजावै ॥ उपजै करम रज गुन जब आवै ॥ खिमा माहि जीउ नही रहै ॥ नित उदम कौ मन मौ गहै ॥२२॥ तम उपजावै नित अगिआंन ॥ असावधानता तिहं तें मान ॥ तीनो गुन सभ भिंन भिंन जो ॥ मानुखो मांहि वरते नित सो ॥२३॥ कबहूं वरते सांतक राजस ॥ कबहूं असावधानता तामस ॥ अब तिह वधता भिंन भिंन सुनौ ॥ तीनौ गुन जिउ वधते भनौ ॥२४॥ जब एते लछन होहि जीउ मांहि ॥ सांतक तिहं तें वधिआ आहि ॥ देहि द्वार मै होइ प्रगास ॥ मन निरमल गिआंन मै बास ॥२५॥ तब सांतक गुन वधिआ जाने ॥ सांतक तें गिआंन मन माने ॥ राजस गुन वधे तब लछन एह ॥ द्रब उदम वहु नित करेह ॥२६। सुख दुख माहि सदा वहु रहै ॥ इस ते वधिआ रज गुन लहै ॥ तम गुन वधे के लछन कहों ॥ प्रमाद मोह सभ तम मै लहों ॥२७॥ देह द्वार ते तेज घट जाइ ॥ तम गुन वधे इह लछन पाइ ॥ छूटे देह सांत गुन मांही ॥ वहि नर देवलोक को जाही ॥२८॥ रज गुन वधे देह छुट जावै ॥ बहुड़ मानुख देह कौ पावै ॥ तम गुन वधे तिआगे देह ॥ जोन पसू नर जग मै लेह ॥२९॥ राजस का फल दुख सुख पाइ ॥ तामस फल अगिआन वधाइ ॥ सांतक मांहि उपजै निरमलाई ॥ राजस ते नर लोभ कौ धाई ॥३०॥ मोह उपजै है तम गुन मांही ॥ अगिआंन मूरत तम गुन की आही ॥ सत गुन

मांहि देह जब तिआगै ॥ बैकुंठ मांहि बेग वहि लागै ॥३१॥ प्रकिरत राजस मै जब करै ॥ मानुख देहि भूम पर धरै ॥ तम प्रकिरत मै जब देह जाइ ॥ पाताल बिखै जनम को पाइ ॥३२॥ अब जो मेरे पद कौ पाइ ॥ सुन अरजन तूं मन चित लाइ ॥ त्रैगुन ते मै परे जो आही ॥ मेरे आगे गुन वरताही ॥३३॥ तिन का कउतक देखनहार ॥ सभ ते परे मुझ को बीचार ॥ गुन सरूप भी मुझ कौ जानो ॥ गुन अतीत नित मुझ को मानो ॥३४॥ देह जीउ को मै उपजावौं ॥ सरब मध मै आप कों पावौं ॥ वहु जो मेरे पद मै आवै ॥ मुझै पहिचान मुकत हो जावै ॥३५॥ मेरे जानन का जो गिआन ॥ जो लेवै अपनें मन मांन ॥ जनम मरन जरा अर दुख ॥ तिन कौ तिआग पावै वहु सुख ॥ जिन यहि ॱअंम्रित कीआ पांन ॥ मेरे पद मै प्रापत मांन ॥३६॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा ॥ अरजन केसव बचन सुन मुखो कहे हे देव ॥ एक प्रसन अब मै कहौ तिस का उतर देउ ॥३७। दोहरा ॥ देहधारी मानुख जो होते बप वहि मुकत ॥ होते देह जो मुकत है तिह लछन किह जुगत ॥३८॥ दोहरा ॥ अरजन प्रसन जब करि रहिआ केसव बोले ताहि ॥ हे पारथ तिन तीन गुन वरते सहज सुभाइ ॥३९॥ दोहरा ॥ अपनें अपनें समे मै तीनो वरते मीत ॥ मोहावै नाही मोह सौ प्रानी अपना चीत ॥४०॥ दोहरा ॥ मोहत का अब अरथ यहि जो गुन प्रापति होइ ॥ कहै नही यहि दूर हो अरु आवै सुभ कोइ ॥४१॥ दोहरा ॥ रहै उदास नित देह सो आखै यिउ मन मांहि ॥ बप गुन दोऊ अनित है इन सो मुझ कछु नांहि ॥४२॥ दोहरा ॥ जो गुन आवै देह मैं तिन को देखे मीत ॥ निहचल राखै आतमा जानें गुन संग चीत ॥४३॥ दोहरा ॥ ऐसे कहे मन आपनें मुझ गुन सौ कछु नांहि ॥ अपनें अपनें सुभाउ मै तीनो गुन वरताहि ॥४४॥ सोरठा ॥ जो ऐसा देहि

साथ रहे अतीत गुन तीन सौ ॥ तिस की अब सुन गात कैसे वरते जगत मौ ॥४५॥ दोहरा ॥ दुख सुख को सम जानता मित्र सत्र सम जांन ॥ आदर निरादर तिसी तुल उसतति निंद समान ॥ दोहरा ॥४६॥ प्रीतम अप्रीतम एक जिह मान अपमांन समांन ॥ उठै न अरथ जिह रिदे मो गुन अतीत वहु जांन ॥४७॥ दोहरा ॥ अतीत गुनौ अर देह सौ तिस के लछन एह ॥ हे अरजन तुझ को कहों समझो तुम सरबेह ।४८॥ दोहरा ॥ इत प्रकार गुन देह जो सो नर मुकता होइ ॥ मारग तिस चईतन है सीलवंत है सोइ ॥४९॥ दोहरा ॥ सीलवंत वहु भगत है दूजा देखै नांहि ॥ मेरी सेवा नित करे दास भाउ के माहि ॥५०॥ दोहरा ॥ दास भाउ वहु होइ कर एको सेवै सोइ ॥ ऐसा भगत अति निरमला गुन अतीत वहु होइ ॥५१॥ दोहरा ॥ बिस रूप जो संसार जो तिस का मै प्रभ आप । सबद ब्रहम जो बेद है तिस मै रहिआ बिआप ॥५२॥ दोहरा ॥ सो तो जीवन मुकत है होते बप के माहि ॥ मुकत दरस जो चाहता देखै तिस कौ जाइ ॥५३॥ दोहरा ॥ ऐसे मेरे भगत कौ जो देखे हित लाइ ॥ मूरतवंत जो मुकत है तिस का दरसन पाइ ॥५४॥ सोरठा ॥ अब तूं मुझ कौ जान जो मै कैसा अरजना ॥ ब्रहम का ब्रहम मुझ मांन मुझ ते परे न अवर को ॥५५॥ दोहरा ॥ इतनिओ का नाउ ब्रहम है समझो हिरदै मांहि ॥ सबद मुकत बैकुंठ त्रै चउथा मेदन आहि ॥५६॥ दोहरा ॥ सबद ब्रहम जो वेद है सो है ब्रहम प्रकास ॥ सभ ही परगट ताहि मै ता सो नित अबिनास ॥५७॥ दोहरा ॥ मुकति नाम जो ब्रहम है तिस का मै प्रभ आप ॥ बैकुंठ नाम जो ब्रहम को तिस का इह प्रताप ॥५८॥ दोहरा ॥ अकाल अबिनासी रूप मुझ पुरातन मेरा नाम ॥ भलिओ ते मै भला हो ऐसा धरम मुझ जांन ॥५९॥ दोहरा । निआरा सभ ब्रहमंड ते अनंत सुख मेरो धाम ॥ परम ब्रहम जो

एक है सो तूं मुझ को मान ॥६०॥ सोरठा ॥ ऐसा ब्रहम सुख रूप हे अरजन मुझ जान तूं ॥ मै गोबिंद सरूप जो दीसै सो एक मै ॥६१॥

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ चत्र दसवां धिआइ अति सोभावांन ॥ अरजन माहि कहिओ भगवांन ॥ इस धिआइ की रहत जो धारै ॥ सो है खालसा रूप हमारै ॥६२॥ खालसे माहि कहिओ उपदेस ॥ जो अरजन को कही सुरेस ॥ एक अकाल सभी कछु जानों ॥ संसार आप इक गोबिंद मानों ॥६३॥ वरन आस्रम तुम सगल तिआगो ॥ ब्रहम गिआंन मै निसदिन लागो ॥ जानो सभ कछु एक अकाल ॥ जो देखो एक गोबिंद दइआल ॥६४॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते गुण त्रय विभाग योगो नाम चउदवोऽध्याय ॥१४॥१४३८॥

आगे अध्याय पंद्रवां चलिआ ॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ हे अरजन तूं समझ ले यहि जग तरवर रूप ॥ ऊपर मूल अर साखा नीचे ऐसा जिसे सरूप ॥१॥ दोहरा ॥ असत अर अबिनासी इस को भाखैं जन प्रधान ॥ अब इस का ब्रितांत सभ तुझ पै कहौ बखान ॥२॥ चउपई ॥ यहि देहि धारी जीउ जो आही ॥ जब आवै गरभ माता के मांही ॥ इस का मूल सिर तब होवै नीचा ॥ चरन साखा इस होवै ऊचा ॥३॥ जब वहु जीउ जनम को पावै ॥ तब उह ब्रिछ उलटो होइ जावै ॥ सिर जो मूल सो ऊपर होइ ॥ साख जो चरन नीचे है सोइ ॥४॥ उरध मूल तब इस का नाम ॥ असत अबिनासी ऐसे जांन ॥ है एह देह बिनास

सरूप ॥ असत नाम तब ऐसे भूप ॥५॥ जीव ईसर नित जो आहि ॥ अबिनासी नाम ऐसे है ताहि ॥ इस ब्रिछ को जो सिर होइ ॥ चारो बेद पात है सोइ ॥६॥ धरम अधरम सभ बेद बतावै ॥ जुगत अजुगत सभ बात सुनावै ॥ ऐसे ब्रिछ को जिन पहिचाना ॥ सो पंडित बेद पाठी जांनां ॥७॥ संसार ब्रिछ जो द्रिसटी आइ ॥ ऊपर ब्रहमलोक लग पाइ ॥ नीचे सेस के लोक परजंत ॥ इह ब्रिछ पसरिआ ऐसी भंत ॥८॥ त्रैगुन इस तरवर के डाल ॥ इंद्री विखे बहुते परवाल ॥ सपरस सबद रूप रस गंध ॥ इंद्री यिओ बिखिओ मै बंध ॥९॥ बाधे जेवड़ी ब्रिछ के लोक ॥ झखड़ ते तरवर गिड़न न होग ॥ इस ब्रिछ का पउन इहु जानो ॥ मुझ महिमा सतसंग पहिचानो ॥१०॥ जब सतसंग मै महिमा करे ॥ इसी पउन सो ब्रिछ गिड़ पड़े ॥ कुटंब लोक जो आन सनबंधी ॥ यहि जेवड़ी तरवर कौ बंधी ॥११॥ ऐसा रूप जो तरवर कहा ॥ किनहूं इस का भेद न लहा ॥ जानें नही ब्रिछ को रूप ॥ कहे मै देह मानुख सरूप ॥१२॥ कहे अमका है मेरो नाउ ॥ अमकी जात अपनी कहि गाउ ॥ समझै नाही को यहि बात ॥ संसार कहां तें आइओ तात ॥१३॥ अर फिर कहा जाइगा एह ॥ अब ठाढा किस पर जग सरबेह ॥ ऐसा असत नामां संसार ॥ तिस का मूल तूं मुझे बीचार ॥१४॥ तिस ऊपर जीउ पंखी बसै ॥ माइआ परपंच कपट मै रसै ॥ भ्रमत फिरै वहु माइआ माहि ॥ ऐसा जीउ ऊपर तिस आहि ॥१५॥ हउ जो ब्रिछ रूप हो आप ॥ अब कछु सुन मेरा प्रताप ॥ मेरो मूल आनंद सरूप ॥ दिब सुख अर परम अनूप ॥१६॥ नांनां प्रकार जो कीए अवतार । अधभुत करम तिह माहि बीचार ॥ सो इस ब्रिछ के पत्तर जानो ॥ महिमा मुझ साखा पहिचानो ॥१७॥ सास्त्र बेदांत जो भागवत गीता ॥ सो इस ब्रिछ के फल हैं मीता ॥ जो नर जग मै बप कौ धारे ॥ संसार ब्रिछ सो तिआग बीचारे

॥१८॥ मुझ आनंद ब्रिछ की सरनी आवै ॥ सो नर बहु आनंद सुख पावै ॥ जित प्रकार संसार ब्रिछ तिआगे ॥ भगवांन ब्रिछ की सरनी लागे ॥१९॥ सो प्रकार सुनो रे मीत । प्रिथमे करे तिआग सौ प्रीत ॥ ग्रिहसत तिआग भइओ कुठार ॥ तिस सौ काटे ब्रिछ संसार ॥२०॥ दिड़ निहचा होइ मेरे साथ ॥ वही निहचा तिस नर के हाथ ॥ तिआग कुठार हाथ सो पकड़ी ॥ ब्रिछ संसार की काटी लकड़ी ॥२१॥ कुटंब तिआग जो मुझ सरन आवै ॥ अतीत जगत सो वही कहावै ॥ जब अतीत जगत ते होइ ॥ ऐसे मारग जावै सोइ ॥२२॥ तिस ते बहुड़ जनम नही आवै ॥ ऐसे बचन कहि मुझ को गावै ॥ कहे आदि पुरख देवो के देव ॥ तुमरी सरन हौ तूं रख लेह ॥२३॥ आदि पुरख जो मै भगवांन ॥ सभ ब्रहमंड मुझ अंतर जान ॥ मुझ अंतर ते सभ कछु निकसै ॥ सदा पूरन हो नित ही बिगसै ॥२४॥ निहचल अबिनासी सभ ते परे ॥ ऐसा पुरखोतम मै प्रभ हरे ॥ मेरे परे अवर नां कोइ ॥ मुझ समान दूजा नही होइ ॥२५॥ आदि पुरख जो मै हों आप ॥ सरब मधि मैं रहिआ बिआप ॥ ऐसे पुरख की सरनी आवै ॥ सो तो बेग मुकत को पावै ॥ २६॥ ऐसी सरन गही तुम मीत ॥ रहत बात अब राखो चीत ॥ जो आदि पुरख की सरनी आवै ॥ ऐसी भांत वहु रहत बतावै ॥२७॥ दोहरा ॥ दूर करे सभ मान भाउ बीआ संग मोहु न लाइ ॥ आदि पुरख जो पारब्रहम तिस मे रहे समाइ ॥२८॥ दोहरा ॥ चेता मन का राखता निहचल गोबिंद साथ ॥ धिआन भजन मै नित जो बेग गहौ तिह हाथ ॥२९॥ दोहरा ॥ मन मो रखै न कामनां कछू बाछै नही मीत ॥ जो बरते इस रहत मे सो जन निरमल रीत ॥३०॥ दोहरा ॥ ऐसा गिआनी भगत जो मै तिस को यहि करौ ॥ सुख दुख मूल जो जगत है तिस ते तिस निसतरौ ॥३१॥ दोहरा ॥ उसन सीत संसार ते राखो तिस को मीत ॥

अपने अनंद सरूप मै ले जावौ सुभ रीत ॥३२॥ सोरठा ॥ मुझ आनंद सरूप सो अबिनासी जान ॥ आदि पुरख मुझ रूप सूरज की तहा नांहि गंम ॥३३॥ जहा है हरि को धाम रवि ससि तहा न पहुंचते ॥ जो पावै वहु धाम फिर संसार न आवता ॥३४॥ दोहरा ॥ परम धाम जो कहिओ मुझ ऐसा जानो सोइ ॥ सरन जो आवै पारब्रहम तिस को प्रापत होइ ॥३५॥ दोहरा ॥ हे अरजन अब अवर सुन जीउ जो देहो मांहि ॥ सो तो मेरी अंस है पुरातन ही ते आहि ॥३६॥ दोहरा ॥ जब का मै प्रभ आतमा तब का है यह जीउ ॥ इंद्री देह की प्रीत सौ जीउ पसारा कीउ ॥३७॥ दोहरा ॥ पांचो इंद्री अर एक मन इह छै मिल कर मीत ॥ सतवां जीउ के संग ते भोगै भोग वहु नीत ॥३८॥ सोरठा ॥ इंद्रीओ ही के भोग जीव को नित भ्रमावते ॥ भोग नही वहु रोग ठउर ठउर फेरे जीउ को ॥३९॥ दोहरा ॥ यहि बप जीउ तिआगता तिस का सुन दिसटांत ॥ जिउ उलांघ नरो की ऐसी ही तिस भांत ॥४०॥ दोहरा ॥ पहिला चरन आगे धरे फिर दूजा राखै सोइ ॥ तिउ जीउ देह तिआग करि अवर देह मो होइ ॥४१॥ दोहरा ॥ जिउ विलंभ उलांघ तें तिस ते भी अति लघ ॥ इह जीउ देह तिआग कै लगै अवर बप मग ॥४२॥ अड़िल ॥ जैसी बासनां जीउ आप मैं राखता ॥ तैसे ही वहु अवर देहि मै चाखता ॥ गंध दुरगंध सपरस मारत करत है ॥ अपने आप मै बास तैसे धरत है ॥४३ ॥ ऐसे ही यहि जीउ बासना गहे संग ॥ जीउ इंद्रीआ धार भोगे बास रंग ॥ स्रोत घ्रान अरु चछ तुचा रसना जो आही ॥ छठवें मन सौ मिल जीउ बिखिआ भोगाही ॥४४॥ भोजन खान ते आदि अवर कारज जीउ करता ॥ मन इंद्रीओ के साथ मिल आकार आप धरता ॥ मूरखो को यहि कउतक दिसट न आवता ॥ गिआंन नेत्र सो कउतक गिआनी पावता ॥४५॥ मंगल

छंद ॥ गिआनी भगत कैसा होइ ॥ निसदिन जुड़ै मुझ संग सोइ ॥ सो अपने आतमा के माहि ॥ देखै सगल कउतक ताहि ॥४६॥ सो निरमल मत देखै कोइ ॥ अगिआनी पेखै नाही सोइ ॥ गिआनी मेरी महिमा देख ॥ मुझ सलाहता सभ पेख ॥४७॥ कहता धंन करता पुरख ॥ जिस सो पावते सभ हरख ॥ रचना रची जिन प्रभ आप ॥ सभ के मध रहिआ बिआप ॥४८॥ ऐसी प्रीत सो वहु होइ ॥ सो महिमा अब कहौ मै तोहि ॥ जिउ अंबकर लगावै कोइ ॥ वहु हसतामल कहीऐ सोइ ॥४९॥ तैसे हसतामल तुझ कौ कहौ ॥ अपनां कउतक सभ जग लहौ ॥ अरजन सुनो मेरे मीत ॥ जो मै कहौ राखो चीत ॥५०॥ रवि मै तेज जेता आहि ॥ ब्रहमंड माहि प्रकास कराहि ॥ रवि मैं जोत मेरी जांन ॥ कउतक सगल मेरा मांन ॥५१॥ जो ससि अगन मै प्रकास ॥ सो प्रकास मेरा बास ॥ जोजन पचास कोटि जो भूम ॥ जिस मो नगर सागर धूम ॥५२॥ परबत नदी बहु जिस माहि ॥ जंगल गनत मै नही आहि ॥ सो मेरे बल उठाए ओहु ॥ अरजन देख कउतक सो ॥५३॥ दोहरा ॥ मनुखो के जो अंन है अर तरवर है जो ॥ सभू माहि जो मधुरता सो सभ ससि ते हो ॥५४॥ दोहरा ॥ सो ससि मेरा रूप है सभ कौ देवौ स्वादि ॥ मेरी लीला देख तूं मै प्रभ परम अनादि ॥५५॥ दोहरा ॥ सभ प्रानीओ के उदर मो मै हो बिआपिआ यार ॥ प्रान अपान जो बाइ है सो सभ मुझै बीचार ॥५६॥ दोहरा ॥ अगन बाइ सनबंध तें प्रानी जो अंन खाहि ॥ भोजन है वहु चार भांत भिंन भिंन भाखौ ताहि ॥५७॥ दोहरा ॥ अगन संग जो होत है सो अंन पक है नीत ॥ चना चावल ते आदि ले भोजन नाम धर चीत ॥५८॥ दोहरा ॥ अंब हिंदवाणा अवर फल सभ लेहज तूं जांन ॥ सरबत दूध अप आदि ले सो चोहज पहिचान ॥५९॥ हे अरजन अब अवर सुन अधभुत अचरज बात

॥ रिदे सभू के बैठ करि ऐसे करहौ तात ॥६०॥ दोहरा ॥ देवो गिआन तिस रिदे मो करम करावौ सुध ॥ करमो के प्रसादि ते सुख पावै ओहु बुध ॥६१॥ दोहरा ॥ मै ही रिदे मो बैठ करि करम करावौ मंद ॥ अगिआंन मांहि वहु दुख लहै दुख सौ मूरख अंध ॥६२॥ दोहरा ॥ जांनन जोग जो बेद मै सो सभ मुझ कौ जांन ॥ बेद हारे कहि नेत नेत मुझ महिमा पहिचान ॥६३॥ दोहरा ॥ करनहार हौ बेद का जाननहार हौ आप ॥ अंत करौ जब बेद का नेत नेत जप जाप ॥६४॥ चउपई ॥ हे अरजन अब अवर सुनावौ ॥ संसार बिखे दो पुरख दिखावौ ॥ एक अबिनासी दुती बिनास ॥ देहि जीउ नाम है तास ॥६५॥ जीउ अबिनासी नाम कहावै ॥ देहि बिनासी सभ को गावै ॥ इन तें अवर उतम प्रधांन ॥ तीसरा तूं प्रमातम जांन ॥६६॥ तिस प्रमातम को यहि प्रताप ॥ त्रिलोकी माहि एक वहि आप ॥ त्रिलोकी होइ जब नैन उघाड़ै ॥ सभी थापे सभ को पोखारै ॥६७॥ ऐसा ईस प्रमातम जो ॥ पुरखोतम पुरख एक है सो ॥ बिनास पुरख जो दीसै देह ॥ प्रमातम को तिस सो नही नेह ॥६८॥ देह संग तिस कारज नाही ॥ अतीत देह तें आतम आही ॥ अबिनासी जीउ दूसरा जो ॥ उतम तिहं ते आतम हो ॥६९॥ लोको मध अर बेदो माही ॥ पुरखोतम नांम तिस ऐसे आही ॥ सो मुझ सिमरन ऐसा करो ॥ मेरा भजन निसदिन मन धरो ॥७०॥ जो गिआनी भगत ऐसा को होइ ॥ पुरखोतम मुझ कौ जानै सोइ ॥ हे अरजन तूं ऐसे जान ॥ पुरखोतम पुरख मुझी पहिचान ॥७१॥ हे पारथ निहपाप सुजान ॥ गुहज सास्त्र मुझ कीआ बखान ॥ ऐसा गिआंन राखो तुम चीत ॥ इसनान करो इस मै तुम नीत ।७२॥ इसनांन अरथ अब सुन तूं यार ॥ सुनन पड़न धारन बीचार ॥ ऐसा इसनान करै जे कोइ ॥ अरजन वही क्रितारथ होइ ॥७३॥

टीकाकारवाच ॥

पूरन भइआ पंच–दसवां धिआइ ॥ पुरखोतम जोग नाम चित लाइ ॥ जो उतम इस मांही गिआंन ॥ पड़े सुने बीचारे मान ॥७४॥ सो नर आप बिसन ही होइ ॥ बिसन बिना दूजा नही कोइ ॥ हे खालसा हम तुम सभ बिसन ॥ जो देखो सो एको किसन ॥ सभी एक अकाल तुम जानौ ॥ हरि रूप संसार सभ मानौ ॥७५॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते पुरषोत्तम योगो नाम पंद्रवां अध्याय ॥१५॥१५१३॥

आगे अध्याय सोलवां चलिआ ॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ केसव मुख सो यिउ कहे सुन अरजन यहि बात ॥ मानस देह के मध मै दोइ सुभाइ वरतात ॥१॥ सोरठा ॥ देवता दैत सुभाउ जो मानस मै वरतदा ॥ सो भिंन भिंन कहो प्रगटाइ प्रिथमे देव सुभाउ सुन ॥२॥ सुर सुभाउ ॥ चउपई ॥ भउ नही राखै अंतर कोई ॥ अंतहकरन सुध जिहं होई ॥ गिआन जोग मै निसदिन रहै ॥ दान करन सुभाउ जिह अहै ॥३॥ इंद्री जीतन मै प्रधान ॥ जग करन मै परम सुजान ॥ बेद पाठ तपसिआ करे ॥ कोमल सुभाउ सदा मन धरे ॥४॥ कोई जीव दुखावै नाही ॥ सदा रहै सत बोलन माही ॥ क्रोध निंदा वहु मूल न करे ॥ तिआग इंद्री भोग मन धरे ॥५॥ सांत रूप सभहूं पर दइआल ॥ सभ का सुखदाइक क्रिपाल ॥ पाप न करे लोभ ते रहत ॥ पवित्र खिमा अर धीरज सहत ॥ ६॥ पूजा मानता नाहि करावै ॥ सुभ सुभाव यहि देव कहावै ॥ जिस मै यहि सुभाव सुभ होइ ॥ वहु मानस देव है सोइ ॥७॥ असुर सुभाउ ॥ चौपई ॥ अब यहि दैत सुभाउ सुनावौ ॥ प्रिथम पाखंड तन भीतर पावौ ॥ अरथ

पाखंड को ऐसे जोइ ॥ अंतर कपट बाहर सुध होइ ॥८॥ सभ ते बडा आप कौ जानै ॥ ऐसा गरब आप मै मानै ॥ मुझ समान दूसर नही कोइ ॥ ऐसे कहे अभिमानी होइ ॥९॥ सदा दुरबचन कठोर जो कहै ॥ सो सभ सुभाउ असुर को अहै ॥ तिन सभ को है मूल अगिआन ॥ सुभाउ सभी अगिआंन तें जांन ॥१०॥ जिस मै वरतै देव सुभाउ ॥ मुकत संसार मै वहु नर पाइ ॥ दुसट सुभाउ जिस नर मै आही ॥ सदा रहै वहु निंदिआ माही ॥११॥ एते बचन जब गोबिंद कहै ॥ अरजन सुन बीचारत भए ॥ दैत सुभाउ मत मुझ मै होइ ॥ ऐसे बीचार मो सुकचिओ सोइ ॥१२॥ अरजन कउ जब सुकचिआ लहिओ ॥ तब केसव अरजन को कहिओ ॥ हे पांडव तुम सोच मत करो ॥ देव सुभाउ आप मैं धरो ॥१३॥ देव सुभाउ सभी है जोइ ॥ साथ लै जनमिआ है तूं सोइ॥ सुरि असुरि सुभाउ जो आहि ॥ मानुखो मांहि सभी वरताहि ॥१४॥ सो सभ तुझ को कहे सुनाइ ॥ असुर सुभाउ कहौ प्रगटाइ ॥ अब फिर असुर सुभाउ तुम सुनौ ॥ जैसे अरजन तुम पै भनौ ॥१५॥ जो वहु बसे ग्रिह सभ के मांहि ॥ ग्रिसत जुगत वहु जानत नाहि ॥ तिआग ग्रिहसत अतीत जो होइ ॥ अतीत रहत न जानै सोइ ॥१६॥ पवित्रता को मूल न जानै ॥ मुझ सरब बिआपी को नही मानै ॥ आपस मैं मिल ऐसे भाखै ॥ असत हरि कहां जो हम लाखैं ॥१७॥ तिस को किसी न देखिआ भाई ॥ यहि संसार आपे उपजाई ॥ इस्त्री पुरख संजोग ते होइ ॥ उतपत सगल जगत की सोइ ॥१८॥ कीआ नही किसे संसार ॥ आपे भइआ संसार अपार ॥ ता ते डर राखो नही कोइ ॥ पहिरन खावन मै सुख होइ ॥१९॥ खाइ भला इंद्री सुख पावहि ॥ बडा लाभ इंद्री सुख गावहि ॥ ऐसी दुसट बुध तिन माहि ॥ मलीन नीच बुध है तांहि ॥२०॥ ऐसे करम करे वहु मूड़ ॥ पावै डर जो वरते कूड़ ॥ कसट नमित दूजे के करे ॥ उपासना प्रेतो की मन धरे ॥२१॥ ऐसे कहे आपने मन माहि ॥ जो इस्त्री होइ नित भोगो ताहि ॥ बडा लाभ संसार के माहि ॥ कांम

बिना दूजा को नाहि ॥२२॥ सो काम ऐसे है मीत ॥ पूरन ताहि कहौ मम रीत ॥ धंन अभिमांन ते उनमत रहै ॥ झूठी माइआ को मन गहै ॥२३॥ अत अपवित्र व्रित वहु राखै ॥ चिंता माहि चित नित लाखैं ॥ मगन सदा चिंता मै रहै ॥ आपस मै मिल करि यहि कहै ॥२४॥ कांम लाभ सम अवर न कोइ ॥ आसा फास मै निसदिन सोइ ॥ मगन काम क्रोध मै रहै ॥ इंद्री भोग सदा वहु चहै ॥२५॥ ऐसे कहहि मिल करि वहु नीत ॥ आज यहि लाभ मै पाइओ मीत ॥ प्रात काल पावौगा एह ॥ अगले दिन अवर कछ लेह ॥२६॥ अमके को मै सस्त्र लगाइआ ॥ अमके को कर जुध भगाइआ ॥ हउ ईसर अर सिध बलवांन ॥ सात पीड़ी मेरी प्रधान ॥२७॥ जात मैं आप समान ना लहौ ॥ सभहूं ते मै स्रेसट अहौ ॥ अवर सभी है मेरे दास ॥ मन मै अनिक चितवन को बास ॥२८॥ मोहे अति अगिआन ते ओह ॥ मोह जाल मै बाधे सो ॥ कांम भोग के मांहि प्रबीन ॥ अपवित्र रहै नरक मै लीन ॥२९॥ अब भी नरक मांहि वहु रहै ॥ आगे भी नरक कौ लहै ॥ अब सुन जग वहु कैसे करे ॥ भला खांवन नमित मन धरे ॥३०॥ सास्त्र विधि को जानत नाही ॥ हंकार गरब ते विआकुल आही ॥ ऐसे जो पाखंडी लोक ॥ बूडै रहे समंद्र सोक ॥३१॥ बहुत कांम क्रोध तिन माहि ॥ आतम राम को जानत नाहि ॥ जो प्रभ सरब बिआपी अहै ॥ तिस की निंदा वहु नित कहै ॥३२॥ सभ देहो को वहु दुख देवै ॥ मेरा नाम न कबहूं लेवै ॥ मानुख बीज असुर जो आहि ॥ आवागवन मै तिन को पाहि ॥३३॥ चउरासी लख जोन मै पड़े ॥ जनम जनम दुखी वहु फिरै ॥ ऐसे सुभाव होइ जिस माही ॥ सो मानुख है दैत कहाही ॥३४॥ मुझ आतम को वहु ना पावहि ॥ बारंबार जनम मै आवहि ॥ तीन द्वार देह के मांही ॥ कांम क्रोध लोभ जो आहि ॥३५॥ सो तीनो द्वार नरक है मीत ॥ तिन का तिआग

पारथ धरि चीत ॥ मुकता जो तीनो ते होइ ॥ परम गत को पावै सोइ ॥३६॥ तूं भी तिन को बेग तिआग ॥ आतम तत मै निसदिन लाग ॥ मै यहि बुध सास्त्र जो कहा ॥ जिस इह बीचार मन मौ गहा ॥३७॥ अपनी बुध मै वरतै जोइ ॥ तपसिआ दांन करे नित सोइ ॥ तिन का फलु वहु दुख बहु पावै ॥ आवागवन माहि नित आवै ॥३८॥ दोहरा ॥ यहि सास्त्र जो मै कहिआ समझे गिआनी मीत ॥ देव सुभाउ के करम सभ करते है वहु नीत ॥३९॥ दोहरा ॥ अति सुख पावहि नित वहु जिन के देव सुभाव ॥ देव सुभाउ मैं बहुत सुख हे अरजन चित लाव ॥४०॥

टीकाकारवाच ॥

चउपई ॥ बिभाग जोग खट दसमा धिआइ ॥ तिस की भाखा कही सुनाइ ॥ दोऊ सुभाइ प्रतख इस मांही ॥ देउ सुभाउ खालसे मै आही ॥४१॥ रहत खालसे की देव सुभाइ ॥ खालसा वही जो मन मै लाइ ॥ एक अकाल जानै वहु नीत ॥ बैर भाउ नही राखै चीत ॥४२॥ देव सुभाउ मै वहु नित रहै ॥ एक अद्वैत ब्रहम सभ लहै ॥ जगत लोक को मूल न देखै ॥ खालासा एको गोबिंद पेखै ॥४३॥ जेते नाम जगत के माहीं ॥ सो सभ वासदेव को आही ॥ दिसट अदिसट बारता जानै ॥ सो सभ एक गोबिंद पहिचानै ॥४४॥ सत असत जहा लउ दीसै ॥ सभ ही एक गोबिंद को भेसै ॥ संसार माहि जो बोले वरते ॥ सभ मै एक गोबिंद जी करते ॥४५॥ धरन अकास दिसा जो भाइ ॥ सो सभ ही इक गोबिंद राइ ॥ पस पंखी अर वण त्रिण लोक ॥ एक गोबिंद सभी कछु होग ॥ देखन सुनन अर जो कछु अहै ॥ सो सभ एक गोबिंद ही लहै ॥४६॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते देव असुर संपद विभाग योगो नाम सोलवां अध्याय ॥१६॥१५५९॥

आगे अध्याय सतारवां चलिआ ॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा ॥ अरजन श्री भगवांन पै प्रसन करत है एह ॥ हे माधव हे रिखीकेस हे बासदेव सरबेह ॥१॥ दोहरा ॥ सास्त्र बिध जो तुम कही सो बिध कैसे होइ ॥ मै समझी है एक बिध अब भाखो वहि सोइ ॥२॥ दोहरा ॥ तुम जो ईसर जगत के प्रभ अकाल सरूप ॥ सुख दाता हो सभन के तू है रंक अरु भूप ॥३॥ दोहरा ॥ ऐसे जो तुम जानके सरनी आवै लोक ॥ सिमरन तुमरा नित करे यहि बिध सास्त्र जोग ॥४॥ दोहरा ॥ पहिचाने जो नाहि तुम सो बिध सास्त्र तिआग ॥ वहु मूरख हरि छाड के बिखिओ के संग लाग ॥५॥ दोहरा ॥ सास्त्र बिध जिन तिआग के अर पूजा सो प्रीत ॥ वहु नर वरते कवन गुन तिन की भाखो रीत ॥६॥ दोहरा ॥ सांतक राजस मांहि वहु या तांमस मै भाव ॥ हे मधसूदन पारब्रहम सो सभ मुझे सुनाव ॥७॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ अरजन को केसव कहे हे पारथ चित लाउ ॥ सरधा पूजा जो करे तिस ही तीन सुभाउ ॥८॥ दोहरा ॥ देहधारी मानुख जो वरते तीनो माहि ॥ सांतक राजस तामसी यहि तीनो गुन आहि ॥९॥ दोहरा ॥ जिस गुन मै मानुख हो सो सरधा तिहं मांहि ॥ यहि सभ नर तूं देखता भिंन भिंन दिसट यहि आहि ॥१०॥ दोहरा ॥ इसट पूजा जिन नाहि को सो

मानस पसु जांन ॥ सुभाउ जो तीनो गुनौ के भिंन भिंन करौ बखान ॥११॥ दोहरा ॥ सांतक गुन जिह नरो मै देव पूज है सोइ ॥ राखस जख जो पूजते सो राजस गुन होइ ॥१२॥ दोहरा ॥ पूजन भूत प्रेत का सो है तामस मांहि ॥ तीन प्रकार जो तप करे अब फुन भाखौ ताहि ॥१३॥ दोहरा ॥ जो सास्त्र मै कहे नाहि जिह देखे डर आहि ॥ इस तप को जो नर करे सो तामस चित लाइ ॥१४॥ दोहरा ॥ करे तपसिआ देह सौ लोक दिखावै ओहु ॥ अहंकार मै लीन है फल बाछा मन होहु ॥१५॥ दोहरा ॥ दुख देवे वहि देह कौ ऐसे मूरख अगि ॥ बिआपिआ मै जो रोम रोम ना देखे करितगि ॥१६॥ दोहरा ॥ दुख देवे वहु नर मुझे असुर सुभाउ जिह होइ ॥ तामस तप जो नर करे हैन दैत वहि सोइ ॥१७॥ दोहरा ॥ सभ को पिआरा अहार जो सो है तीन प्रकार ॥ जग तपसिआ दान फुन त्रैबिध मन महि धार ॥१८॥ चौपई ॥ सांतक अहार ॥ तीन प्रकार अहार जो आहि ॥ जीउ वरते है तीनौ मांहि ॥ तपसिआ जग जो तीन प्रकार ॥ भिंन भिंन तिन का करौ बीचार ॥१९॥ सांतकी अहार प्रिथम यिउ कहौ ॥ जिन अहार ते अति सुख लहौ ॥ सांतकी अहार जो को नर खाइ ॥ आरबला नर सो पुरख वधाइ ॥२०॥ तिस खाए ते प्रसंन नर होइ ॥ देहि मांहि दुख रहै न कोइ ॥ यहि भोजन जो खावै भाई ॥ प्रीत वधै अर बहु सुख पाई ॥२१॥ सांतकी भोजन ऐसा होइ ॥ रस भरिआ अर चिकना सोइ ॥ जिस खाइ ते मन ठहराइ ॥ सांतकी अहार वही चित लाइ ॥२२॥ राजसी अहार ॥ राजसी अहार सुनो अब मीत ॥ कउड़ा खाटा राखो चीत ॥ तिरखा बहुर सलोना होइ ॥ खाए ते दुख पावै सोइ ॥ २३॥ चिंतातर तिस ते नर रहे ॥ देहि बिखे रोगु नित लहे ॥ ऐसा अहार राजसी कहीऐ ॥ जिस खाए ते दुख सुख लहीऐ ॥२४॥ तामसी अहार ॥ चौ ॥ तामसी अहार को ऐसे

जानो ॥ बासी जूठा फीका मानौ ॥ तामसी नर यहि भोजन भावै ॥ अगिआन दुख देह माहि वधावै ॥ जग प्रकार अब ऐसे कहौ ॥ तीन भांत का जग मैं लहौ ॥२५॥ दोहरा ॥ फल बाछा रिद कछू नाहि सास्त्र विध जो होइ ॥ मन मो कहै यहि जग मुझे करनां जोग है सोइ ॥२६॥ दोहरा ॥ सावधांन मन होइ करि करमो प्रीत लगाइ ॥ सांतक जग इस भांत है करै जो को मन लाइ ॥२७॥ दोहरा ॥ दिखावन लोक नमित को फल जग मन मो धरे ॥ राजस जग वहि आखीऐ जो नर ऐसा करे ॥२८॥ दोहरा ॥ आतमवेता वहु नही अर बिध सास्त्र नही होइ ॥ ऐसा जग जो नर करे तामसी जानो सोइ ॥२९॥ मंगल छंद ॥ तपसिआ सुनौ अब त्रै भांत ॥ जो करै आवै सांत ॥ मन बचन देह ते होइ ॥ यहि तीन भांत है सोइ ॥३०॥ प्रिथमे देह तप तूं जान ॥ सोच इसनांन दातन जान ॥ जो हरि सरब बिआपी अहै ॥ तिस की पूज को वहु चहै ॥३१॥ ब्रहमन गऊ जो है मीत ॥ तिन की पूज मै तिह प्रीत ॥ जग सभ ब्रहम जानै सोइ ॥ ब्रहम नाम तिस का होइ ॥३२॥ दिखावहि ब्रहम जो घट माहि ॥ तिस का नाम गुर प्रभ आहि ॥ जिस की बुध स्रेसट होइ ॥ तिस कौ पूजता है सोइ ॥३३॥ जो ग्रिसत हो तिस प्रीत ॥ प्राई तीआ न राखे चीत ॥ पर इस्त्री संगि सपरस न करे ॥ अपने ग्रहि बिखे मन धरे ॥३४॥ अर जो तिआग जग ते लेइ ॥ देहि ते सुक्र गिरन न देइ ॥ इसथावर जंगम दीसै जोइ ॥ तिन ते ना दुखावै कोइ ॥३५॥ ब्रहमचरज की यहि बात ॥ पीछे कही जो मै तात ॥ तपसिआ देहि की यहि होइ ॥ अब तप बचन का सुन सोइ ॥३६॥ सुननेहार दुख न लहै ॥ ऐसा बचन मुख सो कहे ॥ अर सति तिस महि होइ ॥ अरु प्रीत सो है जोइ ॥३७॥ सुखदाइक सील बोलै मीत ॥ मेरी महिमा गावहि नीत ॥ गावै पड़ै मेरी बात ॥ तप यहि बचन का है तात

॥३८॥ मन का तप अब सुन यार ॥ प्रिथमे करे ब्रहम बीचार ॥ प्रसंन करे मुझ को मीत ॥ मुझ सो राखता नित प्रीत ॥३९॥ मन को मोन राखे नित ॥ चाहे नांहि कछु तिस चित ॥ मन रखे मेरे मांहि ॥ जाने एक हरि सभ आहि ॥४०॥ निकले स्वास तिस का जो ॥ अजपा जाप जापै सो ॥ अहं को स्वास वड़ते गहै ॥ हंसा जाप निकसत कहै ॥४१॥ तप मन बचन की यहि रीत ॥ सो सुन सभी राखो चीत ॥ तपसिआ है जो त्रै प्रकार ॥ तिस कहौ अब बीचार ॥४२॥ दोहरा ॥ तप करै फल ना चहै सो सांतक तप जान ॥ सदा तिआगी जगत सो मन मैं राम पछांन ॥४३॥ दोहरा ॥ अपनी पूजा के नमित करता तप पाखंड ॥ भला कहावै जगत मो सो राजस प्रचंड ॥४४॥ दोहरा ॥ सो तप राजस थिर नही दुख है तिस कौ मूल ॥ ऐसा तप जो देह का मत को करहो भूल ॥४५॥ दोहरा ॥ मूरखमत जो तप करै सो तप बहु दुख देहि ॥ करते ही जिस दुख लहे फल तिस का दुख लेहि ॥४६॥ दोहरा ॥ बुराई किसे नमित कौ ऐसा जो तप होइ ॥ जिस ते बप कौ होइ दुख तामस जानौ सोइ ॥४७॥ दोहरा ॥ तीन प्रकार के दान सुन जैसे आखौ तोहि ॥ कहे मुझ करना जोग है जो सास्त्र बिध होइ ॥४८॥ दोहरा ॥ तिस ब्रहमन को दान करि मिलै नही जिस फेर ॥ उपकार जग तन होइ तिस सभ साधो का मेर ॥४९॥ दोहरा ॥ पहिले ठउर पवित्र मै कीजै ऐसा दांन ॥ पवित्र अर निराहार सो दीजै साध पछांन ॥५०॥ दोहरा ॥ कुसली करम बुधवान ऐसा ब्रहमन होइ ॥ ब्रहम जाने जो रिदे मो तिस दीजै यहि सोइ ॥५१॥ दोहरा ॥ ऐसी भांत जो दीजीऐ सो सातक है दांन ॥ तिस ते नर अति सुख लहे आतम होइ पहिचान ॥५२॥ संसार माइआ उपकार कछु जिस ब्रहमन मै होइ ॥ तिस को देवै दान वहु फल तिस चाहै जोइ ॥५३॥ दोहरा ॥ सो फल पावै राम

ते अर पीछे हो कलिआंन ॥ ऐसी बिध का दान जो सो तूं राजस जान ॥५४॥ दोहरा ॥ ठउर समान अपवित्र होइ अपात्र दीजै दान ॥ ऐसा दान अगिआन ते सो तूं तामस जान ॥५५॥ दोहरा ॥ दान करत नर यिउ कहे मुझ ते कछू न होइ ॥ देवै लेवै एक हरि तिस बिन अवर न कोइ ॥५६॥ दोहरा ॥ अहंभाउ को दूर कर ऐसा करता दान ॥ सो दान अति स्रेसट है तिस ते उपजै गिआंन ॥५७॥ दोहरा ॥ सभ मैं रविआ एक हरि तिस बिन अवर न कोइ ॥ता ते सभी पवित्र है दूसर होआ न होइ ॥५८॥ दोहरा ॥ समान वरते तिस इछ मैं सभ को पावै सुख ॥ तिस की इछ जो वरतदा तिस मै नाही दुख ॥५९॥ दोहरा ॥ जानै सगला ब्रहम है खान पीन कछु नांहि ॥ जो को ऐसा जानता सो निराहार कहाहि ॥६०॥ दोहरा ॥ हरि संसार एक रूप है तिस मे देन न लेइ ॥ गोबिंद एको पसरिआ आप आप को देइ ॥६१॥

श्री भगवानोवाच ॥

चउपई ॥ ईसर अबिनासी की बात ॥ अब तुझ कहिता हौ सुन तात ॥ परम ब्रहम ओअं जब कहिआ ॥ तिस इछिआ तें सभु कछु भइआ ॥६२॥ उपजावन जग कारन भाई ॥ ब्रहमा भइओ जिन जग उपजाई ॥ संखार नमित संसार को जानो ॥ महां रुद्र प्रगट पहिचानो ॥६३॥ तिन ही ब्रहम इह सभ उपजाए ॥ ब्रहमन बेद अरु करम बनाए ॥ जग जुगत सभ बिध तिन करी ॥ उपजाइओ दान तपसिआ हरी ॥६४॥ ब्रहमबेता जो पंडित आही ॥ ऐसा जान वरते मन माही ॥ बेद पाठी ऐसे पहिचाने ॥ जो होइ सो हरि ते माने ॥६५॥ जिन को मुकत चाह है मीत ॥ अज तन मुकत न राखै चीत ॥ कहे बंध है हम जग माही ॥ मुकत आस वहि नित कराही ॥६६॥ करन तपसिआ अर जग दान ॥ ऐसा करन तिन को परवान ॥ वहु

बिबेकी पुरख कहाही ॥ किरिआ करि तिसु फल नही चाही ॥६७॥ सत करम नित वहि करें ॥ फल तिआग मुकत मन धरें ॥ करमो ते जब मन सुध होइ ॥ उपजै निहचै गिआंन गति जोइ ॥६८॥ इस प्रकार करम सत करे ॥ प्रिथमैं बांछा ना मन धरे ॥ दुतीऐ मुझ को सत सत जांनै ॥ सत जान यहि मुखौ बखानै ॥६९॥ जो मै करौ राम सभ जानै ॥ भगत अपने को नित पहिचानै ॥ भगत अपनें का दीआ ले ॥ ऐसे जान मन मुझ मै दे ॥७०॥ सरधा संजुगत मुझ सिमरन करे ॥ अस्तोत्र पाठ नित मेरे पड़े ॥ सो करम पूरन तुम जानौ ॥ इह करमो ते मुकता मानौ ॥७१॥ दान तपसिआ अर जग जोइ ॥ तिस करते की यहि बिध होइ ॥ ऐसे तिआग अवर बिध करे ॥ और फल तिस का मन मो धरे ॥७२॥ जो होमै बैसंतर माहि ॥ अर ब्रहमन माहि जो दांन करांहि ॥ तपसिआ अरु किरिआ जो धारे ॥ सो सभ मिथिआ अरजन पिआरे ॥७३॥ तिस का फल वहु ऐसे पावै ॥ देह छाड प्रेत हो जावै ॥ प्रेत जोन मै सभ फल भोगे ॥ ऐसी किरिआ दुख अर रोगे ॥७४॥

टीकाकारवाच ॥

चउपई ॥ टीकाकार अब ऐसा कहे ॥ प्रेत अरथ यिउ मन मो लहे ॥ जिन जग देह मानस की पाई ॥ अपने सरूप सो प्रीत न लाई ॥७५॥ अपने आप कौ मूल न जानै ॥ आप बरन आस्रम वहु मानै ॥ ब्रहम अद्वैत को जानै नाहि ॥ सदा प्रीत देहि सो आहि ॥७६॥ सोई नर मानस प्रेत कहावै ॥ देह माहि प्रेत फल पावै ॥ जिन जानिआ है अपना आप ॥ तिस ते रहे दूख संताप ॥७७॥ जग मै सुफला तिन का आवन ॥ देह माहि जो हरि को पावन ॥ पहिचान आप भिंन देह ते रहै ॥ एक अद्वैत सदा वहु गहै ॥७८। तिन को ब्रहम रूप तुम मानो ॥ प्रभ अवतार तिन को पहिचानो ॥

खालसा तुम भी ऐसे करो ॥ आप पहिचान हरि मै चित धरो ॥७९॥ प्रेत न होवहु समझहु गाथ ॥ पवित्र प्रेत दोऊ तुम हाथ ॥ सोई होवहु जिस मो मन लावौ ॥ जैसी मत तैसी गत पावौ ॥८०॥ गुर उपकार यही तुम जानो ॥ गुर बचनन को किरपा मानो ॥ आगे धारन तुमरे हाथ ॥ कही अमर गुर तुम को गाथ ॥८१॥ अपने खाए सभ अघावै ॥ बिन खाए को ना तोखावै ॥ अवर सभि तुम आस तिआग ॥ अपने आप मै निसदिन लाग ॥८२॥ तरन तारन सभ तुम ही हो ॥ अवर न तारे तुमको को ॥ तुम सभ बासदेव हो भाई ॥ जैसा धारो तिउ हो जाई ॥८३॥ सपत दसवां धिआइ पूरन भइआ ॥ सरधा बिभाग नाम तिस लहिआ ॥ अति उतम है इस मो बात ॥ जे को समझै मन मै सात ॥८४॥ समझ बात फिर धारे सोइ ॥ तिस को आवागवन न होइ ॥ आवागवन भरम है भाई ॥ एक ब्रहम मै अवर न काई ॥८५॥ इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते श्रद्धात्रय विभाग योगो नाम सतारवां अध्याय ॥१७॥१६४४॥

आगे अध्याय अठारवां चलिआ ॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा ॥ अरजन मुख ते यिउ कहे हे ठाकुर प्रधान ॥ हे प्रभ कंस–निसूदनो हे गोबिंद सुजान ॥१॥ दोहरा ॥ संसार बैराग तिआग जो सभी बतावहु मो ॥ तुमरी किरपा ते हे प्रभू सभ मै जानौ सो ॥२॥

श्री भगवानोवाच ॥

दोहरा ॥ मुख सौ कहे गोबिंद जी हे पारथ सुन लेह ॥ भिंन भिंन सभ तुझ को कहों समझो मन चित देह ॥३॥ दोहरा ॥ संसार करम तिआग

करि जो सरनी आवै मोहि ॥ मेरी सेवा नित करे बांछा धरे न कोइ ॥४॥ दोहरा ॥ सरब बिआपी जान कै मुझ मै रहै समाइ ॥ यिउ वरते जो जगत मै सोई तिआग कहाइ ॥५॥ दोहरा ॥ एक सुधीजन यिउ कहे सगले करम तिआग ॥ बुरे भले सभ तिआग करि आतम के संग लाग ॥६॥ दोहरा ॥ भले है बेड़ी स्वरन की बुरे लोह की जान ॥ दोनो बंधन रूप है तिआग दोऊ परवांन ॥७॥ दोहरा ॥ अवर बिबेकी यिउ कहे जग दान तपसिआ जो ॥ तिन का तिआग न कीजीऐ अवर तिआग जब होइ ॥८॥ दोहरा ॥ मै अब यहि बिध भाख हो हे अरजन प्रधान ॥ तिआग तीन प्रकार का अपने मन मै मान ॥९॥ दोहरा ॥ जग तपसिआ दान यहि नही तिआगे मूल ॥ बिबेकी इन को नित करे जो तिआगे सो भूल ॥१०॥ दोहरा ॥ ग्रिह ग्रिह भोजन जो पके इह जानो सभ कोइ ॥ दाता भुगता ब्रहम है आप करे जग सोइ ॥११॥ दोहरा ॥ संजम दुतीए भाउ ते निसदिन करता जोइ ॥ ब्रहम बिन अवर न पेखता यही तपसिआ होइ ॥१२॥ दोहरा ॥ देह भाउ तिआग करि धारै नित जो गिआंन ॥ सीस अरपै भगवान पै उतम है यहि दांन ॥१३॥

टीकाकार ॥

सोरठा ॥ तपसिआ जग अर दान ऐसे भाखिओ भगवान जी ॥ अरजन रिद नही मान तब माधव जी कहै अवर ॥१४॥

श्री भगवानोवाच ॥

चौपई ॥ अरजन सुन साधो का तिआग ॥ सत गुन माहि रहै वहु लाग ॥ ब्रहम गिआन बिन मन नही आवै ॥ अर मेरी महिमा नित वहु गावै ॥१५॥ सो सभ सत करमो को करै ॥ मुझ अरपै फल मन नही धरै ॥ उतम तिआग पारथ यहि होइ ॥ गिआन पावै इस तिआग ते सोइ ॥ सांतकी

तिआग ऐसी बिध अहै ॥ करम फल तिआग मुकत को लहै ॥१६॥ राजसी तिआग ॥ चौपई ॥ अब सुन राजसी तिआग बतावौ ॥ देह अभिमानी तिस कौ पावौ ॥ देहि के दुख ते वहु नित डरै ॥ इसनान आदि करम नां करै ॥१७॥ राजसी तिआगि ऐसा ही होइ ॥ बप के सुख मै प्रीतम सोइ ॥ अगिआन अहंकार सौ करम तिआगै ॥ तम तिआग मै वहु नर लागै ॥१८॥ इसनान आदि ले करम सभ करे ॥ फल तिन का मन मौ नही धरे ॥ ऐसा पुरख बिबेकी जोइ ॥ बाछे नित मुकत कौ सोइ ॥१९॥ भले करम की निंद ना करै ॥ सत करम नित मन मै धरै ॥ फल तिन का कछु बांछै नाहि ॥ करम करि अरपै ईसर माहि ॥२०॥ निहकांम करम ते गिआन को पावै ॥ गिआन पाइ सुख सहज समावै ॥ अर जो कहै मै करम तिआगे ॥ सो मूरख झूठ को लागे ॥२१॥ वरते नही देह बिन करम ॥ देही चलै करम के धरम ॥ इक पल देह बिन करम न रहै ॥ करम बिना देही जड़ अहै ॥२२॥ करम तिआगै कोई नांहि ॥ झूठ तिआग कहै मन मांहि ॥ ताते जब लग गिआंन न होइ ॥ निहकाम करम करे नित सोइ ॥२३॥ करमो के फल तीन प्रकार ॥ दुखदाइक सुखदाइक यार ॥ सुख दुख होइ दोनो जिह माही ॥ प्रकार तीसरे पर सो आही ॥२४॥ सास्त्र सांख ॥ अब सांख सास्त्र का बीचार ॥ सांख भगत यिउ कहे पुकार ॥ देहधारी मानुख जो आहि ॥ बुरा भला जो करम करांहि ॥२५॥ करता तिन मै इंद्री अहै ॥ ब्रहम अकरता निस दिन रहै ॥ परमातमा अलेप नित देखै ॥ सभी करम इंद्री के पेखै ॥२६॥ इंद्री देह अनित जो आही ॥ अनित के करम अनित कहाही ॥ अरु आतम नित पूरन अहै ॥ सो अक्रै अलेप नित रहै ॥२७॥ देहि झूठ सभ करम तिस कूड़ ॥ आतम सत देह पग धूड़ ॥ जिन की बुध ने यहि गत जानी ॥ सो है सांख सास्त्र के मानी ॥२८॥ ब्रहम अलेप अक्रै तिन जान॥ अद्वै सो तिन का मन मांन ॥ बुध अहंकार तिस नर का गइआ ॥ हे अरजन वहु ब्रह्म ही भइआ ॥२९॥ जे वहु पुरख त्रिलोकी मारे ॥ तिस को

बेद अलेप उचारे ॥ तिस ने मारिआ कोई नांहि ॥ अक्रै अलेप सोई नर आहि ॥३०॥ इह मत सांख सास्त्र का भाई ॥ जिन धारिआ तिन ही गत पाई ॥ चौपई ॥ अब तीन प्रकार गिआंन धर चीत ॥ तीन प्रकार तिस फल है मीत ॥३१॥ दोहरा ॥ प्रभ सरब बिआपी जान के लोको सभ सुख देह ॥ बुरा न बांछे किसी का गिआंन सांतक है एह ॥३२॥ सोरठा ॥ सभहूं प्रानीओ मांहि भेद बुध जो कीजीऐ ॥ राजस गिआंन यहि आहि साध चोर जो मन धरे ॥३३॥ दोहरा ॥ सभ प्रानीओ सौ वैर भाउ बचन कठोर जिह मांहि ॥ बचनो डंसै सभी कौ तम गिआन है ताहि ॥३४॥ दोहरा ॥ फल बांछै ना करम कर हरख सोग नही कोइ ॥ निहकांम करे निरमम सो सांतक कहीऐ सोइ ॥३५॥ दोहरा ॥ फल बाछा होइ रिदै मै पावै कसट जु देहि ॥ ऐसे करम जो नर करे राजस कहीऐ एहि ॥३६॥ दोहरा ॥ लोको को दुख देवता माइआ गरब मै सोइ ॥ प्रगट करै बल लोक मै तम गुन करम है सोइ ॥३७॥ दोहरा ॥ मुख ते कहै मुझ नाहि कछु सभी ईसर का होइ ॥ जग सिराध जो पुन करे फल बाछै नही कोइ ॥३८॥ दोहरा ॥ जो तिस जग के करन मै हरख सोग नही पाइ ॥ अधरम रहत जो नर करे सो सांतक मन लाइ ॥३९॥ दोहरा ॥ फल बांछै करतूत का हरख सोग मन धार ॥ दरब खरच तें दुख लहै फल तिह हरख बीचार ॥४०॥ दोहरा ॥ घात करे जीउ जग बिखै ऐसा करहै कोइ ॥ सोई जग है राजसी तिस फल दुख सुख होइ ॥४१॥ दोहरा ॥ सीस निवाए नांहि वहु अर बिध सास्त्र नही कोइ ॥ लोक डंड मै जग करे सो तामस जग होइ ॥४२॥ सोरठा ॥ बुध अब तीन प्रकार सुन अरजन तुझ को कहौ ॥ प्रिथम सातकी बीचार तैसे भाखौ भिंन भिंन ॥४३॥ चउपई ॥ जिस नर की ऐसी बुध होइ ॥ अथवा ग्रिहसत माहि है सोइ ॥ निरलेप रहे अरु सुखी सरूप ॥ सम कर जानै रंक अरु भूप ॥४४॥ अथवा बिरकत होइ वहु नीत ॥ बिरकत जुगत राखै वहु नीत ॥ भला बुरा कारज सभ जानै ॥ यहि बीचार

नित मन मै आनै ॥४५॥ ऐसे करे तिस मो भउ नाही ॥ मुकत बंध दोनो समझांई ॥ यहि बात जिस की बुध जांनै ॥ सो बुध सातक बेद बखानै ॥४६॥ राजसी बुध ॥ चौपई ॥ जिस ते धरम कौ मूल न जांनैं ॥ अधरम को धरम मन माहि पहिचानैं ॥ भले कारज को अत मंद देखै ॥ ऐसी बात उलटी जो पेखै ॥ सो बुध राजस की तुम जानौ ॥ दुख सुख ऐसी बुध कौ मानौ ॥४७॥ तामसी बुध ॥ चौपई ॥ पाप को निहचै धरम ही जानै ॥ अगिआंन अहंकार बिन अवर न मानै ॥ सोई बुध तामसी है मीत ॥ नरक जोन की सोई रीत ॥४८॥ द्रिड़ता ॥ चौपई ॥ तीन प्रकार द्रिड़ता तुम जानो ॥ प्रिथमै द्रिड़ता सातकी मानो ॥ मन बुध प्रान इंद्री सभ जोइ ॥ हरि सो जोड़े सभी वहु सोइ ॥४९॥ बिकार माहि मन मूल न जावै ॥ अननु भगत वहु नित कमावै ॥ देहि होमे जो आतम मांही ॥ ऐसी द्रिड़ता सांतकी आही ॥५०॥ राजसी द्रिड़ता ॥ जिस कर कुल के करम सत मानै ॥ उपजावन द्रब का उदम जानै ॥ खावन पहिरन इंद्री भोग ॥ दान पुंन मै निसदिन होग ॥५१॥ फल मागै पहिले पाछै करे ॥ दुख सुख मै निसदिन वहु पड़े ॥ सो द्रिड़ता है राजसी भाई ॥ तिस ते आवागवन भ्रमाई ॥५२॥ तामसी द्रिड़ता ॥ जो जागे ता चिंता लहे ॥ नही बेसुरत होइ सो रहे ॥ लोको साथ करे बकबाद ॥ दुरबुधी बोले नित वाद ॥५३॥ यहि जो आखे तीन प्रकार ॥ आपु न लखै इन ते गावार ॥ सो द्रिड़ता तुम तांमसी जानो ॥ नरक अधिकारी तिन को मानो ॥५४॥ दोहरा ॥ कीरतन पूजा अर कथा इन मै जिस अभिआस ॥ तिस के अघ सभ नास होहि परे न जम की फास ॥५५॥ दोहरा ॥ सकल दुख तिस के गए संसा रहिओ न कोइ ॥मुझि अबिनासी के बिखै वहि नर प्रापत होइ ॥५६॥ दोहरा ॥ तीनो गुन अतीत वहु जो सभ जानै एक ॥ एक ही रूप गोबिंद है दीसै जोऊ अनेक ॥५७॥ सांतकी सुख ॥ चउपई ॥ पहिले कसट जिस करते पाइ ॥ वहु दुख बिख समांन दिखराइ ॥ अंम्रित सम पीछे सुख पावै ॥ सदा प्रसंन

सुख माहि समावै ॥ ऐसा सुख सांतकी होइ ॥ जिस कौ अहै मुकत है सोइ ॥५८॥ राजसी सुख ॥ सोरठा ॥ प्रिथमे अंम्रित तुलि सुख काम सो ते को भोगना ॥ तिन फल संतत दुख दाते सोग समुंद्र के ॥५९॥ सोरठा ॥ संतत बंधन रूप मोह अगिआन उपाजावते ॥ सो सुख दुख सरूप अरजन यहि सुख राजसी ॥६०॥ सोरठा ॥ आतम मोहिआ जाइ प्रमाद आलस अर नीद ते ॥ महा मोह उपजाइ सो सुख तामस भाखीऐ ॥६१॥ दोहरा ॥ ब्रहमन खत्री सूद बैस यहि चारो जो वरन ॥ भिंन भिंन आपन सुभाउ तें करम सुभावक करन ॥६२॥ ब्रहमन सुभाउ ॥ स्वैया ॥ इंद्री जीतन रहत पवित्र द्रिड़ निहचा अरु खिमा गिआंन ॥ तपसिआ साधन कोमल बोलन सम दिसटी पेखन बिगिआंन ॥ ईसर बिखे सति बुधि जिन की सो नर बरन ब्रहमन जांन ॥ मांन अपमांन दोऊ एक जानै ब्रहमन रूप की होइ पहिचान ॥६३॥ खत्री सुभाउ ॥ स्वैया ॥ सूरमा जुध ते भागै नांही तेजवंत बहु चत्तुर सुजान ॥ धीरजवंत दान मै दाता ईसर बिखै नित अरपै प्रांन ॥ परउपकारी सभ सुख देवै खत्री ब्रहमन को ऐसा जांन ॥ आतम धरम मै नित द्रिड़ रहता ऐसा पुरख जानो प्रधांन ॥६४॥ सूद्र बैस सुभाउ ॥ स्वैया ॥ राखै गऊआ बीजै खेती बनज बैपार मै चंचल होइ ॥ इह सुभाउ जिस नर मै वरते बरन बैस तुम जानो सोइ ॥ तीन बरन की टहल जो करता तिन की आगिआ मै नित जो ॥ यहि सुभाउ होवै जिस माही सूद्र कहै तिस को सभ को ॥६५॥ दोहरा ॥ जो प्रानी अप बरन के धरमो मै द्रिड़ हो ॥ तिस द्रिड़ता के सुभाउ ते पावहि गिआन नर सो ॥६६॥ दोहरा ॥ अपने सुभाउ के करम ते सभ को फल को पाहि ॥ अपने अपने धरम मै सेवै हरिपुर जांहि ॥६७॥ सोरठा ॥ ऐसा परम जो ब्रहम नाना भांत जिन जग कीआ ॥ उपजावै सभ कोइ अरु प्रितपालै सरब को ॥६८॥ सोरठा ॥ फेर संखारे आहि तिस की आगिआ यिउ भई ॥ जो अपनां धरम कमाइ सो प्रापत मुझ को होइगा ॥६९॥

टीकाकारवाच ॥

सोरठा ॥ जब लग होइ न गिआंन तब लग वरन मै वरतीऐ ॥ उदै गिआंन को भांन धरम करम को तिआगीऐ ॥७०॥ दोहरा ॥ अपने बरन के धरम मै गिआंन प्रापत होइ ॥ जब गिआंन सूर प्रकासता ब्रहम को पावै सोइ ॥७१॥ दोहरा ॥ बिना गिआन के उदे ते सभ को भ्रम है मीत ॥ यिउ निहचा को ना करे भ्रमते फिरते नीत ॥७२॥ दोहरा ॥ यहि जो बरन है भिंन भिंन तिन के भिंन भिंन धरम ॥ अपने कलिआन नमित को करन बरन के करम ॥७३। दोहरा ॥ कलिआंन के दाते धरम है अपने बरन के मीत ॥ दूसरे बरन की बात जो स्रेसट न राखै चीत ॥ दोहरा ॥ पराइआ धरम जो स्रेसट है भै का दाता सोइ ॥ अपने अपने धरम मै सभहू की गति होइ ॥ ७५॥ सोरठा ॥ हेअरजन सुन मीत सभ जग वरतै गुनो मै ॥ बहु प्रकार तिह रीत लछन भिंन भिंन तुझ कहे ॥७६॥ दोहरा ॥ जिस को मेरे भजन ते तीनो गुन कटि जाइ ॥ हे अरजन वहु अटल नर सांत प्रापत पाइ ॥७७॥ दोहरा ॥ चउथा पद है सहज पद तुरीआ कहीऐ सोइ ॥ चारो वरन जो जगत मै तिसै प्रापत जो होइ ॥७८॥ दोहरा ॥ तिस को करम तिआग ते पाप न होवै कोइ ॥ कछू अरंभ जो वहि करे तिस ते दुख सभ होइ ॥७९॥ अरंभ का कवित ॥ जैसे धूए ते रहत अगन निरमल जलत होइ धूए की लकड़ी तिन मै लिआ मेलीऐ ॥ काली के संग ते विगड़े है अगन वहु जोत ते रहत होइ मंदी के केलीऐ ॥ तैसे जो तुरीआ मै प्रापत भइओ कोई नर सांत सुख तिआग अरंभ बिखे खेलीऐ ॥ चउथे पद वाले को सभ अरंभ दुख है तिन को बिन सांत पद कारज सभ छेलीऐ ॥८०॥ दोहरा ॥ तुरीआ पद जिस को भइओ तिस के लछन एह ॥ हे अरजन तुझ अब कहौ सो मन मौ द्रिड़ लेह ॥८१॥ कवित ॥ किसी साथ मोहु नाही उदास रहे देहि माही आसा को तिआग करि अपना मन जीत है ॥ करमो मो संनिआस रहै आतम मै बास लहै बाछा ना कोई करै

निसचल तिह चीत है ॥ निरमल चित भइओ सोइ धीरज अर गिआंन होइ सुनै नही कोई बात गिआन मन प्रीत है ॥ इंद्री तिह सोइ गई इकांत ठउर को गई आतम के मिले ते तूटी भ्रम भीत है ॥८२॥ चउपई ॥ पाछे जो लछन सभ कहे ॥ इह सभ लछन साधू अहे ॥ किसे साथ मोहु नही करे ॥ परम सुख मैं मन को धरे ॥८३॥ जग मै जीते तीनौ बात ॥ जो अब भाखौ तुझ को तात ॥ प्रिथमे ऐसी बात मन धरे ॥ संसारी नर का संग न करे ॥८४॥ तिन सौ मुख ते बात न करे ॥ चिंता संसा रिदै न धरे ॥ देहि बचन मन की यहि बात ॥ तीनो को जीते यहि भांत ॥८५॥ मुझि धिआन मो निसदिन रहै ॥ ममता रहत सांत को गहै ॥ बैराग रहै जगत के मांही ॥ बल अहंकारि गरबु तिसु नांही ॥८६॥ काम क्रोध अर लोभ तिआगे ॥ ब्रहम रूप मुकत मै पागे ॥ सो वहि मुकतभइआ है मीत ॥ ब्रहम रूप होइ तिस की रीत ॥८७॥ सदा प्रसंन आतमा माही ॥ किसी वसत की चितवन नाही ॥ अनहोती वसत की चाह न करे ॥ अंम्रित समता मन मै धरे ॥८८॥ जिस मो ऐसे लछन होइ ॥ ब्रहम रूप कहीऐ है सोइ ॥ चउथे पद मै प्रापत होइ ॥ ब्रहम रूप आप ही होइ ॥ ८९॥ अथ भगत बरननं ॥ मेरी भगत अब आगै जानो ॥ ब्रहमभूत सभ माहि पछानो ॥ जैसा मुझ प्रताप है मीत ॥ सोई भगत जानै सुभ रीत ॥९०॥ मेरे जानन के उपरांत ॥ प्रापति होवै तिस को सांत ॥ मेरे माहि वहु प्रापति भइआ ॥ जैसा जल सौ जल मिल गइआ ॥९१॥ दोहरा ॥ ऐसा मेरा द्रिड़ भगत रहे जगत के माहि ॥ मुझ कौ निसदिन सिमरता कारज किरत कराहि ॥९२॥ दोहरा ॥ मेरे भजन प्रसादि ते सो भी मुझ मै आइ ॥ मेरे उतम पद बिखे वहु भी प्रापत पाइ ॥९३॥ दोहरा ॥ हे अरजन मै तुझ कहौ अब तूं यिउ करि मीत ॥ संसार की चितवन तिआग करि निहचल राखो चीत ॥९४॥ दोहरा ॥ हरि बिन जो मन चितवता बुध सौ पकड़ो यार ॥ बुध सो मन पकड़ाइ करि नित अनित बीचार ॥९५॥ दोहरा ॥ मन का चेता मुझ बिखै निसदिन जो नर

लाइ ॥ दुख समुंद्र संसार जो तिस को वहु तर जाइ ॥९६॥ चउपई ॥ जो मुझ आगिआ तूं माने नाहि ॥ मम अहंकार को रिदे बढाइ ॥ अपना बिनास अहंकार मै जानो ॥ आपन दुखदाई आप को मानो ॥९७॥ जो तूं कहै मै जुध न करता ॥ यही बात झूठि मन धरता ॥ खत्री देह है तेरी भाई ॥ सो सुभाउ तुझ जुध कराही ॥९८॥ कराए वहु प्रकिरत तुझ जुध ॥ यही बात जानो तुम सुध ॥ जैसे सुभाउ होइ देह माही ॥ तिसी सुभाउ ते बप वरताही ॥९९॥ तिस कारन मै निसचै जानो ॥ जदप मोहिआ तुझै पहिचानो ॥ मोह सो कहौ जुध न करो ॥ कैरव घात न मन मो धरो ॥१००॥ सुभाउ खत्री का तुझ बप माही ॥ वही सुभाउ तुझ जुध कराही ॥ हे पारथ अब अवर सुन बात ॥ एक ईसर सभ घट मै तात ॥१०१॥ ईसर बसे रिदे के माहि ॥ माइआ जंत परदेहि फिराहि ॥ हे अरजन जो यहि बिध ईसर ॥ तिस कौ जाने सरब मुनीसर ॥१०२॥ तूं भी तिस की सरनी जाइ ॥ तिस किरपा ते परम पद पाइ ॥ मेरा सांत पद उतम आही ॥ मेरी सरन सदा सुख पाही ॥१०३॥ मुझ भाखिआ जो सारा गिआन ॥ सो गिआन बिगिआन पहिचांन ॥ गुहज ते गुहज गिआन यहि भाई ॥ सभ मारग की जुगत बताई ॥१०४॥ पट करि को मारग नही राखा ॥ सरब मारग मै तुझ को भाखा ॥ जिह मारग मै रुच तुझ होइ ॥ वहु मारग धारो तुम सोइ ॥१०५॥ इस ते गुहज अवर इक गिआंन ॥ सो अरजन अब करौ बखांन ॥ इस कारन मै तुझ को आखो ॥ अपनां मित्र भगत तुझ लाखौ ॥१०६॥ तेरी मत द्रिड़ है मुझ मांही ॥ इस कारन ते कहौ तुझ ताही ॥ तेरी कलिआन नमित अब कहौ ॥ तुझ को सखा अति प्रीतम लहौ ॥१०७॥ मन का चेता तूं मुझ मै राख ॥ मेरी भगत का अंम्रित चाख ॥ मेरी पूजा मन मै धरो ॥ कर सौ नमसकार मुझ करो ॥१०८॥ मेरा बचन भगतो पै कहै ॥ जो मानै मुझ पिआरा अहै ॥ अब इक अरथ कहो तूं मान ॥ मूल गिआंन वही पहिचान ॥१०९॥ सरब भरम को तिआगो मीत ॥ केवल एक मुझ राखो

चीत ॥ भरम तिआग मुझ सरनी जाइ ॥ मुझ किरपा ते मुकत फल पाइ ॥११०॥ सभहूं बात ते पावै मुकत ॥ जो मुझ मिलै तूं ऐसी जुगत ॥ महां अनंद सुख पावै मीता ॥ पूरन भइआ सुख सास्त्र गीता ॥१११॥ दोहरा ॥ रिखीकेस ऐसे कहे सुनहो अरजन मीत ॥ गीता अब पूरन भई अवर सुनौ दे चीत ॥११२॥ दोहरा ॥ इह जो गिआंन मै तुझ कहा सो अति उतम आहि ॥ बेमुख जो मुझ भगत ते कहो न तिन के माहि ॥११३॥ सोरठा ॥ अर जो तपसी होइ भगत नही मुझ रिदे तिस ॥ तिसै न कहीऐ सोइ ऐसा गिआंन जो गुहज है ॥११४॥ दोहरा ॥ सुननै की जिस प्रीत नाहि ताहि न आखो मीत ॥ इतनिओ को नही आखणा द्रिड़ करि राखो चीत ॥११५॥ चउपई ॥ भगतौ को जो गिआन सुनावै ॥ सो मानुख मुझ को अति भावै ॥ तिस समान मै अवर न कोई ॥ मुझ को भगत पिआरा सोई ॥११६॥ पीछे आगे अब जो मीत ॥ तिस समान राखौ ना चीत ॥ जो मेरे भगत माहि यहि भाखै ॥ सो अति पिआरा मुझ को लाखै ॥११७॥ अर जो इस का अरथ न जानै ॥ पाठ मात्र ही सदा बखानै ॥ गीता स्रेसट जुगत है जोइ ॥ तिस कर मुझ अति पूजै सोइ ॥११८॥ गीता पाठ वहु जब लग करता ॥ तिस के निकटि मै तब लग रहता ॥ इसी भांत निकट तिस फिरौ ॥ बोलाइआ तिस का मन मैं धरौ ॥११९॥ जैसे किसै बुलावै कोइ ॥ तिस के निकटि वहु प्रापति होइ ॥ तैसे पड़ि करि मुझे बुलावै ॥ अपने निकटि वहु मुझ को पावै ॥१२०॥ मेरी बात यहि निहचै जान ॥ जो सरधा ते सुन करि मान ॥ अर सति सति मन अपने धरे ॥ मेरे बचन की निंद न करे ॥१२१॥ जो को वरते इत प्रकार ॥ तिस नर कौ तूं मुकत बीचार ॥ संसार बंधन सभ काटै वहु जन ॥ पावै मेरी भगत का जो धन ॥ सो मेरे पद प्रापत होइ ॥ आवागवन न पावै सोइ ॥१२२॥ दोहरा ॥ गीता का उपदेस जो तुझ को भाखिओ मीत ॥ इकागर मन ते स्रवन करि राखिओ है तिह चीत ॥१२३॥ सोरठा ॥ हे अरजन यहि गिआंन जो तुझ

सुनिआ प्रीति कर ॥ भइओ नसट मोह अगिआंन निसचै करि के मुझ गहो ॥१२४॥

अरजनोवाच ॥

दोहरा ॥ अरजन कहे भगवान पै हे अचुत अबिनासि ॥ तुमरी किरपा ते प्रभू मोह भइओ मुझ नासि ॥१२५॥ दोहरा ॥ गिआन भी आइओ मन बिखै बुध प्रकासी मोहि ॥ हे प्रभ तुमरे बचन ते संसा रहिओ न कोइ ॥१२६॥ दोहरा ॥ लाभ अलाभ तिआग केजुध करहौ हे मीत ॥ परम हरख सौ बचन तुम जो राखिओ है मीत ॥१२७॥

संजै वाच ॥

दोहरा ॥ संजै कहै ध्रितराष्ट्र को हे राजा सुभमंत ॥ अरजन पुरख सरूप कौ यिउ भाखिओ भगवंत ॥१२८॥ चउपई ॥ बासदेव श्री क्रिसन क्रिपाल ॥ करुणामै गोबिंद दइआल ॥ अरजन नर सरूप है जोइ । दोनो संबाद भाखिओ है सोइ ॥१२९॥ अधभुत गोसट महा अनूप ॥ तिस के सुने मन हरखिओ भूप ॥ हरख रोम रोम मुझ पाइओ ॥ महां अनंद मुझ रिद मै आइओ ॥१३०॥ बिआसदेव प्रभ के प्रसादि ॥ मै सुनिआं है यहि संबादि ॥ ऐसी गोसटि सुनी है मोहि ॥ गुहज ते गुहज गिआन है सोइ ॥१३१॥ जो बासदेव अरजन प्रति कहिओ ॥ तिन को सुनते अति सुख लहिओ ॥ सिमर सिमर बीचारो एह ॥ मुझि रोम रोम हरख को लेह ॥१३२॥ जो बिसरूप भगवान दिखाइओ ॥ अरजन तिस का दरसन पाइओ ॥ बिसम भइओ मै तिस को देख ॥ यही बात मै जानो सेख ॥१३३॥ जिस की ओर है श्री भगवान ॥ अरजन तिन के सिख पहिचांन ॥ भगत भगवंत जिसके वल भईऐ ॥ श्री लखमी तिसी ओर पईऐ ॥१३४॥ तिन धरमी की होवै जीत ॥ जिन की पुंन धरम मै प्रीत ॥ तेरे सुत अधरमी जो ॥ निसचे कर

हारैंगे सो ॥१३५॥ दुरजोधन हारेगा सुन राजा ॥ पांडव जीतहिगे सुभ काजा ॥ यहि निसचै मेरे मन आई ॥ जो तुझ को मै कहिओ सुनाई ॥१३६॥

टीकाकारवाच ॥

चौपई ॥ असटादस धिआइ गिआंन जिह रीत ॥ भाखा तिस की कीती मीत ॥ अधभुत बात इस धिआइ मो अहै ॥ जो को मन मो ऐसे लहै ॥१३७॥ सो नर परम गति को पावै ॥ परमगति पाइ सुख सहज समावै ॥ तिस उपरांत सुख अवर न कोइ ॥ जिस नर पाइओ जानै सोइ ॥१३८॥ गीता उपदेस खालसे मांहि ॥ सो खालसा इस मै वरताहि ॥ तिआगे सरब धरम को भाई ॥ एक अकाल की जब सरनाई ॥१३९॥ सभ कछु जानै एक अकाल ॥ ऐसे जान के होइ निहाल ॥ जिन प्रभ संसक्रित मै भाखिओ ॥ फेर तिसी भाखा मै आखिओ ॥१४०॥ बिन गोबिंद दूजा को नाही ॥ जो दीसै सो हरि ही आही ॥ हरि जानन की दोनो बात ॥ गुर के बचन सुने कर सात ॥१४१॥ या अपनी जो अनभै होइ ॥ जानै एक गोबिंद है सोइ ॥ यिउ गोबिंद आप को पावै ॥ आप पाइ आप माहि समावै ॥१४२॥ पावन खोवन सुपनें माही ॥ जागन माहि एक ही आही ॥ सुपन माहि एता कछु भइआ ॥ सुपन माहि गुर सिख सभ लहिआ ॥१४३॥ पूरन ब्रहम सभी कछु देखै ॥ सुपन मांहि बाजी सभ पेखै ॥ खालसे को सुपन माहि यहि आखौ ॥ कहन सुनन सुपन मै लाखो ॥१४४॥ जागन मै दो नाही भाई ॥ वहदत कसरत तहां न काई ॥ तब वहु एक आप ही रहै ॥ एक कहन भी मन नही चहै ॥१४५॥ एक ते अनेक होइ आवै ॥ बाजी साज फिर खेल रचावै ॥ अबाच दिसा मोन है भाई ॥ सभ कछु आप आप दिसटाई ॥१४६॥ दोहरा ॥ गीता सरूप की भाखिआ अनंदगड़ मैं कीन ॥ खालसे

के उपदेस को कही क्रिसन प्रबीन ॥१४७॥ दोहरा ॥ बेद पुरान किताब सभ भाखा देखी मो ॥ सभ मै यहि कछु देखता एको गोबिंद सो ॥१४८॥ चउपई ॥ सहंसक्रित भाखा अर अरबी ॥ एक गोबिंद की बोली सरबी ॥ सत असत जो दिसटी आवै ॥ सो भी सभी गोबिंद कहावै ॥१४९॥ दिसट अदिसट जेता कछु आहि ॥ सो सभ एक गोबिंद वरताहि ॥ सभ मजब जगत मै जो ॥ सो सभ एक गोबिंद है सो ॥१५०॥ वैर प्रीत जितनी है भाई ॥ सो सभ एक गोबिंद कहाई ॥ जेते नाम द्रिसट मै लहे ॥ सो सभ नाम गोबिंद के कहे ॥१५१॥ संसार रूप गोबिंद को जानो ॥ सरगुन ते निरगुन पहिचानो ॥ सभी नाम अनांम के जांनो ॥ गोबिंद बिना कछु अवर न मांनो ॥१५२॥ जब गोबिंद निरगुन मैं आवै ॥ जो दीसै सो सगल छपावै ॥ जब सरगुन को धारे रूप ॥ यहि सभ जग है तिसी सरूप ॥१५३॥ सुरगुन निरगुन कहीऐ जोइ ॥ दो जामै गोबिंद के होइ ॥ पहिरे निरगुन का जब जामा ॥ पावै आप माहि बिस्रामा ॥१५४॥ सुरगुन जामा जब वहु पहिरे ॥ सभ संसार आप हो ठहिरे ॥ किआ कहौ कछु कहिआ न जाइ ॥ एक गोबिंद सभ रहिआ समाइ ॥१५५॥ एक कहा भी अवर न भाखौं ॥ एको अपने माहि नित राखौं ॥ फिर निरवाच दिसा को गहो ॥ अपने सुख मै आप ही रहो ॥१५६॥ अठारह धिआइ संपूरन भए ॥ सुणे पड़े ते सभ पातक गए ॥ जे को धारै मन के माहि ॥ तातकाल वहु सभ फल पाइ ॥ १५७॥

इति श्रीमद्भगवतगीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री क्रिसन अर्जुन संवादे पदम पुराणे सती ईसर संवादे उत्तरखण्डे गोबिंद सिंह क्रिते मोक्ष संनिआस योगो नाम अठारवां अध्याय ॥१८॥१८०१॥